E-Learning Series

Mind Mapping d I kFk

हिन्दी अपनाएं, देश का मान बढ़ाएं

सचित्र हिन्दी व्याकरण

E-Grammar

सचित्र द्वितीय संस्करण

Mk- fo t ; d ekj pko yk

हिन्दी प्राध्यापक 030013

लेखक की कलम से

मेरे द्वारा तैयार सचित्र हिंदी ई - व्याकरण का द्वितीय संस्करण (माइंड मैपिंग के साथ) आप सभी के समक्ष है। इस ई-व्याकरण को तैयार करने के पीछे मेरा उद्देश्य विद्यालय में हिन्दी के शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया में बच्चों व अध्यापकों को आ रही दिक्कतों को दूर करना रहा है। आज शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों में स्मार्ट कक्षा-कक्ष बनाए जा रहे हैं, परन्तु हिंदी व्याकरण का पाठ्यक्रम से सम्बंधित ई-कंटेंट विद्यालयों में उपलब्ध नहीं है। परिणामस्वरूप , मैंने बच्चों को स्मार्ट कक्षा-कक्ष के माध्यम से हिंदी व्याकरण को रुचिकर बनाते हुए पढ़ाने के लिए नवाचार तकनीक का प्रयोग करते हुए ई-व्याकरण का ई-कंटेंट बनाने का निर्णय लिया।

इस ई-व्याकरण में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का पूरा ध्यान रखा गया है। यह व्याकरण प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी लाभदायक सिद्ध होगी। हिंदी की ई-व्याकरण में हिंदी के मानक रूप का विशेष ध्यान रखा गया है। यहाँ व्याकरण को व्यवस्थित और सुनियोजित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह सचित्र हिंदी ई - व्याकरण आपकी अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी।

इस ई - व्याकरण को तैयार करने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जिसने भी मेरी सहायता की है , मैं उन सबका हृदय से आभारी हूँ। मेरा आप सबसे अनुरोध है कि इस सचित्र हिंदी ई –व्याकरण में यदि टंकण संबंधी या अन्य कोई त्रुटि मिले तो उस ओर मेरा ध्यान अवश्य आकर्षित करें। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

डॉ विजय कुमार चावला, {030013}
हिन्दी प्राध्यापक,
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, क्योड़क
जिला कैथल

हिन्दी अपनाएं, देश का मान बढ़ाएं

Dr. Rakesh Gupta, IAS
Ph.D (Health) Johns Hopkins, U.S.A.

D.O. No. 9183

Project Director, Chief Minister's Good Governance Associates (CMGGA) Programme-cum-
Nodal Officer, Beti Bachao Beti Padhao-cum-
Director General & Secretary to Govt. Haryana,
Skill Development & Industrial Training and Employment Departments

Dated. 18/12/20

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय , क्योड़क (2186) जिला कैथल में कार्यरत डॉ विजय कुमार चावला, (030013) हिन्दी प्राध्यापक, द्वारा हिन्दी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को सरल, रोचक व सचित्र रूप से तैयार करते हुए हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज नामक ई-बुक (माइंड मैपिंग के साथ) का द्वितीय संस्करण तैयार किया गया है ।

डॉ चावला द्वारा आई०सी०टी० तकनीक व उसके उपकरणों का सफल प्रयोग करते हुए हिन्दी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को जिस तरह माइंड मैपिंग के माध्यम से सरल व रोचक तरीके से प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है, वह नि: सन्देह एक काबिले तारीफ काम है ।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि यह पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज़ नामक ई-बुक का द्वितीय संस्करण बच्चों व अध्यापकों की अपेक्षाओं पर पूर्ण रूप से खरा उतरेगा । इस ई-व्याकरण का प्रयोग करते हुए बच्चे हिन्दी में अवश्य सक्षम बन पाएंगे ।

मैं, डॉ विजय कुमार चावला, (030013) हिन्दी प्राध्यापक को इस हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज नामक ई-बुक के द्वितीय संस्करण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

रा. गुप्ता
(डॉ. राकेश गुप्ता)

डॉ विजय कुमार चावला
हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
क्योड़क (2186)
जिला कैथल

Address : • Room No. 28, 9th Floor, Haryana Civil Secretariat, Sector 1, Chandigarh
• Kaushal Bhawan, IP-2, Sector 3, Panchkula - 134109, India
email : pdcmggap@hry.gov.in, guptar7@ias.nic.in, itisharyana@gmail.com
Phones: 0172-2744601, 2586074 Cell: +91-9780999911

Digital India
Power To Empower

संदेश

मैं यह जानकर अत्यन्त प्रफुल्लित हूँ कि राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क में कार्यरत डॉ विजय कुमार चावला, हिंदी प्राध्यापक (030013) द्वारा तैयार सचित्र हिंदी ई–व्याकरण का द्वितीय संस्करण (माइंड मैपिंग के साथ) आप सभी के समक्ष है। चावला द्वारा स्मार्ट कक्षा–कक्ष के माध्यम से हिंदी व्याकरण को रूचिकर बनाते हुए पढ़ाने के लिए नवाचार तकनीक का प्रयोग करते हुए ई–व्याकरण का ई–कंटेट बनाने का जो निर्णय लिया गया है, वह निःसन्देह एक काबिले तारीफ़ काम है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सचित्र हिंदी ई–व्याकरण बच्चों व अध्यापकों की अपेक्षाओं पर पूर्ण रूप से खरी उतरेगी। मैं डॉ विजय कुमार चावला, हिंदी प्राध्यापक को इस सचित्र हिंदी ई–व्याकरण के द्वितीय संस्करण (माइंड मैपिंग के साथ) के सफल संपादन पर हार्दिक बधाई देता हूँ व उनके उज्ज्वल भविष्य की भी कामना करता हूँ।

जिला शिक्षा अधिकारी,
कैथल।

संदेश

मैं यह जानकर अति प्रफुल्लित हूँ कि राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ मध्यमिक विद्यालय , क्योड़क {2186} में कार्यरत डॉ विजय कुमार चावला , {030013} हिन्दी प्राध्यापक, द्वारा हिन्दी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को सरल, रोचक व सचित्र रूप से तैयार करते हुए हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज़ नामक ई-बुक का द्वितीय संस्करण तैयार किया गया है।

चावला द्वारा आई सी टी तकनीक का प्रयोग करते हुए हिन्दी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को जिस तरह माइंड मैपिंग के माध्यम से सरल व रोचक तरीके से प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है , वह निः सन्देह एक काबिले तारीफ़ काम है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज़ नामक ई-बुक का द्वितीय संस्करण बच्चों व अध्यापकों की अपेक्षाओं पर पूर्ण रूप से खरा उतरेगा। इस ई-व्याकरण का प्रयोग करते हुए बच्चे हिन्दी में अवश्य सक्षम बन पाएंगे।

मैं, डॉ विजय कुमार चावला , {030013} हिन्दी प्राध्यापक को इस हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज़ नामक ई-बुक के द्वितीय संस्करण के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ. स्नेह सुधा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर(हिंदी)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी.,अजमेर

NATIONAL INFORMATICS CENTRE

Government of India
Ministry of Communications and Information Technology
National Informatics Centre
Room No-205, First Floor, Mini Secretariat, Kurukshetra-136118
Email: hrkrk@nic.in ; diokrk.ghry.nic.in Phone No. 01744-222696,228822

No. : NIC-HRSC-KRK/2020/025 Dated: 25.02.2020

संदेश

बड़े ही हर्ष का विषय है कि जिला कैथल के गाँव क्योड़क में कार्यरत हिन्दी प्राध्यायक डॉ विजय कुमार चावला द्वारा हिन्दी ई-व्याकरण का द्वितीय संस्करण माइंड मैपिंग के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। मेरा मानना है कि आज के डिजिटल युग में पुस्तकों का डिजिटल और स्मार्ट होना बहुत जरूरी हो गया है।

इस सामयिक माँग की पूर्ति करने के लिए हिन्दी प्राध्यापक डॉ विजय चावला द्वारा आई सी टी तकनीक का प्रयोग करते हुए हिन्दी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को जिस तरह माइंड मैपिंग के माध्यम से सरल व रोचक तरीके से प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है , वह निः सन्देह एक काबिले तारीफ़ काम है।

मैं, डॉ विजय कुमार चावला, {030013} हिन्दी प्राध्यापक को इस हिन्दी व्याकरण की ई-लर्निंग सीरीज़ नामक ई-बुक के द्वितीय संस्करण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

विनोद सिंगला,
जिला सूचना विज्ञान अधिकारी
कुरुक्षेत्र

अनुक्रमणिका

1	वर्ण विचार	2
2	शब्द विचार	10
3	विकारी शब्द	13
4	संज्ञा	14
5	सर्वनाम	18
6	विशेषण	22
7	क्रिया	28
8	अविकारी शब्द	30
9	वाक्य विचार	34
10	लिंग	38
11	वचन	41
12	काल	43
13	कारक	50
14	वाच्य	55
15	उपसर्ग	58
16	प्रत्यय	60
17	संधि	62
18	समास	68
19	विलोम शब्द	76
20	पर्यायवाची शब्द	78
21	मुहावरे	82
22	लोकोक्तियाँ	83
23	रस	85
24	अलंकार	89
25	वाक्यांश के लिए एक शब्द	94
26	अनेकार्थी	102
27	शब्द शक्ति	103
28	काव्य गुण	108
29	विराम चिह्न	111
30	छंद	114
31	पदबंध	119
32	फीडबैक	121

सचित्र हिन्दी व्याकरण E-Grammar

वर्ण–विचार

1

प्र01 वर्ण किसे कहते हैं?

उ0 वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े या खंड न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

उदाहरण:– अ, इ, क, ख, च आदि। वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

प्र02 वर्ण के कितने भेद हैं?

उ0 वर्ण के दो भेद हैं:–

1. स्वर 2. व्यंजन

प्र03 वर्णमाला किसे कहते हैं?

उ0 वर्णों के क्रमबद्ध समूह को ही वर्णमाला कहते हैं।

वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ	11 स्वर
अं अः	2 अयोगवाह
क ख ग घ ङ. च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म	25 स्पर्श व्यंजन
य र ल व	4 अंतःस्थ व्यंजन
श ष स ह	4 ऊष्म व्यंजन
क्ष त्र ज्ञ श्र	4 संयुक्त व्यंजन
ड़ ढ़	
कुल वर्ण संख्या	52

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं, जिनमें 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं।

प्र04 स्वर किसे कहते हैं? इसके कितने प्रकार हैं?

उ0 जिन ध्वनियों या वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता न लेनी पड़े, उन्हें स्वर कहते हैं।

उदाहरणः– अ, आ, इ, ई, उ आदि।

हिंदी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 11 है।

स्वर के तीन भेद हैंः–

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

1. ह्रस्व स्वरः– जिन स्वरों के उच्चारण में कम–से–कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।
   या जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।
   उदाहरणः– अ, इ, उ, ऋ
   हिंदी में कुल 4 ह्रस्व स्वर हैं। इन्हें **'मूल स्वर'** भी कहते हैं।

2. दीर्घ स्वरः– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
   या जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
   उदाहरणः– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिंदी में कुल सात स्वर हैं,
जिनका उच्चारण दीर्घ रूप में होता है।

3. प्लुत स्वरः– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुणा अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।
   या जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।
   उदाहरणः– ओ३म, हे राम!
   इन्हें त्रिमात्रिक स्वर भी कहते हैं।

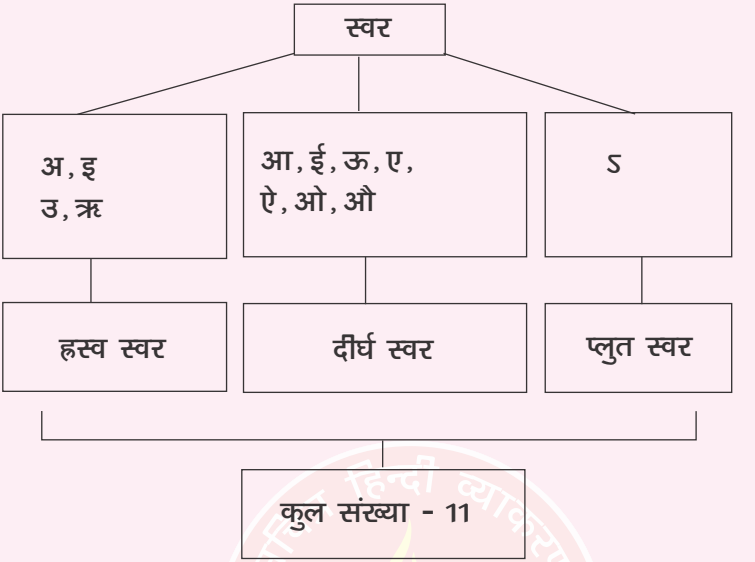

प्र05 अयोगवाह किसे कहते हैं?

उ0 हिंदी वर्णमाला में अं तथा अः को अयोगवाह की संज्ञा दी जाती है। इन्हें स्वरों के साथ तो रखा गया है, किंतु स्वतंत्र गति न होने के कारण इन्हें स्वर नहीं माना जाता है। स्वरों के साथ प्रयुक्त होने के कारण ये व्यंजनों की श्रेणी में भी नहीं आते हैं।

स्वरों तथा व्यंजनों में से किसी के साथ योग न होने के बावजूद ये ध्वनि वहन करते हैं, इसलिए इन्हें अयोगवाह कहा जाता है।

प्र06 स्वरों की मात्राएँ क्या हैं?

उ0 स्वर जब व्यंजन के साथ मिलते हैं तो उनका रूप बदल जाता है, इस बदले हुए रूप को 'मात्रा' कहा जाता है।

अ के अतिरिक्त शेष स्वरों को जब व्यंजनों के साथ प्रयुक्त किया जाता है तो उनकी मात्राएँ ही लगती हैं।

अ की मात्रा नहीं होती। अ से रहित व्यंजनों को हलंत (्) लगाकर दिखाया जाता है।

उदाहरण:– क् + अ = क

ख् + अ = ख

स्वरों की मात्राएँ

स्वर	मात्रा	शब्द प्रयोग
आ	ा	माता
इ	ि	दिन
ई	ी	जीत
उ	ु	कुछ
ऊ	ू	फूल
ऋ	ृ	कृषक
ए	े	खेल
ऐ	ै	बैल
ओ	ो	कोमल
औ	ौ	औरत

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

प्र07 अनुस्वार तथा अनुनासिक में क्या अंतर है?

उ0 अनुस्वार:– जब वर्ण का उच्चारण केवल नासिका से हो तब वह अनुस्वार कहलाता है।

हिंदी में अं तथा प्रत्येक वर्ग (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग) का पंचम वर्ण (ड.ञ, ण, न तथा म) अनुस्वार हैं।

उदाहरण:– चंचल, अंक, रंक, पंख, गंगा आदि।

अनुनासिक:– जब वर्ण का उच्चारण नासिका तथा मुख दोनों से समान रूप से हो तब वह अनुनासिक कहलाता है।

उदाहरण:– पाँच, काँच, आँख आदि।

प्र08 व्यंजन किसे कहते हैं?
यह कितने प्रकार के होते हैं?

उ0 जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।
हिंदी वर्णमाला में व्यंजनों की कुल संख्या 33 है।

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं:–

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंतस्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन:– जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में श्वास–वायु मुख के अलग–अलग भागों को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

हिंदी वर्णमाला में इनकी संख्या 25 है।

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
तवर्ग	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म

2. अंत:स्थ व्यंजन:– अंत:स्थ शब्द का अर्थ है–
मध्य या बीच में स्थित।
हिंदी वर्णमाला के कुछ व्यंजन, स्वर तथा व्यंजन के मध्य आते हैं।
इन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं।
इनकी संख्या 4 है।
य, र, ल, व

3. ऊष्म व्यंजनः– ऊष्म का अर्थ है – गर्म
वे व्यंजन जिनके उच्चारण के समय वायु मुख से रगड़ खाकर गर्म हो जाती है अर्थात मुख से गर्म वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।
इनकी संख्या हिंदी वर्णमाला में 4 है।
श, ष, स तथा ह।

प्र09 संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं?
हिंदी वर्णमाला में इनकी संख्या कितनी है?

उ0 दो व्यंजनों के मेल से बने वर्ण को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
हिंदी वर्णमाला में इनकी संख्या 4 है।

1 क्+ष क्ष
2 त्+र त्र
3 ज्+ञ ज्ञ
4 श्+र श्र

प्र10 प्राण–श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजन के कितने भेद हैं?

उ0 प्राण–श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद हैं।
1. अल्पप्राण
2. महाप्राण

1. अल्पप्राण व्यंजनः– जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास–वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।
हर वर्ग का पहला, तीसरा तथा पाँचवां वर्ण और अंतःस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

उदाहरणः–

कवर्ग	क	ग	ङ
चवर्ग	च	ज	ञ
टवर्ग	ठ	ड	ण
तवर्ग	त	द	न
पवर्ग	प	ब	म

और अंतःस्थ व्यंजन – य, र, ल, व।

2. महाप्राण व्यंजनः– जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास–वायु अल्पप्राण की तुलना में कुछ अधिक निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन, महाप्राण व्यंजन हैं।

उदाहरणः–

कवर्ग	ख	घ
चवर्ग	छ	झ
टवर्ग	ठ	ढ
तवर्ग	थ	ध
पवर्ग	फ	भ

और ऊष्म व्यंजन – श, ष, स, ह।

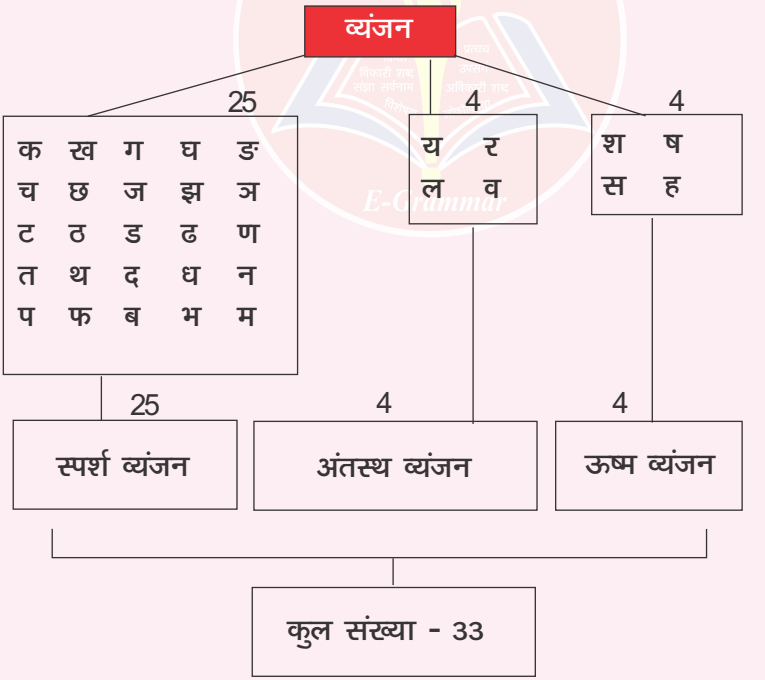

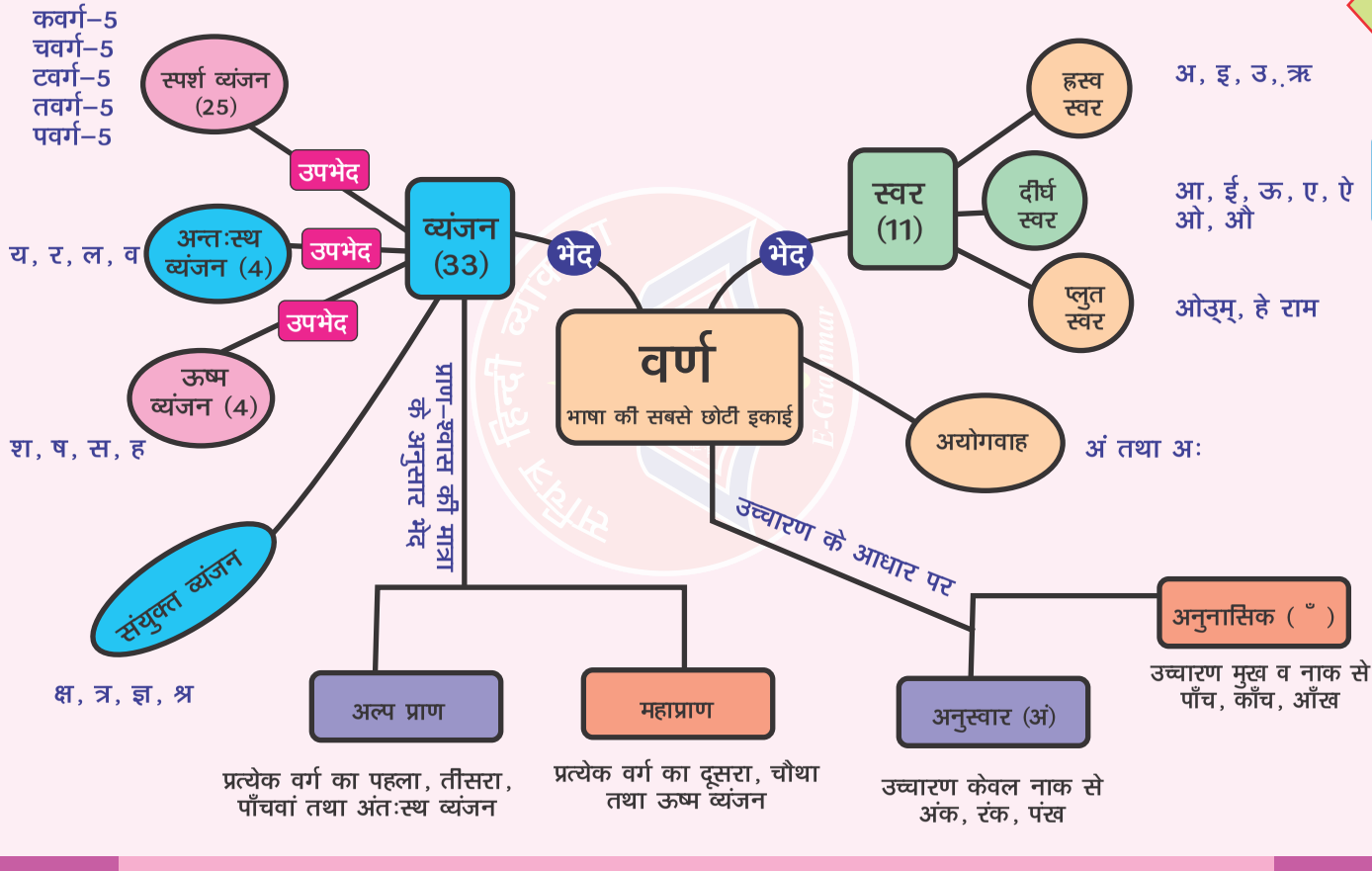
वर्ण
भाषा की सबसे छोटी इकाई
भेद
स्वर (11)
ह्रस्व स्वर
अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर
आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ
प्लुत स्वर
ओउ्म्, हे राम
भेद
व्यंजन (33)
स्पर्श व्यंजन (25)
कवर्ग–5
चवर्ग–5
टवर्ग–5
तवर्ग–5
पवर्ग–5
उपभेद
अन्तःस्थ व्यंजन (4)
य, र, ल, व
उपभेद
ऊष्म व्यंजन (4)
श, ष, स, ह
उपभेद
संयुक्त व्यंजन
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
अयोगवाह
अं तथा अः
प्राण–श्वास की मात्रा के अनुसार भेद
अल्प प्राण
प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवां तथा अंतःस्थ व्यंजन
महाप्राण
प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा तथा ऊष्म व्यंजन
उच्चारण के आधार पर
अनुस्वार (अं)
उच्चारण केवल नाक से अंक, रंक, पंख
अनुनासिक (ँ)
उच्चारण मुख व नाक से पाँच, काँच, आँख

शब्द–विचार 2

प्रश्न : शब्द किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

उत्तर : वर्णों या अक्षरों से बने ऐसे स्वतंत्र समूह को जिसका कोई अर्थ निकले, उसे शब्द कहते हैं।
जैसे : बेटा , बेटी , लड़का, लड़की आदि।

प्रश्न : हिन्दी में शब्द विचार के वर्गीकरण के कितने आधार हैं ?

उत्तर : **हिन्दी में शब्द विचार के वर्गीकरण के चार आधार हैं : -**

- स्त्रोत , इतिहास तथा उत्पत्ति के आधार पर
- व्युत्पत्ति/रचना अर्थात बनावट के आधार पर
- प्रयोग के आधार पर
- अर्थ के आधार पर

प्रश्न : स्त्रोत, इतिहास तथा उत्पत्ति के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं ? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर : स्त्रोत , इतिहास तथा उत्पत्ति के आधार पर उत्पत्ति का इतिहास केआधार पर शब्द के पाँच भेद हैं :-

(i) तत्सम शब्द : तत्सम शब्द (तत् + सम) शब्द का अर्थ है- उसके समान अर्थात संस्कृत के समास। हिंदी भाषा में अनेक शब्द संस्कृत भाषा से सीधे आए हैं अर्थात संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जिन्हें हम ज्यों का त्यों हिन्दी भाषा में प्रयोग में लाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

जैसे : अग्नि, माता, सूर्य, वायु, पुस्तक, पृथ्वी, आदि।

(ii) तद्भव शब्द : ऐसे शब्द जिनकी उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई थी, लेकिन वो अपना रूप बदलकर हिन्दी में आ गए हों, ऐसे शब्द तद्भव शब्द कहलाएंगे।

जैसे :

- दुग्ध – दूध
- अग्नि – आग
- कर्म - काम
- कर्ण - कान
- हस्त – हाथ

(iii) देशज शब्द : ऐसे शब्द जो भारत की विभिन्न स्थानीय बोलियों में से हिंदी भाषा में आ गए हैं, वे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं।

जैसे : खिचड़ी, पेट, डिबिया, लोटा, थैला, इडली, डोसा, समोसा, चमचम, गुलाबजामुन, लड्डु, खटखटाना, गड़बड़, पगड़ी , आदि।

(iv) **विदेशी/विदेशज/आगत शब्द:** ऐसे शब्द जो भारत से बाहर की भाषाओं से हैं लेकिन ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त हो गए, वे शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं। इन्हें आगत शब्द भी कहा जाता है। ये विदेशी शब्द उर्दू, अरबी,फारसी,अंग्रेजी, पुर्तगाली, तुर्की, फ्रांसीसी, ग्रीक आदि भाषाओं से आए हैं।

विदेशी शब्दों के उदाहरण निम्न हैं:-

अंग्रेजी : कॉलेज, पैंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, लैटरबक्स, पैन, टिकट, मशीन, सिगरेट, साइकिल आदि।

फारसी : अनार,चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बीमार, बरफ, रूमाल, आदमी, आदि।

अरबी : औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, कानून, खत, फकीर, रिश्वत, औरत, कैदी,मालिक, गरीब आदि।

तुर्की : कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दारोगा, बहादुर आदि।

पुर्तगाली: आलपीन, कारतूस, गमला, चाबी, फीता, साबुन, कॉफी, कमीज आदि।

फ्रांसीसी : पुलिस, कार्टून, इंजीनियर, कर्फ्यू, बिगुल आदि।

चीनी : तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।

यूनानी : टेलीफोन, टेलीग्राफ, ऐटम, डेल्टा आदि

(v) संकर शब्द :- दो भिन्न स्रोतों से आए शब्दों के मेल से बने नए शब्दों को संकर शब्द कहते हैं। जैसे

- छाया + दार = छायादार
- खान + दान = खानदान
- रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी
- सील + बंद = सीलबंद

प्रश्न : व्युत्पत्ति/रचना अर्थात बनावट के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं ? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर : व्युत्पत्ति/रचना अर्थात बनावट के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं :-

- रूढ़ शब्द
- यौगिक शब्द
- योगरूढ़ शब्द

1. रूढ़ शब्द :

ऐसे शब्द जिनका निर्माण किसी अन्य शब्द से नहीं हुआ हो तथा जिनके सार्थक खंड ना हो सकें , उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। **जैसे:** जल,पुस्तक, बेटा, लड़का , लड़की कल, जप आदि।

2. यौगिक शब्द

ऐसे शब्द जो किन्हीं दो सार्थक शब्दों के मेल से बनते हों वे शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों के खंड भी सार्थक होते हैं। ऐसे शब्द उपसर्ग तथा प्रत्यय के योग से भी बनते हैं।

जैसे: स्वदेश : स्व + देश, देवालय : देव + आलय, कुपुत्र : कु + पुत्र आदि।

3. योगरूढ़ शब्द

ऐसे शब्द जो किन्हीं दो शब्द के योग से बने हों एवं बनने पर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, वे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। बहुव्रीहि समास ऐसे शब्दों के अंतर्गत आते हैं। इसके अंतर्गत बहुव्रीहि शब्द आते हैं। **जैसे:** दशानन : दस मुख वाला अर्थात रावण , पंकज : कीचड़ में उत्पन्न होने वाला अर्थात कमल, पीताम्बर , चारपाई , लम्बोदर , गजानन आदि।

प्रश्न : प्रयोग के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर : प्रयोग के आधार पर शब्द के निम्नलिखित दो भेद होते है-

1. विकारी शब्द : जिन शब्दों का लिंग , वचन , काल , कारक आदि के प्रयोग के कारण रूप-परिवर्तन होता रहता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे- राम ,पढता है,पढ़ती है , पढ़ते हैं, कुत्ता, कुत्ते, कुत्तों, मैं मुझे, हमें , अच्छा खाता है, खाती है, अच्छे खाते हैं।
इनमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द आते हैं।

2. अविकारी शब्द: जिन शब्दों का लिंग , वचन , काल , कारक आदि के प्रयोग के कारण कभी कोई परिवर्तन नहीं होता है, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे- लेकिन , किन्तु, परन्तु , तक , भी, ही , तो , केवल, धीरे-धीरे, यहाँ, नित्य और, हे अरे आदि। इनमें क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक विस्मयादिबोधक और निपात आते हैं।

प्रश्न : अर्थ के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर : अर्थ के आधार पर शब्द के निम्नलिखित चार भेद होते हैं :

(i) एकार्थी : जिन शब्दों के हर परिस्थिति मेंएक ही अर्थ निकले , उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे : अनुज,अग्रज,रोटी,दाल,छात्र,निधनआदि।

(ii) **अनेकार्थी शब्द:** जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे : जलज - कमल, शंख, मोती, मछली।
फल - परिणाम, खाने का फल, चाकू या तलवार का फलका (धार)।
अम्बर- वस्त्र, आकाश।
कनक - गेहूँ,सोना ,धतूरा,आदि।

(iii) **समानार्थी/पर्यायवाची शब्द :** समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को समानार्थी/पर्यायवाची शब्द कहते हैं|

जैसे: सूर्य- रवि,भानु,भास्कर।
फूल- पुष्प,सुमन।

(iv) विपरीतार्थक शब्द : जो शब्द विपरीत अर्थ का बोध कराते हैं , उन्हें विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहते हैं|

जैसे : जय-पराजय, सच-झूठ, पाप-पुण्य,आदि।

विकारी शब्द

3

वह शब्द जिसमें लिंग, वचन, काल, कारक आदि के प्रयोग के कारण परिवर्तन हो, उसे विकारी शब्द कहते हैं ।

जैसे : राम, हम, कमल, दिल्ली आदि ।

जैसे- मैं↓ मुझ↓ मुझे↓ मेरा, अच्छा↓ अच्छे आदि।

विकारी शब्द के भेद

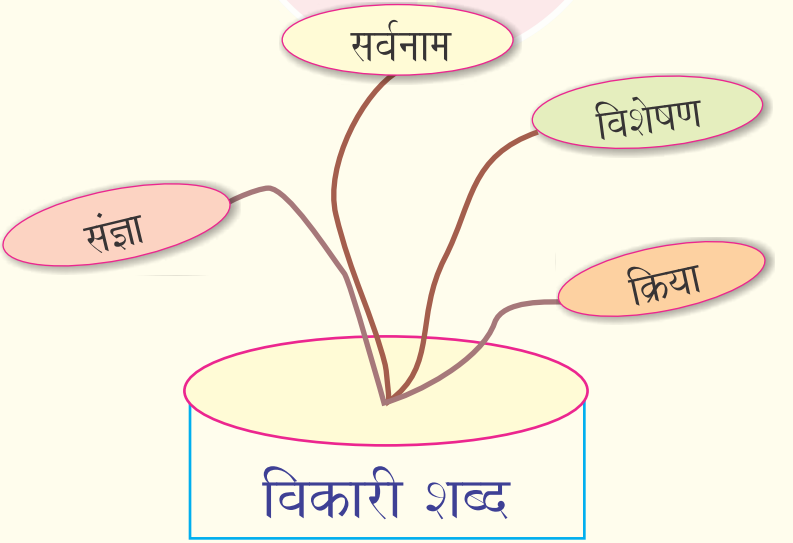

संज्ञा

4

प्र01 संज्ञा किसे कहते हैं?

उ0 संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है– नाम। किसी भी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को 'संज्ञा' कहते हैं।

जैसे राम, हिमालय, गुलाब आदि।

प्र02 संज्ञा को मुख्यतः कितने भागों में बाँटा गया है? संक्षेप में लिखिए।

उ0 संज्ञा को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है:–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के नाम का बोध हो, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं,

जैसे:–

1. राम, सीता, मोहन आदि व्यक्तियों के नाम हैं।

2. भारत, श्रीलंका, करनाल आदि स्थानों के नाम हैं।

3. हिमालय, कैलाश आदि पर्वतों के नाम हैं।

4. गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के नाम हैं।

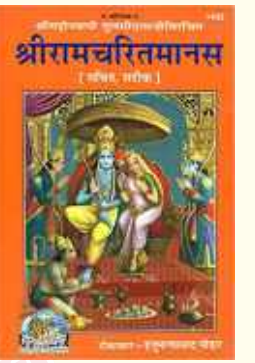

5. पद्मावत,

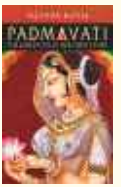

रामचरितमानस आदि पुस्तकों के नाम हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा :** जिन शब्दों से किसी जाति के सभी पदार्थों और प्राणियों का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं,

जैसे:–

1. घोड़ा, गाय, शेर, कोयल, मोर आदि पशु–पक्षियों के नाम हैं।

2. आम, केला, गुलाब, कमल आदि फल–फूलों के नाम हैं।

3. पर्वत, नदी, पुस्तक, पैन, घड़ी आदि वस्तुओं के नाम हैं।

संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं:–

1. **द्रव्यवाचक:–** जिन शब्दों से किसी धातु अथवा द्रव्य का बोध हो,उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, **जैसे** सोना, चाँदी, लोहा, पानी, तेल आदि।

2. **समूहवाचक:–** जिन शब्दों से व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं, **जैसे** कक्षा, संघ, गाँव सेना, टीम आदि।

3. **भाववाचक:–** जिन शब्दों से व्यक्ति, वस्तु आदि के धर्म, गुण, भाव, दशा आदि का बोध होता हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहा जाता है,

जैसे:–

1. मित्रता, सज्जनता, शत्रुता आदि गुण–दोष हैं।

2. आनंद, क्रोध, श्रद्धा, भक्ति आदि भाव हैं।

3. बचपन, यौवन, बुढ़ापा आदि दशाएँ हैं।

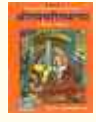

संज्ञा
व्यक्ति, वस्तु, स्थान
भाव का नाम
भेद
भाववाचक संज्ञा
गुण भाव दशा कर्म
शत्रुता
आनन्द
बुढ़ापा
बचपन
मित्रता
बुढ़ापा
भाव
राम
व्यक्ति
पुस्तक
व्यक्तिवाचक संज्ञा
व्यक्ति विशेष का नाम – कृष्ण
वस्तु विशेष का नाम – रामचरितमानस
स्थान विशेष का नाम – दिल्ली, भारत
जातिवाचक संज्ञा
घोड़ा
गाय
आम
पुस्तक
पर्वत
उप भेद
द्रव्यवाचक संज्ञा
धातु या पदार्थ
सोना
चाँदी
तेल
लकड़ी
समूहवाचक/
समुदायवाचक संज्ञा
टीम
कक्षा
सेना
गाँव

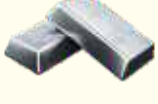

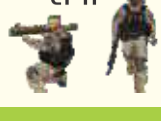

सर्वनाम 5

प्र01 सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 सर्वनाम दो शब्दों के मेल से बना है। सर्व और नाम। सर्व यानि सब और नाम यानि नाम वाले शब्द।

वह विकारी शब्द, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो, उसे सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरणः– मैं, हम, मेरा, हमारा, तू, तुम, तुम्हारा, आप, वह, यह, ये, वे, कौन, क्या, कब इत्यादि।

प्र02 सर्वनाम के कितने भेद होते हैं? उनके नाम भी लिखिए।

उ0 सर्वनाम के छः भेद होते हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैं:–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्र03 पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों का प्रयोग उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के लिए किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः–

क. उत्तम पुरूष :– मैं, हम।

ख. मध्यम पुरूष :– तू, तुम और आप।

ग. अन्य पुरूष :– यह, ये, वह, वे।

प्र04 उत्तम पुरूष सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 बोलने वाला अथवा लेखक जिन पुरूषवाचक सर्वनामों का प्रयोग स्वयं के लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरूष सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः– मैं, हम, मुझे, हमें, मैंने, मेरा, मुझको

मैं दिल्ली जाऊँगा।

हम भारतवासी हैं।

सर्वनाम

प्र05 मध्यम पुरूष सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 बोलने वाला जिससे बात करता है उसके लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम, मध्यम पुरूष सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसेः– 'तुम' कम बातें किया करो।

तू, तुम, तुमको, तुझे, आप, आपको, आपके आदि

प्र06 अन्य पुरूष सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 बोलने वाला किसी अन्य व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के संबंध में जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे अन्य पुरूष सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसेः–

'वे' सज्जन हैं।

वह, यह, उन, ये, उनको, उनसे, उन्हें, उसके आदि।

प्र07 निश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से किसी निश्चित प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः–

यह, ये, वह, वे।

'ये' भारतवासी हैं। 'वे' प्रवासी हैं।

'यह' मेरी पुस्तक है।

प्र08 अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से किसी प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का निश्चित रूप से बोध नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:– कोई, कुछ।

दरवाजे पर कोई खड़ा है।

दाल में कुछ काला है।

प्र9 संबंधवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से संज्ञा के साथ संबंध होता है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे:– जो, सो, वह, जिसकी, उसकी, जैसा, वैसा आदि।

जो प्रयत्न करता है, वह फल भी पाता है।

जो करेगा, सो भरेगा।

जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

प्र10 प्रश्नवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 जिन सर्वनामों से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, क्रिया, व्यापार आदि के विषय में व्यक्ति अथवा प्राणी के संबंध में प्रश्न करना हो तो कौन का प्रयोग होता है।

अन्यथा क्या का।

जैसे:– कौन, क्या।

राम को कौन नहीं जानता?

प्र07 निजवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?

उ0 जो सर्वनाम स्वयं के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे:– आप निजवाचक सर्वनाम है।

इसका तीनों पुरूषों में प्रयोग होता है।

आप भला तो जग भला।

(उत्तम पुरूष मैं के लिए)

भगत सिंह ने अपने आपको राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। (अन्य पुरूष के लिए)

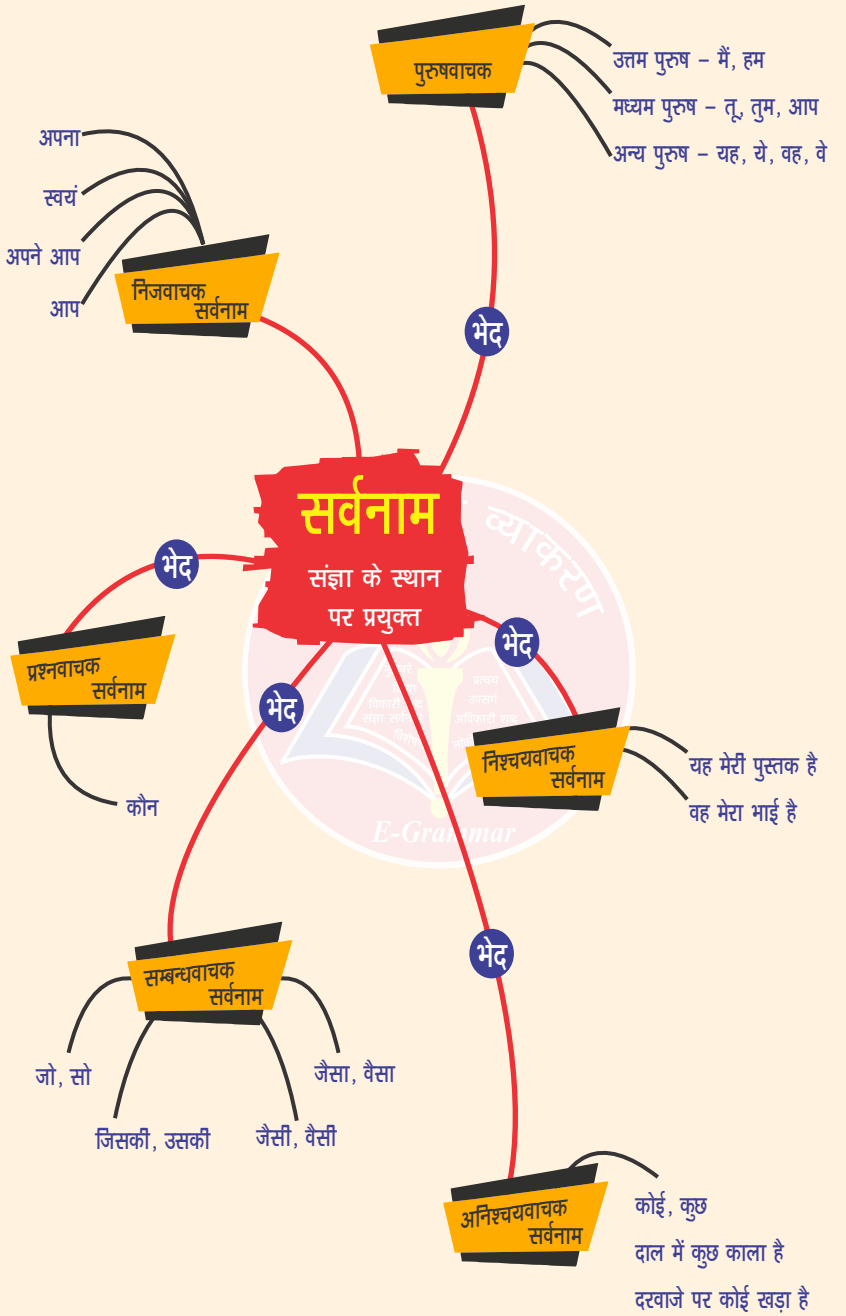
सर्वनाम
संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त
भेद
पुरुषवाचक
उत्तम पुरुष – मैं, हम
मध्यम पुरुष – तू, तुम, आप
अन्य पुरुष – यह, ये, वह, वे
भेद
निजवाचक सर्वनाम
अपना
स्वयं
अपने आप
आप
भेद
प्रश्नवाचक सर्वनाम
कौन
भेद
निश्चयवाचक सर्वनाम
यह मेरी पुस्तक है
वह मेरा भाई है
भेद
सम्बन्धवाचक सर्वनाम
जो, सो
जिसकी, उसकी
जैसा, वैसा
जैसी, वैसी
भेद
अनिश्चयवाचक सर्वनाम
कोई, कुछ
दाल में कुछ काला है
दरवाजे पर कोई खड़ा है

विशेषण 6

जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता का बोध होता है, उन्हें विशेषण कहते हैं।

जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

जैसेः– चंचल बालक, यहाँ 'चंचल' विशेषण है और बालक विशेष्य है।

विशेषण के भेदः–

विशेषण के चार भेद होते हैं।

1. गुणवाचक विशेषण।
2. संख्यावाचक विशेषण।
3. परिमाणवाचक विशेषण।
4. सार्वनामिक विशेषण।

प्र0 गुणवाचक विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 गुणवाचक विशेषणः– जिन विशेषण शब्दों में किसी के गुण, दोष, रंग–रूप, आकार, प्रकार, स्वाद आदि का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण–

गुण :	योग्य, परिश्रम, ईमानदार।
दोष :	आलसी, बेईमान।
रंग–रूप :	काला, गोरा।
आकार–प्रकार :	लंबा, चौड़ा, गोल।
स्वाद :	खट्टा, मीठा।
गंध :	सुगंधित, गंधहीन।
अवस्था :	बलवान, गरीबी।
स्थिति :	अगला, ऊपरी।
देश–काल :	पंजाबी, नवीन आदि।

प्र0 संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 संख्यावाचक विशेषणः– जिन विशेषण शब्दों में संख्या का बोध हो, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
जैसेः–एक, दो, दुगुना आदि
संख्यावाचक के मुख्य दो भेद हैंः–

1. निश्चित संख्यावाचक
2. अनिश्चित संख्यावाचक

निश्चित संख्यावाचक विशेषणः– जिस विशेषण में वस्तु, प्राणी अथवा पदार्थ की संख्या निश्चित हो, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
इसके निम्नलिखित भेद हैंः–

1. गणनासूचक– एक पुस्तक, दस रुपए आदि।
2. क्रम सूचक– पहला, दूसरा, तीसरा।
3. प्रत्येक सूचक– प्रत्येक बच्चा, प्रति मास।
4. समुदाय सूचक– चारों व्यक्ति, सैंकड़ों आम।
5. आवृत्ति सूचक– दुगुना, तिगुना।
6. अपूर्ण संख्यावाचक– 1/4 (पाव), 1/2 (आधा)।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणः– जिस विशेषण में वस्तु, प्राणी अथवा पदार्थ की संख्या अनिश्चित रहती है, उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे– कुछ पुस्तकें, सब लोग।

कुछ, सब, थोड़े, बहुत, अधिक कुछ विशेषण ऐसे हैं जो परिमाणवाचक तथा संख्यावाचक दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं। यदि विशेष्य गिनी जाने वाली वस्तु है तो संख्यावाचक अथवा परिमाणवाचक है।

प्र0 परिमाणवाचक विशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 परिमाणवाचक विशेषणः– जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु, पदार्थ के माप या नाप–तोल का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैंः–

क. निश्चित परिमाणवाचकः–

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध कराते हैं।

जैसेः– चार गज कपड़ा, दस लीटर दूध।

ख. अनिश्चित परिमणवाचकः–

जब किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता, तो उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसेः– कुछ आम, थोड़ा पानी, कम चीनी, थोड़ा दूध।

प्र0 सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 सार्वनामिक विशेषण–

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी के विषय में संकेत पाया जाए, उन्हें सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसेः– यह घर हमारा है।

तुम किस गली में रहते हो?

सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषणों का निम्नलिखित रूपों में प्रयोग होता है।

1. निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषणः–

   उस व्यक्ति को यहाँ बुलाइए।

   क्या यह पुस्तक तुम्हारी है?

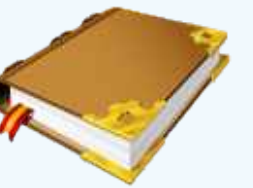

2. अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषणः–

   कोई सज्जन आए हुए हैं।

   घर में कुछ भी खाने को नहीं है।

3. प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषणः–

   कौन लोग आए हैं?

   कौन सी पुस्तक तुम्हें चाहिए?

4. संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषणः–

   जो व्यक्ति कल आया था, वह बाहर खड़ा है।

   वह बच्चा सामने जा रहा है, जिसने तुम्हारी पुस्तक चुरा ली थी।

प्र0 विशेषण में उद्देश्य और विधेय की क्या स्थिति है?

उ0 उद्देश्य विशेषणः–

विशेष्यों के पूर्व लगने वाले विशेषणों को उद्देश्य विशेषण कहते हैं, जैसे– अच्छा लड़का, सुंदर लड़की आदि।

विधेय विशेषणः– विशेष्य के बाद में प्रयुक्त होने वाले विशेषण विधेय विशेषण कहलाते हैं, जैसे–

ये फल मीठे हैं। उसकी कमीज नीली है।

प्र0 प्रविशेषण किसे कहते हैं?
उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ0 प्रविशेषणः–

प्रविशेषण उन विशेषणात्मक शब्दों को कहते हैं, जो विशेषण को भी प्रकट करते हैं।

अथवा

विशेषण की भी विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

जैसे–

वह बड़ा भोला है।

मोहन बहुत चतुर है।

वह बड़ा परिश्रमी है।

वहाँ लगभग बीस छात्र हैं।

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

सामान्यतः प्रविशेषण निम्नलिखित हैं–

बहुत, बहुत अधिक, अत्यधिक, बड़ा, खूब, बिल्कुल, थोड़ा, कम, ठीक, पूर्ण, लगभग।

प्र0 विशेषणों की रचना कीजिए।

उ0 कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण होते हैं, जैसेः निपुण, चतुर, सुंदर। लेकिन कुछ प्रत्ययों तथा उपसर्गों के लगाने से विशेष्य विशेषण में परिवर्तित हो जाता है। जैसेः–

संज्ञा से – बनारस से बनारसी।
घर से घरेलू।

सर्वनाम से –मैं से मुझ सा।
इतना, उतना, ऐसा,

वैसा, आप सा।

क्रिया से – चलना से चालू।
भूलना से भुलक्कड़।

अव्यय से– बाहर से बाहरी।
ऊपर से ऊपरी।

विशेष्य	विशेषण
अंक	अंकित
जागरण	जागृत
आसमान	आसमानी
आभूषण	आभूषित
इतिहास	ऐतिहासिक
दंत	दंत्य
दान	दानी
चर्चा	चर्चित
चाचा	चचेरा
यश	यशस्वी
यदु	यादव

प्र0 सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ0 कुछ सार्वनामिक विशेषण और निश्चयवाचक सर्वनाम समान रूप में ही प्रयोग में आते हैं। अतः इनको पहचानने में भ्रम हो सकता है। इनकी पहचान के लिए सर्वनाम और विशेषण की परिभाषा पर ध्यान देना आवश्यक है।

यदि इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों से पहले हो तो ये सार्वनामिक विशेषण होंगे और यदि संज्ञा के स्थान पर अर्थात् अकेले प्रयुक्त हो तो सर्वनाम होंगे।

जैसे–

यह पुस्तक अभी छपी है।	(यह–विशेषण)
यह मेरे साथ खेलता है।	(यह–सर्वनाम)
उस घर में मेरा मित्र रहता है।	(उस–विशेषण)
उसने मुझे बचाया।	(उसने–सर्वनाम)
यह फल पका है।	(यह–विशेषण)
वह कच्चा है।	(वह–सर्वनाम)

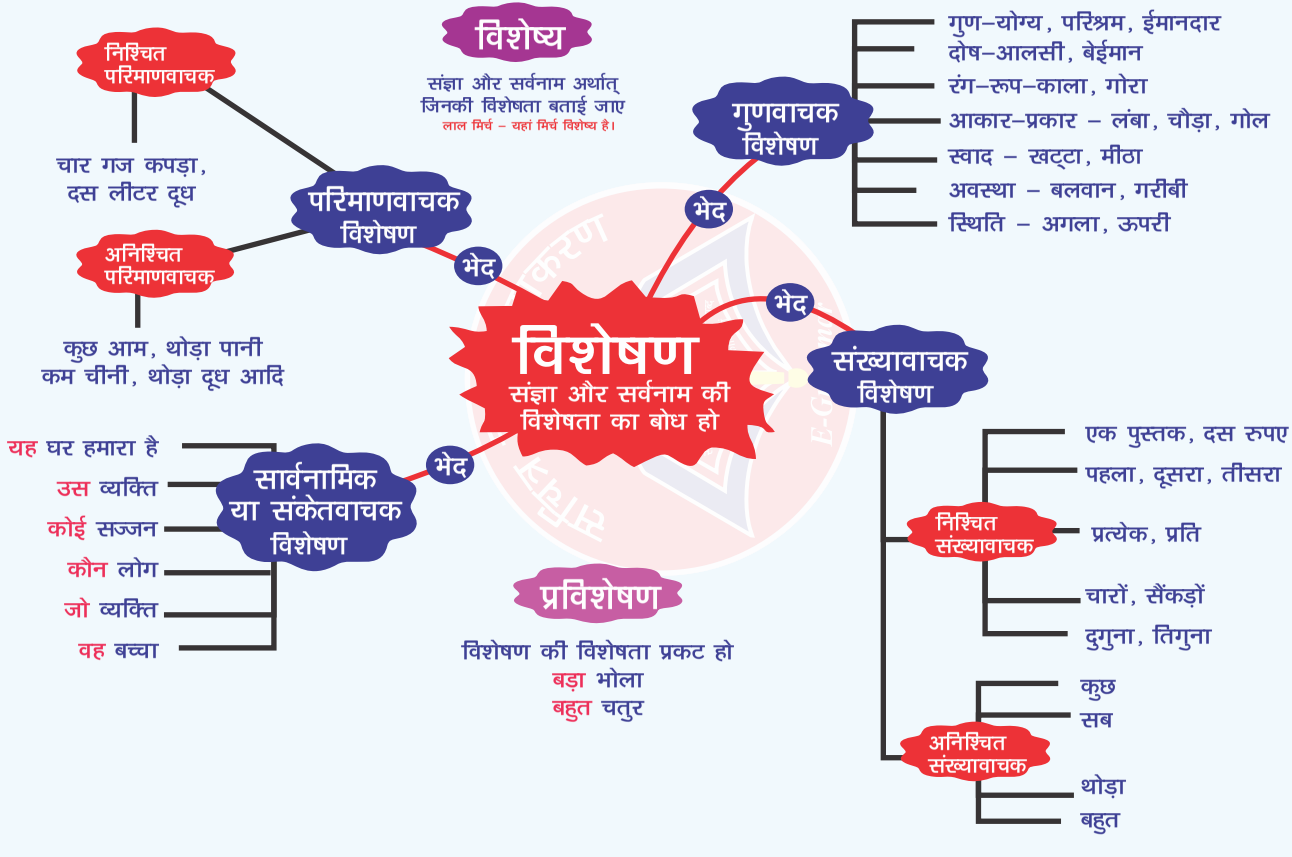
विशेष्य
संज्ञा और सर्वनाम अर्थात् जिनकी विशेषता बताई जाए
लाल मिर्च – यहां मिर्च विशेष्य है।
विशेषण
संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता का बोध हो
भेद
परिमाणवाचक विशेषण
निश्चित परिमाणवाचक
चार गज कपड़ा, दस लीटर दूध
अनिश्चित परिमाणवाचक
कुछ आम, थोड़ा पानी कम चीनी, थोड़ा दूध आदि
गुणवाचक विशेषण
गुण–योग्य, परिश्रम, ईमानदार
दोष–आलसी, बेईमान
रंग–रूप–काला, गोरा
आकार–प्रकार – लंबा, चौड़ा, गोल
स्वाद – खट्टा, मीठा
अवस्था – बलवान, गरीबी
स्थिति – अगला, ऊपरी
संख्यावाचक विशेषण
निश्चित संख्यावाचक
एक पुस्तक, दस रुपए
पहला, दूसरा, तीसरा
प्रत्येक, प्रति
चारों, सैंकड़ों
दुगुना, तिगुना
अनिश्चित संख्यावाचक
कुछ
सब
थोड़ा
बहुत
सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण
यह घर हमारा है
उस व्यक्ति
कोई सज्जन
कौन लोग
जो व्यक्ति
वह बच्चा
प्रविशेषण
विशेषण की विशेषता प्रकट हो
बड़ा भोला
बहुत चतुर

क्रिया

7

जिस शब्द अथवा शब्द–समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा किए जाने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसेः– सीता 'नाच रही है'।
बच्चा दूध 'पी रहा है'।
सुरेश कॉलेज 'जा रहा है'।

इनमें 'नाच रही है', 'पी रहा है', 'जा रहा है' शब्दों से कार्य व्यापार का बोध हो रहा है। इन सभी शब्दों से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो रहा है। अतः ये क्रियाएँ हैं।

व्याकरण में क्रिया एक विकारी शब्द है।

क्रिया के दो भेद हैं:–

1. सकर्मक क्रिया।
2. अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया :–
जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर नहीं, कर्म पर पड़ता है,
वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।
इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक होता है।

उदाहरणः–

मैं लेख लिखता हूँ।
सुरेश मिठाई खाता है।
मीरा फल लाती है।
भँवरा फूलों का रस पीता है।

सचित्र हिंदी व्याकरण
E-Grammar

अकर्मक क्रिया :–

जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर ही पड़ता है,
वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।
इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक नहीं होता है।

उदाहरण:–

राकेश रोता है।
साँप रेंगता है।
बस चलती है।

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

अविकारी शब्द 8

अव्यय की परिभाषा

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है उन्हें अव्यय(अ +व्यय) या अविकारी शब्द कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- 'अव्यय' ऐसे शब्द को कहते हैं, जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता। ऐसे शब्द हर स्थिति में अपने मूलरूप में बने रहते हैं। चूँकि अव्यय का रूपान्तर नहीं होता, इसलिए ऐसे शब्द अविकारी होते हैं। इनका व्यय नहीं होता, अतः ये अव्यय हैं।

जैसे- जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, क्यों, वाह, आह, ठीक, अरे, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अतः, अतएव, चूँकि, अवश्य, अर्थात इत्यादि।

अव्यय के भेद

अव्यय निम्नलिखित पाँच प्रकार के होते हैं -

(1) क्रियाविशेषण (Adverb)
(2) संबंधबोधक (Preposition)
(3) समुच्चयबोधक (Conjunction)
(4) विस्मयादिबोधक (Interjection)
(5) निपात अव्यय

(1) क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते हैं।
दूसरे शब्दो में- जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसे- राम धीरे-धीरे टहलता है; राम वहाँ टहलता है; राम अभी टहलता है।

इन वाक्यों में **'धीरे-धीरे'**, **'वहाँ'** और **'अभी'** राम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता है।

वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे

क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

2. संबंधबोधक अव्यय :- जिन अव्यय शब्दों के कारण संज्ञा के बाद आने पर दूसरे शब्दों से उसका संबंध बताते हैं, उन शब्दों को संबंधबोधक शब्द कहते हैं। ये शब्द संज्ञा से पहले भी आ जाते हैं।

जहाँ पर बाद , भर , के ऊपर , की ओर , कारण , ऊपर , नीचे , बाहर , भीतर , बिना , सहित , पीछे , से पहले , से लेकर , तक , के अनुसार , की खातिर , के लिए आते हैं, वहाँ पर संबंधबोधक अव्यय होता है।

जैसे :- (i) मैं विद्यालय तक गया।
(ii) स्कूल के समीप मैदान है।
(iii) धन के बिना व्यवसाय चलाना कठिन है।
(iv) सुशील के भरोसे यह काम बिगड़ गया।
(v) मैं पूजा से पहले स्नान करता हूँ।

3. समुच्चयबोधक अव्यय :- जो शब्द दो शब्दों , वाक्यों और वाक्यांशों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इन्हें योजक भी कहा जाता है। ये शब्द दो वाक्यों को परस्पर जोड़ते हैं। जहाँ पर और , तथा , लेकिन , मगर , व , किन्तु , परन्तु , इसलिए , इस कारण , अत: , क्योंकि , ताकि , या , अथवा , चाहे , यदि , कि , मानो , आदि , यानि , तथापि आते हैं, वहाँ पर समुच्चयबोधक अव्यय होता है।

जैसे :- (i) सूरज निकला **और** पक्षी बोलने लगे।
(ii) छुट्टी हुई **और** बच्चे भागने लगे।
(iii) किरन **और** मधु पढने चली गईं।
(iv) मंजुला पढने में तो तेज है **परन्तु** शरीर से कमजोर है।
(v) तुम जाओगे **कि** मैं जाऊँ।

4. विस्मयादिबोधक अव्यय :- जिन अव्यय शब्दों से हर्ष, शोक, विस्मय, ग्लानि, लज्जा, घृणा, दु:ख , आश्चर्य आदि के भाव का पता चलता है उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। इनका संबंध किसी पद से नहीं होता है। इसे द्योतक भी कहा जाता है। विस्मयादिबोधक अव्यय में (!) चिह्न लगाया जाता है।

जैसे :- (i) **वाह !** क्या बात है।
(ii) **हाय !** वह चल बसा।
(iii) **आह !** क्या स्वाद है।
(iv) **अरे !** तुम यहाँ कैसे।
(v) **छि: छि: !** यह गंदगी।

5. निपात अव्यय :- जो वाक्य में नवीनता या चमत्कार उत्पन्न करते हैं, उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। जो अव्यय शब्द किसी शब्द या पद के पीछे लगकर उसके अर्थ में विशेष बल लाते हैं, उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। इसे अवधारक शब्द भी कहते हैं। जहाँ पर ही, भी, तो, तक, मात्र, भर, मत, सा, जी, केवल आते हैं, वहाँ पर निपात अव्यय होता है।

जैसे :- (i) प्रशांत को **ही** करना होगा यह काम।
(ii) सुहाना **भी** जाएगी।
(iii) तुम तो सनम डूबोगे **ही** , सब को डुबाओगे।
(iv) वह तुमसे बोली **तक** नहीं।
(v) मैं भी दिल्ली जाऊँगा।

सचित्र हिंदी व्याकरण
E-Grammar

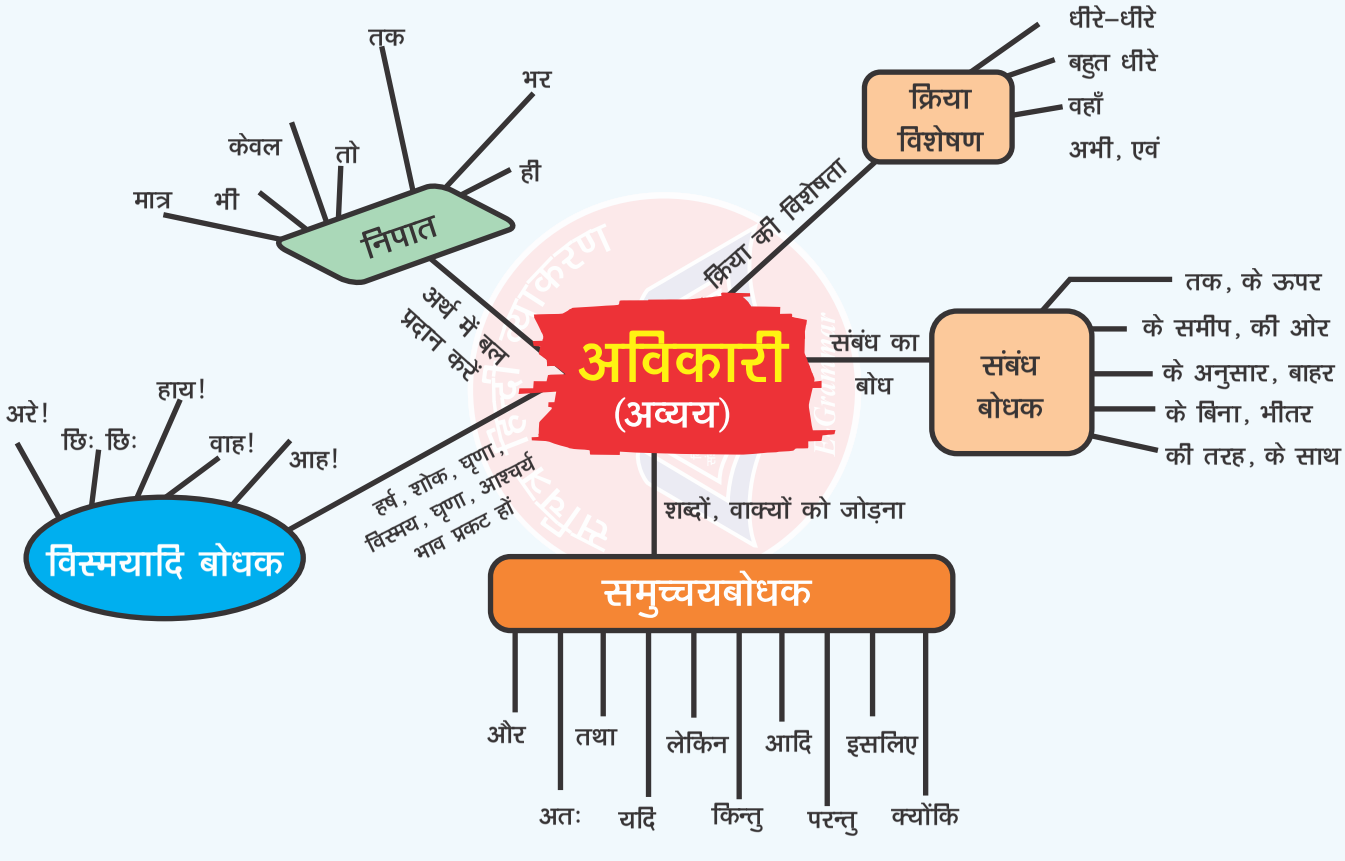
अविकारी
(अव्यय)
क्रिया की विशेषता
क्रिया विशेषण
धीरे-धीरे
बहुत धीरे
वहाँ
अभी, एवं
संबंध का बोध
संबंध बोधक
तक, के ऊपर
के समीप, की ओर
के अनुसार, बाहर
के बिना, भीतर
की तरह, के साथ
अर्थ में बल प्रदान करें
निपात
तक
भर
ही
तो
केवल
भी
मात्र
हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, घृणा, आश्चर्य भाव प्रकट हों
विस्मयादि बोधक
अरे!
छि: छि:
हाय!
वाह!
आह!
शब्दों, वाक्यों को जोड़ना
समुच्चयबोधक
और
तथा
लेकिन
आदि
इसलिए
अतः
यदि
किन्तु
परन्तु
क्योंकि

वाक्य–विचार

9

प्र01 वाक्य किसे कहते हैं? इसके कितने खंड हैं?

वाक्यः–

शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

अथवा

एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द–समूह को वाक्य कहते हैं।

अथवा

शब्दों का ऐसा समूह जिससे कहने वाले का अर्थ स्पष्ट हो जाए, उसे वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– रमेश दिल्ली जाता है।

वाक्य के खंडः– वाक्य के दो खंड निम्नलिखित हैंः–

1. **उद्देश्यः–**

वाक्य में जिसके बारे में विधान किया जाए अर्थात् जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।

उदाहरणः– राम दिल्ली जाता है।

इसमें राम उद्देश्य है।

2. **विधेयः–**

वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो विधान किया जाए, उसे विधेय कहते हैं।

उदाहरणः– मोहन रोटी खाता है।

इस वाक्य में रोटी खाना विधेय है।

प्र02 वाक्य के कितने तत्त्व हैं?

उ0 वाक्य के मुख्यतः छः तत्त्व हैंः–

1. **योग्यताः–**

वाक्य में अर्थ प्रकट करने की योग्यता होनी चाहिए।

उदाहरणः–

गाय घास खाती है। ✓

गाय घास पीती है। ✕ यह वाक्य गलत है क्योंकि
गाय घास खाती है, पीती नहीं।

2. सार्थकता:–
वाक्य के अंदर सार्थक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
उदाहरण:– चाय–वाय पीओगे?
इसमें वाय सार्थक शब्द नहीं है।
इसलिए सही वाक्य है–चाय पीओगे?

3. आकांक्षा:–
वाक्य की समाप्ति पर कोई जिज्ञासा नहीं रहनी चाहिए।
उदाहरण:– शाम के समय पुजारी करता है।
इस वाक्य में एक जिज्ञासा है कि पुजारी क्या करता है। इसलिए सही वाक्य है – शाम को पुजारी पूजा करता है।

4. समीपता:–
वाक्य में बोलते व लिखते समय समीपता रहनी चाहिए।
उदाहरण:– मैं कल दिल्ली जाऊँगा।

5. अन्वय:–
वाक्य के सभी पदों में कर्ता और कर्म के अनुसार मेल होना चाहिए।
उदाहरण:– लड़की गीत गाता है।
यह वाक्य गलत है क्योंकि लड़की स्त्रीलिंग है।
इसलिए सही वाक्य है– लड़की गीत गाती है।

6. पदक्रम:–
वाक्य में पदों का उचित क्रम होना चाहिए।
उदाहरण:– वह पढ़ता है पुस्तक।
यह उचित वाक्य नहीं है।
सही वाक्य है– वह पुस्तक पढ़ता है।

प्र03 रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

उ0 रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं:–

1. सरल वाक्य:–

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. राम फुटबाल खेलता है।

2. सीता पुस्तक पढ़ती है।

2. संयुक्त वाक्य:–

जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य किसी योजक द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: सोहन स्कूल जाता है और पढ़ाई करता है।

3. मिश्रित वाक्य:–

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा उस पर आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: खाने–पीने का मतलब है कि मनुष्य स्वस्थ बने।

प्र04 अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

उ0 अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं:–

1. विधानवाचक वाक्य :–

जिस वाक्य में किसी काम के होने का पता चले, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. बच्चे पढ़ रहे हैं।

2. गीता गाना गा रही है।

2. निषेधवाचक वाक्य:–

जिस वाक्य में किसी काम के न होने का पता चले, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण: 1. बच्चे पढ़ नहीं रहे हैं।

2. गीता गाना नहीं गा रही है।

3. प्रश्नवाचक वाक्य:–

जिस वाक्य में प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– 1. आप क्या कर रहे हो?
2. क्या आप दिल्ली जाओगे?

4. इच्छावाचक वाक्यः–

जिस वाक्य से मन की इच्छा, आशीर्वाद या स्तुति का भाव प्रकट हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– 1. भगवान तुम्हें सद्‌बुद्धि दे।
2. काश मैं एक राजा होता।

5. आज्ञावाचक वाक्यः–

जिस वाक्य से किसी को आदेश या आज्ञा देने का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– 1. खिड़की बंद कर दो।
2. बैठ जाओ।

6. संदेहवाचक वाक्यः–

जिस वाक्य से किसी कार्य के होने में संदेह का पता चले, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– 1. राम का स्कूल आना मुश्किल है।
2. शायद आज वर्षा हो सकती है।

7. संकेतवाचक वाक्यः–

जिस वाक्य में एक कार्य का होना दूसरे पर निर्भर करे, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– 1. यदि मैं मेहनत करूँगी तो कक्षा में प्रथम आऊँगी।

8. विस्मयादिबोधक वाक्यः–

जिस वाक्य में हर्ष, शोक, विस्मय आदि भाव प्रकट हो, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणः– 1. ओह! बेचारा मारा गया।
2. वाह! क्या सजावट है।

लिंग

10

लिंग

लिंग संस्कृत का शब्द होता है जिसका अर्थ होता है - निशान। जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। इससे यह पता चलता है कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का है।

उदाहरण के लिए :

पुरुष जाति में = बैल, बकरा, मोर, मोहन, लड़का, हाथी, शेर, घोड़ा, दरवाजा, पंखा, कुत्ता, भवन, पिता, भाई आदि।

स्त्री जाति में = गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लड़की, हथिनी, शेरनी, घोड़ी, खिड़की, कुतिया, माता, बहन आदि।

लिंग के भेद :-

संसार में तीन जातियाँ होती हैं – (1) पुरुष , (2) स्त्री , (3) जड़। इन्हीं जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये हैं।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग
3. नपुंसकलिंग

1. पुल्लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे :- पिता , राजा , घोडा , कुत्ता , बन्दर , हंस , बकरा , लड़की, आदमी, सेठ , मकान , लोहा , चश्मा , दुःख , प्रेम , लगाव , खटमल , फूल , नाटक , पर्वत , पेड़ , मुर्गा , बैल , भाई , शिव , हनुमान , शेर आदि।

2. स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

जैसे :- हंसिनी, लड़की, बकरी, माता, रानी, जूं , सुई , गर्दन, लज्जा, बनावट आदि

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग

1. कवि = कवयित्री
2. विद्वान् = विदुषी
3. नेता = नेत्री
4. महान = महती
5. साधु = साध्वी
6. दादा = दादी
7. बालक = बालिका
8. घोड़ा = घोड़ी
9. शिष्य = शिष्या
10. छात्र = छात्रा
11. बाल = बाला
12. धोबी = धोबिन
13. पंडित = पण्डिताइन
14. हाथी = हथिनी
15. ठाकुर = ठकुराइन
16. नर = मादा
17. पुरुष = स्त्री
18. युवक = युवती
19. सम्राट = सम्राज्ञी
20. मोर = मोरनी
21. सिंह = सिंहनी
22. सेवक = सेविका
23. अध्यापक = अध्यापिका
24. पाठक = पाठिका
25. लेखक = लेखिका
26. दर्जी = दर्जिन
27. ग्वाला = ग्वालिन
28. मालिक = मालकिन
29. शेर = शेरनी
30. ऊँट = ऊंटनी
31. गायक = गायिका
32. शिक्षक = शिक्षिका
33. वर = वधू
34. श्रीमान = श्रीमती
35. मौसी = मौसा
36. नाग = नागिन
37. पड़ोसी = पड़ोसिन
38. मामा = मामी
39. बलवान = बलवती
40. नर तितली = तितली
41. भेड़िया = मादा भेडिया
42. नर मक्खी = मक्खी
43. कछुआ = मादा कछुआ
44. नर चील = चील
45. खरगोश = मादा खरगोश
46. नर चीता = चीता
47. भालू = मादा भालू
48. नर मछली = मछली
49. थोड़ा = थोड़ी
50. देव = देवी
51. लड़का = लड़की
52. ब्राह्मण = ब्राह्मणी
53. बकरा = बकरी
54. चूहा = चुहिया
55. चिड़ा = चिड़िया
56. बेटा = बिटिया
57. गुड्डा = गुडिया
58. लोटा = लुटिया
59. माली = मालिन
60. कहार = कहारिन

61. सुनार = सुनारिन
62. लुहार = लुहारिन
63. नौकर = नौकरानी
64. चौधरी = चौधरानी
65. देवर = देवरानी
66. सेठ = सेठानी
67. जेठ = जेठानी
68. बाल = बाला
69. सुत = सुता
70. तपस्वी = तपस्विनी
71. हितकारी = हितकारिनी
72. स्वामी = स्वामिनी
73. परोपकारी = परोपकारिनी
74. दास = दासी आदि।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार हैं :-

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार, गवर्नर, लेक्चरर, वकील, डॉक्टर, सेक्रेटरी, प्रोफेसर, शिशु, दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, श्वास, मंत्री आदि।

वचन

11

वचन

वचन का शब्दिक अर्थ संख्यावचन होता है। संख्यावचन को ही वचन कहते हैं। वचन का एक अर्थ कहना भी होता है। संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति , वस्तु के एक से अधिक होने का या एक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं। अर्थात संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं अर्थात संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से हमें संख्या का पता चले, उसे वचन कहते हैं।

जैसे :- लड़की खेलती है।
लड़कियाँ खेलती हैं।

वचन के भेद :-
1. एकवचन।
2. बहुवचन।

1. एकवचन क्या होता है :- जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक होने का पता चलता है, उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे :- लड़का , लडकी , गाय , सिपाही , बच्चा , कपड़ा , माता , पिता , माला , पुस्तक , स्त्री, टोपी , बन्दर , मोर , बेटी , घोड़ा , नदी , कमरा , घड़ी , घर , पर्वत , मैं , वह , यह , रुपया , बकरी , गाड़ी , माली , अध्यापक , केला , चिड़िया , संतरा , गमला , तोता , चूहा आदि।

2. बहुवचन क्या होता है :- जिस विकारी शब्द या संज्ञा के कारण हमें किसी व्यक्ति , वस्तु , प्राणी , पदार्थ आदि के एक से अधिक या अनेक होने का पता चलता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :- लड़के, गायें , कपड़े , टोपियाँ , मालाएँ , माताएँ , पुस्तकें , वधुएँ , गुरुजन , रोटियाँ , पेंसिलें , स्त्रियाँ , बेटे , बेटियाँ , केले , गमले , चूहे , तोते , घोड़े , घरों , पर्वतों , नदियों , हम , वे, ये , लताएँ , लड़कियाँ , गाड़ियाँ , बकरियाँ , रुपए।

एकवचन = बहुवचन

जूता = जूते
तारा = तारे
लड़का = लड़के
घोड़ा = घोड़े
बेटा = बेटे
मुर्गा = मुर्गे
कपड़ा = कपड़े
गधा = गधे
कौआ = कौए
केला = केले
पेड़ा = पेड़े
कुत्ता = कुत्ते
कमरा = कमरे
बात = बातें
रात = रातें
आँख = आँखें
पुस्तक = पुस्तकें
किताब = किताबें
गाय = गायें
बहन = बहनें
झील = झीलें
सडक = सडकें
दवात = दवातें
कविता = कविताएँ
लता = लताएँ
कन्या = कन्याएँ
माता = माताएँ
भुजा = भुजाएँ
पत्रिका = पत्रिकाएँ
शाखा = शाखाएँ
कामना = कामनाएँ
कथा = कथाएँ

कला = कलाएँ
वस्तु = वस्तुएँ
दवा = दवाएँ
चिड़िया = चिड़ियाँ
डिबिया = डिबियाँ
गुड़िया = गुड़ियाँ
चुहिया = चुहियाँ
बुढिया = बुढियाँ
लुटिया = लुटियाँ
बोतल = बोतलें
कुतिया = कुतियाँ
शक्ति = शक्तियाँ
राशि = राशियाँ
रीति = रीतियाँ
तिथि = तिथियाँ
नारी = नारियाँ
गति = गतियाँ
थाली = थालियाँ
रीति = रीतियाँ
नदी = नदियाँ
लड़की = लड़कियाँ
घुड़की = घुड़कियाँ
चुटकी = चुटकियाँ
टोपी = टोपियाँ
रानी = रानियाँ
रीति = रीतियाँ
थाली = थालियाँ
कली = कलियाँ
बुद्धि = बुद्धियाँ
सखी =सखियाँ
गौ = गौएँ
बहु = बहुएँ

वधू = वधुएँ
गऊ = गउएँ
लता = लताएँ
माता = माताएँ
धातु = धातुएँ
धेनु = धेनुएँ
लू = लुएँ
जू = जुएँ
बालक = बालकगण
अध्यापक = अध्यापकवृंद
मित्र = मित्रवर्ग
विद्यार्थी = विद्यार्थीगण
सेना = सेनादल
आप = आपलोग
गुरु = गुरुजन
श्रोता = श्रोताजन
गरीब = गरीबलोग
पाठक = पाठकगण
अधिकारी = अधिकारीवर्ग
स्त्री = स्त्रीजन
नारी = नारीवृंद
दर्शक = दर्शकगण
वृद्ध = वृद्धजन
व्यापारी =व्यापारीगण
सुधी = सुधिजन
पत्ता = पत्ते
बच्चा = बच्चे
बेटा = बेटे
कपड़ा = कपड़े
लड़का = लडके
बात = बातें
आँख = आँखें

काल

12

काल

काल का अर्थ होता है – समय। क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चले उसे काल कहते हैं। अर्थात कार्य – व्यापार के समय और उसकी पूर्ण और अपूर्ण अवस्था के ज्ञान के रूपांतरण को काल कहते हैं।

काल के उदाहरण :-

(i) सुनील गीता पढ़ता है।
(ii) प्रदीप पढ़ रहा है।
(iii) रमेश कल दिल्ली जाएगा।

काल के भेद :-

1. वर्तमान काल
2. भूतकाल
3. भविष्य कल

1. भूतकाल :-

भूतकाल का अर्थ होता है बीता हुआ। क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का पता चले उसे भूतकाल कहते हैं। अर्थात जिस क्रिया से कार्य के समाप्त होने का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं। इसकी पहचान वाक्यों के अंत में था, थे , थी आदि से होती है।

उदाहरण के लिए :-

(i) रमेश पटना गया था।
(ii) पहले मैं लखनऊ में पढ़ता था।
(iii) राम ने रावण का वध किया था।

भूतकाल के प्रकार :-

(1) सामान्य भूतकाल
(2) आसन्न भूतकाल
(3) पूर्ण भूतकाल
(4) अपूर्ण भूतकाल
(5) संदिग्ध भूतकाल
(6) हेतुहेतुमद् भूतकाल
(7) समयकालीन भूतकाल

(1) सामान्य भूतकाल :- जिस क्रिया के भूतकाल में क्रिया के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का संकेत मिले, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं। अर्थात जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का बोध नहीं होता है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

सामान्य भूतकाल की क्रिया से यह पता चलता है कि क्रिया का व्यापार बोलने से या लिखने से पहले हुआ। जिन वाक्यों के अंत में आ , ई , ए , था , थी , थे आते हैं वे सामान्य भूतकाल होता है।

जैसे :-

(i) मैंने गाना गाया।
(ii) खिलाडी खेलने गए।
(iii) सीता गई।

(2) आसन्न भूतकाल :- आसन्न का अर्थ होता है -निकट। जिस क्रिया के अभी-अभी या निकट के भूतकाल में पूरा होने का पता चले, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से हमें यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

क्रिया के जिस रूप से कार्य व्यापार की निकट समय में समाप्ति का पता चले उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) मैं अभी हिसार से आया हूँ।
(ii) मैंने सेब खाया है।
(iii) अध्यापिका पढ़कर आई है।

(3) पूर्ण भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है की कार्य निश्चित किए गये समय से पहले ही पूरा हो चुका था उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य को समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। कार्य के पूर्ण होने के स्पष्ट बोध को पूर्ण भूतकाल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में था, थी, थे, चुका था, चुकी थी, चुके थे आदि आते हैं वो पूर्ण भूतकाल होता है।

जैसे :-

(i) पुष्पा ने नृत्य किया।
(ii) वह दिल्ली गया था।
(iii) भारत 15 अगस्त,1947 को आजाद हुआ था।

(4) अपूर्ण भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि कार्य भूतकाल में पूरा नहीं

हुआ था अपितु नियमित रूप से जारी रहा, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से कार्य के भूतकाल में शुरू होने का पता चले लेकिन खत्म होने का पता न चले, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में रहा था, रही थी, रहे थे आदि आते हैं, वे अपूर्ण भूतकाल होते हैं।

जैसे :-

(i) मोहन मैदान में घूम रहा था।
(ii) वह हॉकी खेल रहा था।
(iii) सुनील पढ़ रहा था।

(5) संदिग्ध भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से अतीत में हुए या करे हुए कार्य पर संदेह प्रकट किया जाए, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में गा, गे, गी आदि आते हैं, वे संदिग्ध भूतकाल होते हैं। क्रिया के जिस रूप से कार्य के भूतकाल में पूरा होने पर संदेह हो कि वह पूरा हुआ था या नहीं, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) सुनील हिसार गया था।
(ii) वे फुटबॉल खेले होंगे।
(iii) बस छूट गई होगी।

(6) हेतुहेतुमद् भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य हो सकता था लेकिन दूसरे कार्य की वजह से हुआ नहीं, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं। इसमें पहली क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होती है। पहली क्रिया तो पूरी नहीं होती लेकिन दूसरी भी पूरी नहीं हो पाती। जिसमे क्रिया के होने में कोई शर्त पायी जाये उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) मैं आगरा जाती तो ताजमहल देखती।
(ii) सुरेश मेहनत करता तो सफल हो जाता।
(iii) यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

(7) समयकालीन भूतकाल :- जिन वाक्यों के अंत में रहा था, रही थी, रहे थे आदि आते हैं और समय का निश्चित बोध होता है, उसे समयकालीन भूतकाल कहते हैं।

जैसे :-

(i) वे पिछले तीन घंटे से टीवी देख रहे थे।
(ii) वे दो दिन से खेल रहे थे।

2. वर्तमान काल :-

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले की काम अभी हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से समय का पता चले और क्रिया व्यापार का वर्तमान समय में पता चले उसे वर्तमान काल कहते हैं।

जिन वाक्यों के अंत में ता , ती , ते , है , हैं आते हैं, वो वर्तमान काल कहलाता है। क्रियाओं के होने की निरन्तरता को वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :-

(i) राम अभी-अभी आया है।
(ii) वर्षा हो रही है।
(iii) शान गाता है।

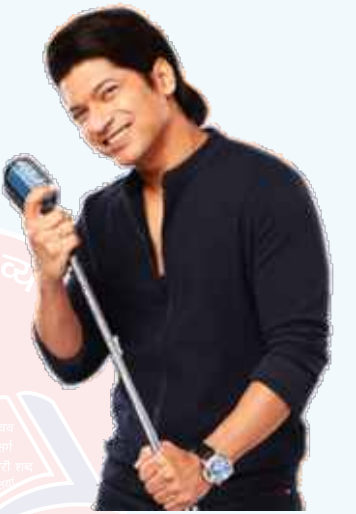

वर्तमान काल के भेद :-

(1) सामान्य वर्तमान काल
(2) अपूर्ण वर्तमान काल
(3) पूर्ण वर्तमान काल
(4) संदिग्ध वर्तमान काल
(5) तात्कालिक वर्तमान काल
(6) संभाव्य वर्तमान काल

(1) सामान्य वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से कार्य की पूर्णता और अपूर्णता का पता न चले, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। अर्थात जिस क्रिया से क्रिया के सामान्य रूप का वर्तमान में होने का पता चलता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

जिन वाक्यों के अंत में ता है , ती है , ते हैं, ता हूँ , ती हूँ आदि आते हैं, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते है। जो क्रिया वर्तमान में सामान्य रूप में पायी जाती है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। जहाँ पर क्रिया का प्रारम्भ बोलने के समय होता है।

जैसे :-

(i) राम घर जाता है।
(ii) वह गेंद खेलता है।
(iii) सीता पढ़ती है।

(2) अपूर्ण वर्तमान काल :- अपूर्ण का अर्थ होता है – अधूरा। क्रिया के जिस रूप से कार्य के लगातार होने का पता चलता है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते है। जिन वाक्यों के अंत में रहा है , रहे है , रही है , रहा हूँ आदि आते हैं, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :-

(i) श्याम गेंद खेल रहा है।
(ii) वह घर जा रहा है।
(iii) अनीता गीत गा रही है।

(3) पूर्ण वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से कार्य के अभी पूरे होने का पता चलता है, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। इसमें हमें कार्य की पूर्ण सिद्धि का पता चलता है। इसमें हमें क्रिया के व्यापार के तत्काल पूरे होने के बारे में पता चलता है।

जैसे :-

(i) मैंने फल खाए हैं।
(ii) उसने गेंद खेली है।
(iii) वह आया है।

(4) संदिग्ध वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल क्रिया के होने या करने पर शक हो उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जिन वाक्यों के अंत में ता होगा, ती होगी, ते होंगे आदि आते हैं, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। इसमें वर्तमान काल में संदेह होने का बोध होता है।

जैसे :-

(i) सविता पत्र लिखती होगी।
(ii) वह गाता होगा।
(iii) रमा खाती होगी।

(5) तात्कालिक वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता हो कि कार्य वर्तमान में हो रहा है, उसे तात्कालिक वर्तमान काल कहते हैं। इसमें बोलते समय क्रिया का व्यापार चलता रहता है। इसमें इसकी पूर्णता का पता नहीं चलता है।

जैसे :-

(i) मैं पढ़ रहा हूँ।
(ii) वह जा रहा है।
(iii) हम कपड़े पहन रहे हैं।

(6) संभाव्य वर्तमान काल :- संभाव्य का अर्थ होता है संभावित या जिसके होने की संभावना हो। इससे वर्तमान काल में काम के पूरे होने की संभावना होती है उसे संभाव्य वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे :-

(i) वह आया हो।

(ii) वह लोटा हो।

3. भविष्य काल :- क्रिया के जिस रूप से क्रिया के आने वाले समय में पूरा होने का पता चले उसे भविष्य काल कहते हैं। इससे आगे आने वाले समय का पता चलता है। जिन वाक्यों के अंत में गा , गे , गी आदि आते हैं वे भविष्य काल होते हैं।

जैसे :-

(i) मैं कल विद्यालय जाउँगा।

(ii) खाना कुछ देर में बन जाएगा।

(iii) राजू देर तक पढ़ेगा।

भविष्य काल के भेद :-

(1) सामान्य भविष्य काल।

(2) संभाव्य भविष्य काल।

(3) हेतुहेतुमद्भविष्य भविष्य काल।

(1) सामान्य भविष्य काल :- क्रिया के जिस रूप से क्रिया के सामान्य रूप का भविष्य में होने का पता चले उसे सामान्य भविष्य काल कहते हैं। अर्थात जिन शब्दों के अंत में ए गा , ए गी , ए गे आदि आते हैं उन्हें सामान्य भविष्य काल कहते हैं। इससे क्रिया के भविष्य में होने का पता चलता है।

जैसे :-

(i) वह खाना खाएगी।

(ii) बच्चे खेलने जायेंगे।

(2) संभाव्य भविष्य काल :- क्रिया के जिस रूप से आगे कार्य होने या करने की संभावना का पता चले उसे संभाव्य भविष्य काल कहते हैं । इसमें क्रियाओं का निश्चित पता नहीं चलता। इसमें भविष्य में किसी कार्य के होने की संभवना होती है।

जैसे :-

(i) शायद कल सुनील आगरा जाए।

(ii) शायद आज वर्षा हो।

(iii) शायद चोर पकड़ा जाएगा।

(3) हेतुहेतुमद्भविष्य काल:- क्रिया के जिस रूप से एक कार्य का पूरा होना दूसरी आने वाले समय की क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतुहेतुमद्भविष्य काल कहते हैं। इसमें एक क्रिया दूसरी पर निर्भर होती है। इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है।

जैसे :-

(i) यदि छुट्टियाँ होंगी तो मैं आगरा जाऊँगा।
(ii) अगर तुम मेहनत करोगे तो फल अवश्य मिलेगा।
(iii) वह आए तो मैं जाऊँ।

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

कारक

13

कारक

कारक शब्द का अर्थ होता है – क्रिया को करने वाला। जब क्रिया को करने में कोई न कोई अपनी भूमिका निभाता है, उसे कारक कहते है।

कारक के उदाहरण :-

(i) राम ने रावण को बाण मारा।
(ii) रोहन ने पत्र लिखा।
(iii) मोहन ने कुत्ते को डंडा मारा।

कारक के भेद

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

कारक के लक्षण , चिह्न , और विभक्ति चिह्न इस प्रकार हैं :-

(i) कर्ता ——— क्रिया को पूरा करने वाला ——— ने ——— प्रथमा
(ii) कर्म ——— क्रिया को प्रभावित करने वाला ——— को ——— द्वितीया
(iii) करण ——— क्रिया का साधन ——— से, के द्वारा, द्वारा ——— तृतीया
(iv) सम्प्रदान ——— जिसके लिए काम हो ——— को ,के लिए ——— चतुर्थी
(v) अपादान ——— जहाँ पर अलगाव हो ——— से ——— पंचमी
(vi) संबंध ——जहाँ पर पदों में संबंध हो ——— का , की , के , रा ,री , रे ——— षष्ठी
(vii) अधिकरण ——— क्रिया का आधार होना ——— में , पर ——— सप्तमी
(viii) सम्बोधन ———किसी को पुकारना ——— हे , अरे ! , हो! ——— सम्बोधन।

(1) कर्ता कारक :-

जो वाक्य में कार्य करता है, उसे कर्ता कहा जाता है। अर्थात वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले उसे कर्ता कहते हैं। कर्ता कारक की विभक्ति ने होती है। ने विभक्ति का प्रयोग भूतकाल की क्रिया में किया जाता है। कर्ता स्वतंत्र होता है। कर्ता कारक में ने विभक्ति का लोप भी होता है।

इस पद को संज्ञा या सर्वनाम माना जाता है। हम प्रश्नवाचक शब्दों के प्रयोग से भी कर्ता का पता लगा सकते हैं। संस्कृत का कर्ता ही हिंदी का कर्ताकारक होता है। कर्ता की ने विभक्ति का प्रयोग ज्यादातर पश्चिमी हिंदी में होता है। ने का प्रयोग केवल हिंदी और उर्दू में ही होता है।

जैसे :-

(i) राम ने पत्र लिखा।
(ii) हम कहाँ जा रहे हैं।
(iii) मीता ने आम खाया।

(2) कर्म कारक :-

जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका चिह्न को माना जाता है। लेकिन कहीं कहीं पर कर्म का चिह्न लोप होता है।

बुलाना , सुलाना , कोसना , पुकारना , जमाना , भगाना आदि क्रियाओं के प्रयोग में अगर कर्म संज्ञा हो तो को विभक्ति जरुर लगती है। जब विशेषण का प्रयोग संज्ञा की तरह किया जाता है तब कर्म विभक्ति 'को' जरुर लगती है। कर्म संज्ञा का एक रूप होता है।

जैसे :-

(i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।
(ii) सीता फल खाती है।
(iii) अमर सितार बजा रहा है।

(3) करण कारक :-

जिस साधन से क्रिया होती है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह से, द्वारा और के द्वारा होता है। जिसकी सहायता से कोई कार्य किया जाता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक का क्षेत्र बाकी कारकों से बड़ा होता है।

जैसे :-

(i) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
(ii) बच्चा बोतल से दूध पीता है।
(iii) राम ने रावण को बाण से मारा।

(4) सम्प्रदान कारक :-

सम्प्रदान कारक का अर्थ होता है – देना। जिसके लिए कर्ता काम कर्ता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक के विभक्ति चिह्न के लिए और को होता है। इसको किसके लिए प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी पहचाना जा सकता है। सामान्य रूप से जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

जैसे :-

(i) गरीबों को खाना दो।
(ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।
(iii) माँ बेटे के लिए खाना लाई।

(5) अपादान कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो, वहाँ पर अपादान कारक होता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना, उत्पन्न होना, डरना, दूरी, लजाना, तुलना करना आदि का पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न से होता है। इसकी पहचान किससे जैसे प्रश्नवाचक शब्द से भी की जा सकती है।

जैसे :-

(i) पेड़ से आम गिरा।
(ii) हाथ से छड़ी गिर गई।
(iii) सुरेश शेर से डरता है।

(6) संबंध कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग , वचन के अनुसार बदल जाती हैं।

जैसे :-

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।

(7) अधिकरण कारक :-

अधिकरण का अर्थ होता है – आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर , ऊपर , बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।

इसकी पहचान किसमें , किसपर , किस पे आदि प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी की जा सकती है। कहीं-कहीं पर विभक्तियों का लोप होता है तो उनकी जगह पर किनारे , आसरे , दीनों , यहाँ , वहाँ , समय आदि पदों का प्रयोग किया जाता है। कभी कभी में के अर्थ में पर और पर के अर्थ में में लगा दिया जाता है।

जैसे :-

(i) हरी घर में है।
(ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है।

(8) सम्बोधन कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से बुलाने या पुकारने का बोध हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। जहाँ पर पुकारने , चेतावनी देने , ध्यान बटाने के लिए जब सम्बोधित किया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसकी पहचान करने के लिए (!) चिह्न लगाया जाता है। इसके चिह्न हे , अरे , अजी आदि होते हैं। इसकी कोई विभक्ति नहीं होती है।

जैसे :-

(i) हे ईश्वर ! रक्षा करो।
(ii) अरे बच्चों ! शोर मत करो।
(iii) हे राम ! यह क्या हो गया।

कारक
क्रिया को करने वाला
भेद
कर्ता कारक
वह खेल रहा है
मींना ने आम खाया
कर्म कारक
राम, रवि को मार रहा है
अमर सितार बजा रहा है
करण कारक
बच्चे गेंद से खेल रहे हैं
सम्प्रदान कारक
गरीबों को खाना दो
माँ बेटे के लिए खाना लाई
अपादान कारक
वह स्टेशन से आया है
पेड़ से आम गिरा
सम्बंध कारक
सीतापुर, मोहन का गाँव है
राम दशरथ का पुत्र है
अधिकरण कारक
पानी में मछली है
पुस्तक मेज पर है
सम्बोधन कारक
हे ईश्वर! मेरी रक्षा करो
अरे बच्चों! शोर मत करो

वाच्य

14

प्र1. वाच्य किसे कहते हैं?

उ0 क्रिया के जिस रूपांतर से यह बोध हो कि क्रिया द्वारा किए गए विधान का केन्द्र बिंदु कर्ता है, कर्म है अथवा क्रिया है, उसे वाच्य कहते हैं। जैसेः– गीता नाच रही है। इस वाक्य में 'नाचना' क्रिया प्रधान है तथा 'गीता' कर्ता है इसलिए यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

प्र.2 वाच्य के कितने भेद हैं?

उ0 वाच्य के दो भेद हैं

1. कर्तृवाच्य।
2. अकर्तृवाच्य।

1. **कर्तृवाच्यः–** जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसेः–
   1. राम पढ़ रहा है।
   2. मोहन खेल रहा है।
   3. अध्यापक पढ़ा रहे थे।

   इन तीनों वाक्यों में 'राम, मोहन, अध्यापक' कर्ता हैं, इसलिए यह कर्तृवाच्य है।

प्र.3 अकर्तृवाच्य के कितने भेद हैं?

उ0 अकर्तृवाच्य के दो भेद हैंः–

1. कर्मवाच्य।
2. भाववाच्य।

क. **कर्मवाच्यः–** जिस वाक्य में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इसमें सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

जैसेः–

1. कृष्ण से कंस मारा गया।
2. रीना को चाय दी गई।
3. राम से पुस्तक लिखी जाती है।

ख. भाववाच्यः– जिस वाक्य में भाव प्रधान हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। इन वाक्यों में क्रिया की प्रधानता होती है। इनका प्रयोग प्रायः निषेधार्थ में होता है, जैसे–

1. मुझसे चला नहीं जाता।
2. उससे खाया नहीं जाता।
3. थोड़ी देर सो लिया जाए।

वाच्य की दृष्टि से वाक्य परिवर्तन

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में:–

कर्तृवाच्य में कर्ता के कारण कारक को चिह्न 'से' लगाया जाता है, और कर्म में, प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसेः–

	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1.	मैं रोटी खाता हूँ।	मुझसे रोटी खाई जाती है।
2.	मैंने गाना गाया।	मुझसे गाना गाया गया।
3.	तुम फूल तोड़ोगे।	तुम से फूल तोड़ा जाएगा।

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य में:–

इसमें कर्ता के आगे 'से', 'द्वारा', या 'के द्वारा' लगाया जाता है।

भाववाच्य बनाने के लिए कर्ता को करण कारक में बदल दो।

जैसेः–

	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	बच्चे खेलेंगे।	बच्चों से खेला जाएगा।
2.	राम तेज दौड़ा है।	राम से तेज दौड़ा जाता है।
3.	राधा नहीं सोती।	राधा से सोया नहीं जाता।

3. कर्मवाच्य या भाववाच्य से कर्तृवाच्य में

कर्मवाच्य या भाववाच्य से कर्तृवाच्य बनाना।

	कर्मवाच्य या भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1.	राम से भागा नहीं जाता।	राम भाग नहीं सकता।
2.	मोहन से चला नहीं जाता।	मोहन चल नहीं सकता।
3.	उठो, अब खाया जाए।	उठो, अब खाएँ।

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

उपसर्ग

15

उपसर्ग

संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओं में उस अव्यय या शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं जो कुछ शब्दों के आरंभ में लगकर उनके अर्थों का विस्तार करता है अथवा उनमें कोई विशेषता उत्पन्न करता है। उसे उपसर्ग कहते हैं जैसे - अ, अनु, अप, वि, आदि उपसर्ग है।

उपसर्ग और उनके अर्थबोध

संस्कृत में बाइस (22) उपसर्ग हैं। प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्/उद्, अभि, प्रति, परि तथा उप।

उदाहरण

अति - अतिशय, अतिरेक
अधि - अधिपति, अध्यक्ष
अधि - अध्ययन, अध्यापन
अनु - अनुक्रम, अनुताप, अनुज
अनु - अनुकरण, अनुमोदन
अप - अपकर्ष, अपमान
अप - अपकार, अपयश, अपमान
अभि - अभिनंदन, अभिलाप
अभि - अभिमुख, अभिनय
अभि - अभ्युत्थान, अभ्युदय
अव - अवगणना, अवतरण
अव - अवकृपा, अवगुण
आ - आसक्त , आजन्म, आचरण
उत् - उत्कर्ष, उत्तीर्ण
उप - उपाध्यक्ष, उपदिशा, उपवन
दुर्, दुस् - दुराशा, दुरुक्ति, दुश्चिन्ह, दुष्कृत्य.
नि - निमग्न, निबंध
नि - निडर, निकम्मा, निहत्था

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

निर्- निरंजन, निराशा
निस्- निश्चल, नि:शेष
परा- पराजय, पराभव
परि- परिपाक, परिपूर्ण, परिमित, परिश्रम, परिवार
प्र- प्रकोप, प्रसारित, प्रबल, प्रचार, प्रकार
प्रति- प्रतिकूल, प्रतिच्छाया, प्रतिदिन
वि- विख्यात, विवाद, विफल, विधवा, विसंगति
सम्- संस्कृत, संस्कार, संगीत
सम्- संयम, संयोग, संकीर्ण
सु- सुभाषित, सुकृत, सुग्रास
सु- सुगम, सुकर, स्वल्प
सु- सुबोधित, सुशिक्षित

कुछ शब्दों के पूर्व एक से अधिक उपसर्ग भी लग सकते हैं।

उदाहरण

प्रति + अप + वाद = प्रत्यपवाद
सम् + आ + लोचन = समालोचन
वि + आ + करण = व्याकरण
नि:+वि+कार = निर्विकार
सु+सम्+गति= सुसंगति आदि

प्रत्यय

16

वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, **कृत प्रत्यय** कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदंत (कृत्+अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे- लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है, तथा लेखक कृदंत शब्द है।

क्रम	प्रत्यय	मूल शब्द\धातु	उदाहरण
1	अक	लेख्, पाठ्, कृ, गै	लेखक, पाठक, कारक, गायक
2	अन	पाल्, सह्, ने, चर्	पालन, सहन, नयन, चरण
3	अना	घट्, तुल्, वंद्, विद्	घटना, तुलना, वन्दना, वेदना
4	अनीय	मान्, रम्, दृश्, पूज्, श्रु	माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय
5	आ	सूख, भूल, जाग, पूज, इष्, भिक्ष्	सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा
6	आई	लड़, सिल, पढ़, चढ़	लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई
7	आन	उड़, मिल, दौड़	उड़ान, मिलान, दौड़ान
8	इ	हर, गिर	हरि, गिरि
9	इया	छल, जड़, बढ़, घट	छलिया, जड़िया, बढ़िया, घटिया
10	इत	पठ, व्यथा, फल, पुष्प	पठित, व्यथित, फलित, पुष्पित
11	इत्र	चर्, पो, खन्	चरित्र, पवित्र, खनित्र
12	इयल	अड़, मर, सड़	अड़ियल, मरियल, सड़ियल
13	ई	हँस, बोल, त्यज्, रेत	हँसी, बोली, त्यागी, रेती
14	उक	इच्छ्, भिक्ष्	इच्छुक, भिक्षुक
15	तव्य	कृ, वच्	कर्तव्य, वक्तव्य
16	ता	आ, जा, बह, मर, गा	आता, जाता, बहता, मरता, गाता
17	ति	अ, प्री, शक्, भक्त	अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति
18	ते	जा, खा	जाते, खाते
19	त्र	अन्य, सर्व, अस्	अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र
20	न	क्रंद, वंद, मंद, खिद्, बेल, ले	क्रंदन, वंदन, मंदन, खिन्न, बेलन, लेन
21	ना	पढ़, लिख, बेल, गा	पढ़ना, लिखना, बेलना, गाना
22	म	दा, धा	दाम, धाम
23 ,	य	गद्, पद्, कृ, पंडित, पश्चात्, दंत्, ओष्ठ्	गद्य, पद्य, कृत्य, पाण्डित्य, पाश्चात्य, दंत्य ओष्ठ्य
24	या	मृग, विद्	मृगया, विद्या
25	रू	गे	गेरू
26	वाला	देना, आना, पढ़ना	देनेवाला, आनेवाला, पढ़नेवाला
27	ऐया\वैया	रख, बच, डाँट\गा, खा	रखैया, बचैया, डटैया, गवैया, खवैया
28	हार	होना, रखना, खेवना	होनहार, रखनहार, खेवनहार

वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों- संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण में जुड़ते हैं, **तद्धित प्रत्यय** कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे- सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय हैं तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

क्रम	प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
1	आइ	पछताना, जगना	पछताइ, जगाइ
2	आइन	पण्डित, ठाकुर	पण्डिताइन, ठकुराइन
3	आई	पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा	पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई, चौड़ाई
4	आनी	सेठ, नौकर, मथ	सेठानी, नौकरानी, मथानी
5	आयत	बहुत, पंच, अपना	बहुतायत, पंचायत, अपनायत
6	आर/आरा	लोहा, सोना, दूध, गाँव	लोहार, सुनार, दूधार, गँवार
7	आहट	चिकना, घबरा, चिल्ल, कड़वा	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट
8	इल	फेन, कूट, तन्द्र, जटा, पंक, स्वप्न	फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल, पंकिल, स्वप्निल, धूमिल
9	इष्ठ	कन्, वर्, गुरु, बल	कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ
10	ई	सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत, ढोलक	सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती, ढोलकी, तेली,
11	ईन	ग्राम, कुल	ग्रामीण, कुलीन
12	ईय	भवत्, भारत, पाणिनी, राष्ट्र	भवदीय, भारतीय, पाणिनीय, राष्ट्रीय
13	ए	बच्चा, लेखा, लड़का	बच्चे, लेखे, लड़के
14	एय	अतिथि, अत्रि, कुंती, पुरुष, राधा	आतिथेय, आत्रेय, कौंतेय, पौरुषेय, राधेय
15	एल	फुल, नाक	फुलेल, नकेल
16	ऐत	डाका, लाठी	डकैत, लठैत
17	एरा/ऐरा	अंध, साँप, बहुत, मामा, काँसा, लुट	अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लुटेरा
18	ओला	खाट, पाट, साँप	खटोला, पटोला, सँपोला
19	औती	बाप, ठाकुर, मान	बपौती, ठकरौती, मनौती
20	औटा	बिल्ला, काजर	बिलौटा, कजरौटा
21	क	धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल	धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक
22	कर	विशेष, ख़ास	विशेषकर, ख़ासकर
23	का	खट, झट	खटका, झटका
24	जा	भ्राता, दो	भतीजा, दूजा
25	ड़ा, ड़ी	चाम, बाछा, पंख, टाँग	चमड़ा, बछड़ा, पंखड़ी, टँगड़ी
26	त	रंग, संग, खप	रंगत, संगत, खपत
27	तन	अद्य	अद्यतन
28	तर	गुरु, श्रेष्ठ	गुरुतर, श्रेष्ठतर
29	तः	अंश, स्व	अंशतः, स्वतः
30	ती	कम, बढ़, चढ़	कमती, बढ़ती, चढ़ती

संधि

17

संधि

संधि का शाब्दिक अर्थ है - मेल या संयोग। अर्थात दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है या परिवर्तन होता है , उसे संधि कहते हैं।
संधि में दो बातें उल्लेखनीय है-

1.सन्धि दो वर्णों के बीच होती है।
(अ) स्वर और स्वर के साथ मेल या
(ब स्वर और व्यंजन के साथ या
(स) व्यंजन और स्वर के साथ या
(द) विसर्ग और स्वर या व्यंजन के साथ
2. सन्धि होने पर शब्द का रूप बदल जाता है।
जैसे -
1. विद्या + आलय = विद्यालय (आ +आ = आ)
2. हिम + आलय = हिमालय (अ + आ = आ)

प्रश्न - सन्धि के कितने प्रकार होते हैं ?
उत्तर- सन्धि के तीन प्रकार होते हैं :-
स्वर संधि।
व्यंजन संधि।
विसर्ग सन्धि।

प्रश्न - स्वर संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर- दो स्वरों के मेल से जो विकार या रूप परिवर्तन होता है ,
उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
जैसे -
हिम + आलय = हिमालय (अ +आ = आ) [म् +अ = म] 'म' में 'अ' स्वर जुड़ा हुआ है
पो + अन = पवन (ओ +अ = अव)

प्रश्न - स्वर सन्धि के कितने प्रकार हैं ?

उत्तर - स्वर संधि के प्रमुख पाँच प्रकार हैं -

दीर्घ स्वर संधि
गुण स्वर संधि
वृद्धि स्वर संधि
यण स्वर संधि
अयादि स्वर संधि

प्रश्न - दीर्घ स्वर संधि किसे कहते हैं ? उदहारण सहित समझाइए।

उत्तर - जब दो सवर्ण स्वर आपस में मिलकर दीर्घ हो जाते हैं , तब दीर्घ स्वर संधि होता है। यदि 'अ' 'आ' 'इ' 'ई' 'उ' 'ऊ' और 'ऋ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ' 'ई' 'ऊ' और ॠ हो जाते हैं, अर्थात दीर्घ हो जाते हैं।

अ + अ = आ
उ + उ = ऊ
अ + आ = आ
उ + ऊ = ऊ

जैसे -

(अ + अ = आ)
ज्ञान + अभाव = ज्ञानाभाव
स्व + अर्थी = स्वार्थी
देव + अर्चन = देवार्चन

प्रश्न - गुण स्वर सन्धि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' 'उ' या 'ऊ' और ऋ आए तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए' 'ओ' और अर् हो जाता है। इस मेल को गुण स्वर संधि कहते हैं।

अ + इ = ए
आ + उ = ओ
आ + इ = ए
आ + ऋ = अर्

देव + इन्द्र = देवेन्द्र
सुर + इंद्र = सुरेंद्र
भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र

प्रश्न - वृद्धि स्वर सन्धि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' रहे तो 'ऐ' एवं 'ओ' और 'औ' रहे तो 'औ' बन जाता है। इसे वृद्धि स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे -

अ + ए = ऐ
अ + ऐ = ऐ
आ + ए = ऐ

महा + ओषधि = महौषधि
गंगा + ओध = गंगौध
महा + ओज = महौज

प्रश्न - यण स्वर संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यदि 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो 'इ' और 'ई' का 'य' , 'उ' और 'ऊ' का 'व' तथा ऋ का 'र' हो जाता है। इसे यण स्वर संधि कहते हैं।

इ + अ = य
इ + आ = या
ई + आ = या
इ+अ=य
इ+ऊ =यू
इ+ए =ये

अति+अधिक=अत्यधिक
अत+इ+अ+धिक्
य
अत्यधिक

प्रश्न - अयादि संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - यदि 'ए' 'ऐ' 'ओ' 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय' , 'ओ' का अव तथा 'औ' का 'आव' हो जाता है। इस परिवर्तन को अयादि सन्धि कहते हैं।

ए+अ=अय	ऐ+अ=आय
ने+अन=नयन	न+ऐ +अ+क
न+ए+अ+न	न+आय+क
ने+अन =नयन	नै+अक=नायक

प्रश्न - व्यञ्जन सन्धि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - व्यञ्जन वर्ण के साथ स्वर वर्ण या व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन या स्वर वर्ण के साथ व्यंजन वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न हो या परिवर्तन हो, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। इस संधि में दो वर्णों में से एक वर्ण व्यंजन या दोनों वर्ण व्यंजन हो सकते हैं, किन्तु दोनों वर्ण स्वर नहीं हो सकते। जैसे -

दिक् + गज = दिग्गज (यहाँ व्यंजन से व्यंजन वर्ण का मेल हुआ है)
अभि + सेक = अभिषेक (यहाँ स्वर से व्यंजन वर्ण का मेल हुआ है)
सत् + चित + आनंद = सच्चिदानंद
(यहाँ व्यंजन से व्यंजन एवं व्यंजन से स्वर का मेल हुआ है)

वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + मार्ग = षण्मार्ग
उत् + नति = उन्नति

प्रश्न - विसर्ग संधि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर - विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को विसर्ग संधि कहते हैं।

जैसे- मनः + रथ = मनोरथ।

विसर्ग संधि के नियम

1. यदि विसर्ग के बाद च या छ हो तो विसर्ग का श् हो जाता है, ट, ठ होने पर ष् और त,थ होने पर विसर्ग का स् हो जाता है|

निः + चय = निश्चय
निः + छल = निश्छल

2. यदि विसर्ग के पहले अ हो और उसके बाद किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ,पंचम वर्ण या य, र, ल, व, ह आए तो विसर्ग का ओ हो जाता है| जैसे –

यशः + गान = यशोगान
मनः + रथ = मनोरथ

3. यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार हो तथा बाद में क, ख, प, फ, आए तो विसर्ग का ष् हो जाता है| जैसे –

निः + प्राण = निष्प्राण
निः फल = निष्फल

4.यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार हो तथा बाद में आ, ग, घ, ध, म, वर्ण आए तो विसर्ग के स्थान पर र या र् हो जाता है | जैसे –

निः आशा = निराशा
निः + धन = निर्धन

5. यदि विसर्ग के पहले अ हो तथा बाद में क, ख, प, फ, में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता | जैसे –

प्रातः + काल = प्रातःकाल
पयः + पान = पयःपान

6.यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो तथा बाद में र आए तो इ के स्थान पर ई औए उ के स्थान पर ऊ हो जाता है, जैसे –

नि: + रव = नीरव

नि: + रस = नीरस

7. यदि विसर्ग के पहले और बाद में अ हो तो ओ हो जाता है और बाद वाले अ का लोप होकर (ऽ) का चिन्ह लग जाता है | जैसे –

प्रथमः + अध्याय = प्रथमोऽध्याय

स: + अहम = सोऽहम

8. यदि विसर्ग के पहले अ या आ हो और बाद में क आए तो विसर्ग का स् हो जाता है, जैसे –

नमः + कार = नमस्कार

भाः + कार = भास्कर

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

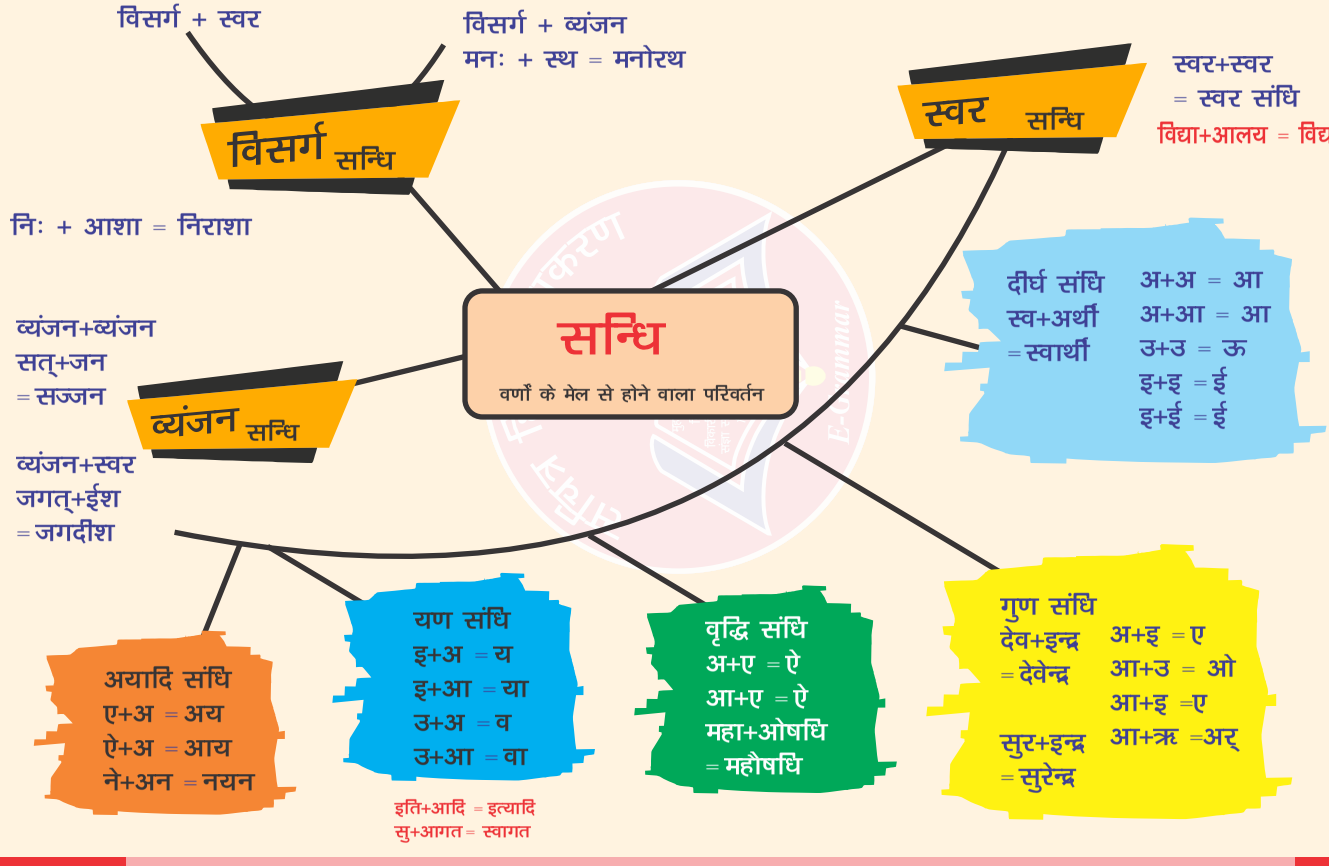
सन्धि
वर्णों के मेल से होने वाला परिवर्तन
विसर्ग सन्धि
विसर्ग + स्वर
निः + आशा = निराशा
विसर्ग + व्यंजन
मनः + स्थ = मनोरथ
स्वर सन्धि
स्वर+स्वर = स्वर संधि
विद्या+आलय = विद्यालय
दीर्घ संधि
स्व+अर्थी = स्वार्थी
अ+अ = आ
अ+आ = आ
उ+उ = ऊ
इ+इ = ई
इ+ई = ई
व्यंजन सन्धि
व्यंजन+व्यंजन
सत्+जन = सज्जन
व्यंजन+स्वर
जगत्+ईश = जगदीश
अयादि संधि
ए+अ = अय
ऐ+अ = आय
ने+अन = नयन
यण संधि
इ+अ = य
इ+आ = या
उ+अ = व
उ+आ = वा
इति+आदि = इत्यादि
सु+आगत = स्वागत
वृद्धि संधि
अ+ए = ऐ
आ+ए = ऐ
महा+ओषधि = महौषधि
गुण संधि
देव+इन्द्र = देवेन्द्र
सुर+इन्द्र = सुरेन्द्र
अ+इ = ए
आ+उ = ओ
आ+इ = ए
आ+ऋ = अर्

समास

18

समास का शाब्दिक अर्थ होता है – छोटा (संक्षिप्त रूप)

समास

परस्पर संबंध रखने वाले दो अथवा अधिक पदों के मेल से उत्पन्न विकार को समास कहते हैं। दो शब्दों के मेल से बना पद समस्त पद कहलाता है। समस्त पद का पहला पद पूर्व पद कहलाता है। समस्त पद का दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है। समस्त पद का विग्रह समास विग्रह कहलाता है।

जैसे:– सर्वप्रिय – सबको प्रिय

कष्टसाध्य	–	कष्ट से साध्य
यथा संभव	–	जितना संभव हो सके
यथाविधि	–	विधि के अनुसार
भरसक	–	पूरी शक्ति से
नीलकंठ	–	नीला है कंठ जिसका
नीलगाय	–	नीली है जो गाय

समास के चार भेद होते हैं:–

1. तत्पुरुष समास
2. द्वंद्व समास
3. अव्ययीभाव समास
4. बहुव्रीहि समास

तत्पुरुष के दो उपभेद भी होते हैं

1. कर्मधारय तत्पुरुष समास
2. द्विगु तत्पुरुष समास

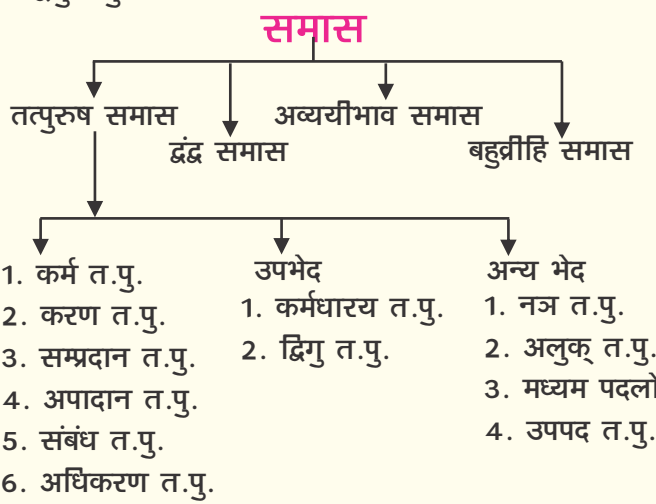

तत्पुरुष समास

वह समास जिसका दूसरा (उत्तर) पद प्रधान हो तथा पहला पद गौण हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

पहचानः– इसमें विग्रह करते समय कारक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इसके जोड़ने पर विभक्ति चिह्न या कारक चिह्न का लोप हो जाता है।

जैसेः–

यश प्राप्त – यश को प्राप्त

पद प्राप्त – पद को प्राप्त

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैंः–

1. कर्म तत्पुरुष समास
2. करण तत्पुरुष समास
3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास
4. अपादान तत्पुरुष समास
5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास
6. अधिकरण तत्पुरुष समास

1. कर्म तत्पुरुष समास :

जहाँ पूर्वपद में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है, वहाँ कर्म तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

ग्रंथकार	–	ग्रंथ को रचनेवाला
सर्वप्रिय	–	सबको प्रिय
शरणागत	–	शरण को आगत

2. करण तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है, उसे करण तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसेः–

तुलसीकृत	–	तुलसी द्वारा कृत
मनगढ़त	–	मन से गढ़ी हुई
गुणयुक्त	–	गुण से युक्त
प्रेमातुर	–	प्रेम से आतुर

3. सम्प्रदान तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में सम्प्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है, वहाँ सम्प्रदान तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

राहखर्च	–	राह के लिए खर्च
पुण्यदान	–	पुण्य के लिए दान
गौशाला	–	गौ के लिए शाला

4. अपादान तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो जाता है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

देश निकाला	–	देश से निकाला
धर्म विमुख	–	धर्म से विमुख
धर्म भ्रष्ट	–	धर्म से भ्रष्ट

5. सम्बन्ध तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में सम्बन्ध कारक की विभक्ति 'का', के, की' का लोप हो जाता है, वहाँ सम्बन्ध तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

देशवासी	–	देश का वासी
राजपुत्री	–	राजा की पुत्री
देवालय	–	देव का आलय

6. अधिकरण तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में अधिकरण कारक 'में', 'पर' विभक्ति का लोप हो जाता है, वहाँ अधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

दानवीर	–	दान में वीर
घुड़सवार	–	घोड़े पर सवार
स्वर्गवास	–	स्वर्ग में वास

तत्पुरुष समास के दो उपभेद होते हैं।

1. कर्मधारय तत्पुरुष समास
2. द्विगु तत्पुरुष समास

कर्मधारय तत्पुरुष समास

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा एक पद उपमेय तथा दूसरा पद उपमान होता है अर्थात् दोनों में से एक की तुलना या उपमा दूसरे से की जाती है।

क. विशेषण – विशेष्य
महादेव – महान है जो देव
अंधकूप – अंधा है जो कूप
पुरूषोत्तम – पुरुषों में है जो उत्तम

ख. उपमेय – उपमान
कमलनयन – कमल के समान नयन
भुजदंड – दंड के समान भुजा
कर–पल्लव – पल्लव रूपी कर
कर–कमल – कमल रूपी कर
घनश्याम – धन के समान श्याम

द्विगु समास

वह समास जिसका पूर्व (पहला) पद संख्यावाची विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें भी पूर्व (पहला) तथा उत्तर (दूसरा) पद में विशेषण–विशेष्य का संबंध होता है।
अर्थ की दृष्टि से यह समास समूहवाची होता है।
जैसेः–

त्रिवेणी – तीन वेणियों का समाहार/समूह
चौमासा – चार मासों का समाहार/समूह
नवरात्र – नौ रातों का समाहार/समूह

तत्पुरुष समास के अन्य भेद

क. <u>नञ तत्पुरुष समास</u>:– इस समास का पूर्व पद 'न' का भाव उत्पन्न करता है।

जैसे:–

अछूत – न छूत

अनहोनी – न होनी

ख. <u>अलुक् तत्पुरुष समास</u>:– इस तत्पुरुष समास के दोनों पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता।

जैसे:–

युधिष्ठिर– युद्ध में स्थिर

मनसिज – मन में उत्पन्न

ग. <u>मध्यम पद लोपी तत्पुरुष समास</u>:– इस तत्पुरुष समास में दो पदों के बीच दो से अधिक पदों का लोप होता है।

जैसे:–

दही बड़ा – दही में डूबा हुआ बड़ा

रेलगाड़ी – रेल पर चलने वाली गाड़ी

घ. <u>उपपद तत्पुरुष समास</u>:– इस तत्पुरुष समास के दूसरे पद का पृथक रूप में प्रचलन सामान्यतः नहीं होता।

जैसे:–

शास्त्रज्ञ – शास्त्र + ज्ञ (शास्त्रों का ज्ञाता)

नीरद – नीर + द (नीर का दाता)

द्वंद्व समास

वह समास जिसमें दोनों पद प्रधान हो, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों के बीच और, तथा, अथवा, या का प्रयोग होता है।

जैसे:–

हानि–लाभ	–	हानि और लाभ
राजा–रंक	–	राजा और रंक
माता–पिता	–	माता और पिता
भीमार्जुन	–	भीम और अर्जुन
न्यूनाधिक	–	न्यून अथवा अधिक
लव–कुश	–	लव और कुश
देवासुर	–	देव और असुर

अव्ययीभाव समास

वह समास जिसका पूर्व पद प्रधान व अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसेः–

यथाशीघ्र	–	जितना शीघ्र हो सके।
आजीवन	–	जीवन भर
यथामति	–	मति के अनुसार
यथारूचि	–	रूचि के अनुसार
प्रतिदिन	–	हर दिन
प्रतिपल	–	हर पल

बहुव्रीहि समास

जिसमें दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विशेषण होते हैं। तीसरा पद प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसेः–

पीताम्बर	–	पीला है वस्त्र जिसका (श्रीकृष्ण)
दीर्घबाहु	–	लंबी भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)
अष्टभुजा	–	आठ भुजाएँ हैं जिसकी (दुर्गा)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

उ0 <u>कर्मधारय समास</u>:–

1. यह समास तत्पुरुष समास का उपभेद है।
2. इस समास में दूसरा पद प्रधान व पहला पद गौण होता है।
3. इस समास में दोनों पदों के बीच में विशेषण व विशेष्य संबंध होता है।

जैसेः–नीलकंठ – नीला है जो कंठ

<u>बहुव्रीहि समास</u> :–

1. यह समास एक स्वतंत्र समास है।
2. इसमें दोनों पद गौण होते हैं तथा तीसरा पद प्रधान होता है।
3. दोनों पद मिलकर तीसरे पद के विशेषण होते हैं। तीसरा पद प्रधान है। जैसेः– नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका (शिव)

द्विगु और द्वंद्व समास में अंतर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है।

द्विगु समास तत्पुरुष समास का उपभेद है।

जैसेः– द्विगु–दो गौओं का समाहार

द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं।

इसमें दोनों के बीच और, तथा, अथवा, या का प्रयोग होता है।

जैसेः– खट्टा–मीठा : खट्टा और मीठा

माता–पिता : माता और पिता

अव्ययीभाव समास व बहुव्रीहि समास में अंतर

अव्ययीभाव समास में पूर्व पद प्रधान होता है।

जैसेः– भरसक : पूरी शक्ति से

बहुव्रीहि समास में तीसरा व अन्य पद प्रधान होता है।

जैसेः– पीतांबर : पीला है वस्त्र जिसका (कृष्ण)

E-Grammar

समास
दो शब्दों के मेल से बना नया शब्द
भेद
बहुव्रीहि समास
अन्य पद प्रधान
दशानन (रावण)
पीताम्बर (विष्णु)
लम्बोदर (गणेश)
नीलकण्ठ (शिव)
भेद
अव्ययीभाव समास
पहला पद प्रधान व अव्यय
यथाशक्ति, यथानियम
आजीवन, आकंठ
प्रतिदिन, प्रतिपल
भेद
द्वन्द्व
दोनों पद प्रधान योजक का प्रयोग
माता–पिता
पाप–पुण्य
सुख–दुःख
ऊँच–नीच
अमीरी–गरीबी
भेद
तत्पुरुष समास
दूसरा पद प्रधान
कारक चिह्नों का प्रयोग
उपभेद
द्विगु
पूर्वपद संख्यावाची
चारपाई
पंचवटी
अठन्नी
त्रिवेणी
उपभेद
कर्मधारय
उपमान–उपमेय
विशेषण–विशेष्य
कमलनयन
चन्द्रमुख
नीलकंठ
लाल मिर्च
कर्म तत्पुरुष
'को'
ग्रामगत, स्वर्गप्राप्त
अधिकरण तत्पुरुष
'में, पर'
रणवीर, आप बीती
करण तत्पुरुष
'से द्वारा, के द्वारा
तुलसीकृत
सूरकृत
सम्प्रदान तत्पुरुष
'के लिए'
पाठशाला, रसोईघर
अपादान तत्पुरुष
'से'
ऋणमुक्त
संबंध तत्पुरुष
का, के, की
सेनापति, राष्ट्रपिता
राजपुत्र

विलोम शब्द

19

अल्पायु - दीर्घायु
अनुरक्त - विरक्त
अतल - वितल
अवर - प्रवर
अमावस्या - पूर्णिमा
असली - नकली
अरूचि - सुरूचि
अपकार - उपकार
स्वाधीन - पराधीन
आहार - निराहार
दाता - याचक
खेद - प्रसन्नता
गुप्त - प्रकट
प्रत्यक्ष - परोक्ष
घृणा - प्रेम
सजीव - निर्जीव
सुगंध - दुर्गन्ध
मौखिक - लिखित
संक्षेप - विस्तार
घात - प्रतिघात
निंदा - स्तुति
मितव्यय - अपव्यय
सरस - नीरस
सौभाग्य - दुर्भाग्य
मोक्ष - बंधन
कृतज्ञ - कृतघ्न
क्रय - विक्रय
दुर्लभ - सुलभ
निरक्षर - साक्षर
नूतन - पुरातन
बंधन - मुक्ति
ठोस - तरल
यश - अपयश
सगुण - निर्गुण
मूक - वाचाल
रुग्ण - स्वस्थ
रक्षक - भक्षक
वरदान - अभिशाप
शुष्क - आर्द्र
हर्ष - शोक
क्षणिक - शाश्वत
विधवा - सधवा
शयन - जागरण
शीत - उष्ण
सफल - असफल
सज्जन - दुर्जन
शुभ - अशुभ
संतोष - असंतोष

विलोम शब्द: जो शब्द परस्पर विपरित अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहा जाता है। जैसे: अमृत-विष।
हिंसा- अहिंसा।

अंकुश - निरंकुश
अकाल - सुकाल
अक्रूर - क्रूर
अकलुष - कलुष
अग्राह्य -ग्राह्य
अग्रज - अनुज
उत्साह - अनुत्साह
सोत्साह - निरुत्साह
अग्रिम - अन्तिम
अचल - चल
अजल - निर्जल
वृष्टि - अनावृष्टि
अनंत - अंत
अति -अल्प
अतुकान्त - तुकान्त
अतिवृष्टि - अनावृष्टि
अनाहूत - आहुत
अनुकूल - प्रतिकूल
अनुरक्ति -विरक्ति
अनित्य - नित्य
अनुलोम- विलोम
अनभिज्ञ- भिज्ञ
अमृत - विष
अर्पण - ग्रहण
अपेक्षा - उपेक्षा
अर्वाचीन - प्राचीन
अपकार - उपकार
अवलम्ब - निरालम्ब
अल्प - अधिक
अधम- उत्तम
अवनत - उन्नत
अन्तरंग- बहिरंग
अनाथ- सनाथ
अथ - इति
आदर -अनादर
अदेय - देय
अन्तरंग - बहिरंग
अंतर - बाह्य
अंशतः - पूर्णतः
अल्पकालीन - दीर्घकालीन
अल्पज्ञ - बहुज्ञ
अपेक्षित - अनपेक्षित
अधुनातन - पुरातन
स्वीकार - अस्वीकार
अधर्म - सधर्म
अदोष - सदोष
अल्पायु - दीर्घायु
अभ्यस्त - अनभ्यस्त
अनुरक्त - विरक्त
अमर - मर्त्य
अतल - वितल
अवर - प्रवर
अमावस्या - पूर्णिमा
असली - नकली
अरूचि - सुरूचि
अज्ञ - विज्ञ
अपकार - उपकार
अनागत - आगत
अनिष्ट - इष्ट
अस्त - उदय
अस्ताचल - उदयाचल

पर्यायवाची शब्द 20

अंधकार	:	तिमिर,अँधेरा,तम।
आग	:	अग्नि,अनल,पावक,दहन।
अतिथि	:	पाहुन,आगंतुक,अभ्यागत,मेहमान।
अनुचर	:	नौकर, दास, सेवक, परिचारक।
अनुपम	:	अनूठा, अनोखा, अपूर्व,निराला,अभूतपूर्व।
आभूषण	:	भूषण, गहना, अलंकार।
आज्ञा	:	हुक्म,आदेश,निर्देश।
अमृत	:	सोम,सुधा,पीयूष,मधु।
असुर	:	दैत्य,दानव,राक्षस,निशाचर,रजनीचर।
अश्व	:	वाजि,घोडा,घोटक,रविपुत्र,हय,तुरंग।
आम	:	रसाल,आम्र,सौरभ,मादक,अमृतफल।
अहंकार	:	गर्व,अभिमान,दर्प,मद,घमंड।
आँख	:	लोचन, नयन, नेत्र,चक्षु,दृग,विलोचन,दृष्टि।
आकाश	:	नभ,गगन,अम्बर,व्योम, अनन्त,आसमान।
आनंद	:	हर्ष,सुख,आमोद,मोद,प्रमोद,उल्लास।
इंसान	:	मनुष्य,आदमी,मानव,मानुष।
इज्जत	:	मान,प्रतिष्ठा,आदर,आबरू।
इनाम	:	पुरस्कार,पारितोषिक,बख्शीश।
इंद्र	:	देवराज,सुरेन्द्र,सुरपति,अमरेश,देवेन्द्र।
इच्छा	:	अभिलाषा,चाह,कामना,लालसा,मनोरथ,आकांक्षा।
ईश्वर	:	भगवान,परमेश्वर,जगदीश्वर,विधाता।
उन्नति	:	प्रगति,विकास,उत्कर्ष,अभ्युदय,उत्थान,वृद्धि।
कमल	:	पंकज,नीरज,सरोज,जलज,जलजात।
कपड़ा	:	चीर,पट,वसन,अम्बर,वस्त्र।
कान	:	श्रवण,श्रुतिपट,कर्ण,श्रवनेंद्रिय।
कोमल	:	नाजुक,नरम,मृदु,सुकुमार,मुलायम।
कोयल	:	वनप्रिय,पिक,कोकिला,वसंतदूत।
किनारा	:	कगार,कूल,तट,तीर।
कृपा	:	प्रसाद,करुणा,दया,अनुग्रह।
गाय	:	गौ,धेनु,सुरभि,भद्रा,रोहिणी।
चरण	:	पद,पग,पाँव,पैर।
कंगन	:	कड़ा,चूडा,वलय,कंकड़।
किताब	:	पोथी,ग्रन्थ,पुस्तक।

पर्यायवाची शब्द : पर्यायवाची शब्द वे शब्द होते हैं जो एक अर्थ का बोध कराते हैं। इन्हें समानार्थी शब्द के नाम से भी जाना जाता है।
जैसे : अग्नि : आग, अनल, ज्वाला, पावक।
अमृत : सुधा , सोम, अमी, पीयूष।

कपड़ा : चीर,वसन,पट,वस्त्र,अम्बर,परिधान।
कामदेव: मनोज,काम,मार,कंदर्प,अनंग,मनसिज,रतिनाथ।
किरण : ज्योति, प्रभा,रश्मि, दीप्ति,मरीचि।
किसान: कृषक,भूमिपुत्र,हलधर,खेतिहर,अन्नदाता।
कृष्ण : राधापति,घनश्याम,वासुदेव,माधव,मोहन,केशव,गोविन्द,गिरधारी।
गंगा : देवनदी,मंदाकनी,भगीरथी,देवपगा,ध्रुवनंदा।
गणेश : गजानन,गौरीनंदन,गणपति,लम्बोदर।
कोयल : कोकिला,पिक,काकपाली,बसंतदूत।
क्रोध : रोष,कोप,अमर्ष,कोह,प्रतिघात।
गज : हाथी,हस्ती,मतंग,मदकल।
ग्रीष्म : ताप,घाम,निदाघ,गर्मी।
गृह : घर,सदन,गेह,भवन,धाम,निकेतन,निवास।
घन : मेघ,बादल,घटा,अम्बुद,अम्बुधर।
घमंड : दंभ,दर्प,गर्व,गरूर,अभिमान।
घर : गृह,धाम,गेह,बसेरा।
घोड़ा : तुरंग,हय,घोट,घोटक,अश्व ।
चंद्रमा : चन्द्र,शशि,हिमकर,राकेश,रजनीश,निशानाथ,सोम,मयंक।
चतुर : चालाक,कुशल,पटु,नागर,दक्ष,प्रवीण।
जल : वारि,नीर,तीय,अम्बु,उदक,पानी,जीवन,पय,पेय।
जंगल : विपिन,कानन,वन,अरण्य,गहन।
झंडा : फरहरा,ध्वज,पताका,निशान।
झूठ : असत्य,मिथ्या,मृषा,अनृत।
तन : काया,तनु,शरीर,देह,कलेवर।
तरु : विटप,पादप,पेड़,द्रुम,वृक्ष।
तालाब : सरोवर,जलाशय,सर,पुष्कर,पोखर,जलवान,सरसी।
तलवार: असि,करवाल,कृपाण,खडग,शायक,चंद्रहास।
तीर : वाण,सर ,नाराच ,विहंग शिलिमुख।
तोता : सुग्गा,शुक,सुआ,कीर।
दास : सेवक,नौकर,चाकर,परिचारक,अनुचर ।
दरिद्र : निर्धन,गरीब,रंक,कंगाल,दीन।
दिन : दिवस,याम,दिवा,वार,प्रमान।
दुःख : पीड़ा,कष्ट,व्यथा,वेदना,संताप,शोक,खेद,पीर,लेश।
दूध : दुग्ध,क्षीर,पय ।
दुष्ट : पापी,नीच,दुर्जन,अधम,खल,पामर।
दुर्गा : चंडिका,भवानी,कुमारी,कल्याणी,महागौरी,कालिका,शिवा।
देवता : सुर,देव,अमर,वसु।
धनुष : धनुही,धनु,सारंग,चाप,शरासन।

धन : दौलत,संपत्ति,सम्पदा,वित्त।
धरती : पृथ्वी,भू,भूमि,धरणी,वसुंधरा,अचला।
नदी : सरिता, तटिनी,तरंगिणी,निर्झरिणी,शैलजा,जलमाला,नद।
नया : नूतन,नव,नवीन,नव्य।
पवन : वायु,हवा,समीर,वात,मारुत,अनिल।
पहाड़ : पर्वत,गिरी,अचल,नग,भूधर,महीधर।
पक्षी : खग,चिडिया,गगनचर,पखेरू,विहंग,नभचर।
पानी : जल,नीर,वारि,सलिल,अंबु।
पार्वती : उमा,गिरिजा,गौरी,शिवा,भवानी,अम्बिका।
पति : स्वामी,प्राणधार,प्राणप्रिय,प्राणेश,आर्यपुत्र।
पत्नी : गृहणी,बहु,वनिता,दारा,जोरू,वामांगिनी।
पुत्र : बेटा,आत्मज,वत्स,तनुज,तनय,नंदन ।
पुत्री : बेटी,आत्मजा,तनुजा,सुता,तनया ।
पुष्प : फूल,सुमन,कुसुम,मंजरी,प्रसून ।
पृथ्वी : धरती,धरा ,भू ,भूमि ,जमीन,वसुंधरा ,धरणी ।
फूल : सुमन,कुसुम ,पुष्प।
फ़ौरन : तत्काल,तुरंत,तत्क्षण।
बचपन : बाल्यपन,लड़कपन,छुटपन।
बाण : तीर,शर,विहंग,शलाका ।
भ्रमर : अलि,मधुप,मधुकर,भृंग,भौरा।
मदद : सहयोग , सहायता , योगदान।
मन : अन्तकरण ,चित्त , दिल , मानस।
मित्र : सखा,सहचर,साथी,दोस्त।
मूल्य : मोल,कीमत,कदर,लागत,दाम,दर।
मृत्यु : मौत,देहांत,निधन,अंत,स्वर्गवास।
मोक्ष : मुक्ति,निर्वाण,कैवल्य,परम्पद।
मछली : मीन,मतस्य,जलचरी।
मोर : मयूर,केकी,शिखी,कलापी।
बादल : मेघ,घन,जलधर,जलद,वारिद,नीरद।
बन्दर : वानर,कपि,कपीश, हरि ।
बिजली: घनप्रिया,इन्द्रवज्र,चपला,दामिनी,ताडित,विद्युत ।
बाण : तीर,शर,सायक,शिलीमुख ।
विष : जहर,हलाहल,गरल,कालकूट ।
वृक्ष : पेड़,पादप,विटप,तरु।
विष्णु : नारायण,दामोदर,पीताम्बर,चक्रपाणी ।
भूषण : जेवर,गहना,आभूषण,अलंकार ।
भौरा : भ्रमण,भँवरा,भृंग,मिलिंद,मधुप ।

महेश : महादेव,नीलकंठ,चंद्रशेखर,गंगाधर,रूद्र,शिव,विश्वनाथ।
मनुष्य : आदमी,नर,मानव,मानुष,मनुज।
मदिरा : शराब,हाला,आसव,मधु,मद।
मोर : केक,कलापी,नीलकंठ,नर्तकप्रिय।
मृग : हिरण,सारंग,कृष्णसार ।
मछली : मीन,मत्स्य,जलजीवन,शफरी,मकर।
मूर्ख : गँवार,अल्पमति,अज्ञानी,जड़।
मृत्यु : देहांत,मौत,अंत,स्वर्गवास,मरण।
मोक्ष : मुक्ति,परधाम ,निर्वाण,परमपद।
युद्ध : रण,जंग,समर,समाघात ।
योग्य : सक्षम,कुशल,समर्थ,उपयुक्त ।
यौवन : युवावस्था,जवानी,जोबन,तारुण्य ।
रजनी : रात,रात्रि,निशा,यामिनी।
रत्नाकर : समुन्द्र,सागर,पारावार,वारिधि।
राक्षस : निशाचर,निशिचर,दैत्य,दानव।
राजा : महिपाल,भूपाल,नरेश,पार्थ,सम्राट।
राधा : राधिका,हरिप्रिया,ब्रजरानी,वृषभानुजा।
रानी : स्वामिनी,मालकिन,बेगम।
रात : रात्रि,रैन,रजनी,निशा,यामिनी,तमी,निशि,यामा।
लाभ : मुनाफा,फायदा,नफा,बचत,बरकत।
लक्ष्मी : कमला,पद्मा,रमा,हरिप्रिया,श्री,इंदिरा।
विवाह : शादी,गठबंधन,परिणय,व्याह,पाणिग्रहण।
वायु : पवन,अनिल,समीर,हवा,वात।
वस्त्र : कपडा,वसन,अम्बर,परिधान,पट।
साँप : सर्प,नाग,विषधर,पवनासन।
शिव : भोलेनाथ,शम्भू,त्रिलोचन,महादेव,नीलकंठ,शंकर।
सूर्य : रवि,सूरज,दिनकर,प्रभाकर,आदीत्य,भास्कर,दिवाकर।
संसार : जग,विश्व,जगत,लोक,दुनिया।
शरीर : देह,तनु,काया,कलेवर,अंग,गात।
सोना : स्वर्ण,कंचन,कनक,हेम,कुंदन।
स्त्री : अबला,नारी,महिला,रमणी,दारा,कान्ता।
सिंह : केशरी,शेर,महावीर,नाहर,सारंग,मृगराज।
समुद्र : सागर,पयोधि,उदधि,पारावार,नदीश,जलधि।
हर्ष : आनंद,प्रसन्नता,प्रमोद,सुख,आमोद।
हाथी : गज,सिंघु,हस्ती,नाग,मतंग,गजेन्द्र।
शत्रु : रिपु,दुश्मन,अमित्र,वैरी।
हिमालय : हिमगिरी,हिमाचल,गिरिराज,पर्वतराज।
हक़ : अधिकार,दावा,कब्ज़ा,प्रभुत्व।

मुहावरे

21

मुहावरा: जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो उसे मुहावरा कहा जाता है। जैसे: भारतीय सेना ने युद्ध में पाकिस्तानी सेना के दाँत खट्टे कर दिए। यहाँ दाँत खट्टे कर दिए का अर्थ कोई खट्टी चीज खिला देने से नहीं है बल्कि बुरी तरह हरा देने से है।

हल्दी लगे न फिटकरी रंग चौखा।
बिना लागत के बढ़िया कमाई होना।

हाथ-खड़े कर देना।
असमर्थता जता देना।

घी के दिये जलाना।
खुशियाँ मनाना।

घाव पर नमक छिड़कना।
दुःखी को ज्यादा दुःखी करना।

घोड़े बेचकर सोना।
बिल्कुल निश्चित हो जाना।

चार चाँद लगाना।
किसी चीज को सुन्दर बनाना।

चोर की दाढ़ी में तिनका।
गलत व्यक्ति का व्यवहार उसकी असलियत जाहिर कर देता। ।

चोली-दामन का साथ।
अत्याधिक घनिष्ठता होना।

चुल्लू भर पानी में डूबना।
अपमानित होना।

चिराग तले अन्धेरा।
सबको खुश रखने वाले का स्वयं दुःखी रहना।

छक्के छुड़ाना।
अपने से तगड़े पर विजय प्राप्त करना।

जल में रहकर मगरमच्छ से बैर।
पासपड़ौस में उचित व्यवहार न रखना।

जब तक सांस, तब तक आस।
अन्तिम समय तक प्रयासरत रहना।

गड़े मुर्दे उखाड़ना।
पुरानी बातों का बखान करना

गुदड़ी के लाल।
गरीब के घर होनहार पैदा होना।

गागर में सागर भरना।
कम शब्दों में ज्यादा कहना।

गोबर गणेश।
बहुत ज्यादा सीधा होना।

घर का भेदी लंका ढावे।
रहस्य को जानने वाला सर्वनाश कर सकता है।

घास न डालना।
मतलब न रखना।

घोड़े पर सवार रहना।
चैन से न बैठना।

अन्धे की लाठी।
किसी का एक अकेला ही सहारा होना।

अपना उल्लू सीधा करना।
किसी भी तरह अपना काम निकालना।

हद कर दी।
असम्भव कार्य को कर देना।

हवा में गाँठ लगाना।
बड़े बड़े दावे करना।

हाथ को हाथ सुझाई न देना।
कुछ भी समझ में न आना।

हाथ-खड़े कर देना।
वक्त पर मदद से इन्कार कर देना।

हेराफेरी करना।
इधर-उधर हाथ साफ करना।

हाथ में कटोरा आना।
भारी हानि हो जाना।

घाव पर नमक छिड़कना।
परेशान व्यक्ति की परेशानी और बढ़ाना।

चिकना पड़ा।
बेशर्म होना।

वाक्य में मुहावरे के प्रयोग से भाषा सौंदर्य और अर्थ प्रभाव में वृद्धि हो जाती है।

लोकोक्तियाँ

22

लोकोक्ति :
लोकोक्ति 'लोक में प्रचलित उक्ति' है। जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धृत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है। इसे कहावत भी कहते हैं। जैसे:अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता लोकोक्ति का अर्थ है, एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता।

अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।
अपने से प्रभावशाली से टकराना।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना।
अपनी प्रशंसा स्वयं करना।

अपने हाथ जगन्नाथ।
अपना काम स्वयं करना।

अपना मारे छाँव में डाले।
अपना दुःख पहुँचाकर स्वयं भी दुःखी होता है।

अपना पूत सभी को प्यारा।
अपनी चीज को सभी अच्छी बताते हैं।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
एक आदमी समाज को नहीं बदल सकता।'

अंधे के आगे रोये अपने नैन भी खोये।
मदद की उम्मीद न होने वाले से मदद माँगना।

अशर्फियाँ लुटाये कोयले पर मोहर।
मूल्यवान वस्तु के प्रति लापरवाह होना तथा मामूली की देखभाल करना।

अंधेरे में तीर चलाना।
सही राह पर न चलना।

अँधा बाँटे रेवड़ी अपने-अपने को दे।
अपनों का हित साधना।

अन्धों में काना सरदार।
बेवकूफों के बीच थोड़ा अक्लमंद।

अन्थे के हाथ बटेर लगना।
अचानक इच्छित कार्य का पूर्ण हो जाना।

अपना करना अपना खाना।
अपने काम से काम रखना।

अँधा गाये , बहरा बजावे, गूंगा ताल लगाये।
एक-दूसरे की बात न मानना।

अन्त भले का भला।
अच्छे का परिणाम अच्छा ही होता है।

अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता।
स्वयं करे बिना कार्य पूर्ण नहीं होता।

अब पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गयी खेत।
नुकसान होने पर पछताने का कोई लाभ नहीं।

अपनी इज्जत अपने हाथ।
अपना सम्मान कराना अपने हाथ में होता है।

अवसर को कभी मत गंवाओ।
उपयुक्त अवसर मिलते ही अपना काम पूर्ण कर लो।

अज्ञानी किसी से नहीं डरते।
मूर्ख व्यक्ति किसी बात का भय नहीं खाता।

जिसकी बंदरी वही नचावे और नचावे तो काटन धावे : जिसका जो काम होता है वही उसे कर सकता है।

जिसकी बिल्ली उसी से म्याऊँ करे : किसी के द्वारा पाला हुआ व्यक्ति उसी से गुर्राता है।

जिसकी लाठी उसकी भैंस : शक्ति अनधिकारी को भी अधिकारी बना देती है, शक्तिशाली की ही विजय होती है।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा : जिसके पास धन होता है उसको लोग भलामानस समझते हैं, निर्धन को लोग भला मानस नहीं समझते।

जिसके राम धनी, उसे कौन कमी : जो भगवान के भरोसे रहता है, उसे किसी चीज की कमी नहीं होती।

जिसके हाथ डोई (करछी) उसका सब कोई : सब लोग धनवान का साथ देते हैं और उसकी खुशामद करते हैं।

जिसे पिया चाहे वही सुहागिन : जिस पर मालिक की कृपा होती है उसी की उन्नति होती है और उसी का सम्मान होता है।

जी कहो जी कहलाओ : यदि तुम दूसरों का आदर करोगे, तो लोग तुम्हारा भी आदर करेंगे।

जीभ और थैली को बंद ही रखना अच्छा है : कम बोलने और कम खर्च करने से बड़ा लाभ होता है।

जीये न मानें पितृ और मुए करें श्राद्ध : कुपात्र पुत्रों के लिए कहते हैं जो अपने पिता के जीवित रहने पर उनकी सेवा-सुश्रुषा नहीं करते, पर मर जाने पर श्राद्ध करते हैं।

जी ही से जहान है : यदि जीवन है तो सब कुछ है। इसलिए सब तरह से प्राण-रक्षा की चेष्टा करनी चाहिए।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खाय तुरंग : जब कोई कठिन परिश्रम करे और उसका आनंद दूसरा उठावे तब कहते हैं, जैसे गरीब आदमी परिश्रम करते हैं और पूँजीपति उससे लाभ उठाते हैं।

जूँ के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती : साधारण कष्ट या हानि के डर से कोई व्यक्ति काम नहीं छोड़ देता।

अज्ञानी धन चाहता है, ज्ञानी गुण।
अज्ञानी व्यक्ति धन की चाहत रखता है जबकि ज्ञानी व्यक्ति ज्ञान की चाहत रखता है।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।
अपने इलाके में तो डरपोक भी अपने को ताकतवर प्रदर्शित करता है।

अक्ल बड़ी या भैंस।
ज्ञान भीड़ से ज्यादा प्रभावशाली होता है।

रस

23

"कविता को पढ़ने से जिस आनंद की अनुभूति होती है उसे रस कहते हैं। रस काव्य की आत्मा है।"

रसों के आधार भाव हैं। भाव मन के विकारों को कहते हैं।

ये दो प्रकार के होते हैं-

1. स्थायी भाव।
2. संचारी भाव।

1. स्थाई भाव -

रस रूप में पुष्ट होने वाला तथा सम्पूर्ण प्रसंग में व्याप्त रहने वाला भाव स्थाई भाव कहलाता है। स्थाई भाव 9 माने गए हैं किंतु वात्सल्य नाम का दसवां स्थाई भाव तथा भगवद विषयक रति को भी स्थायी भाव की मान्यता दे दी गयी है।

अब रस 11 माने जाते हैं। नीचे क्रमशः पहले रस तथा उसके बाद स्थाई भाव दिए गए हैं-

	रस	स्थाई भाव
1.	**शृंगार**	रति
2.	हास्य	हास
3.	करुण	शोक
4.	रौद्र	क्रोध
5.	वीर	उत्साह
6.	भयानक	भय
7.	वीभत्स	जुगुप्सा
8.	अद्भुत	विस्मय
9.	शांत	निर्वेद
10.	वात्सल्य	वत्सल

1. शृंगार रस–

जब किसी काव्य में नायक नायिका के प्रेम, मिलने, बिछुड़ने आदि जैसी क्रियायों का वर्णन होता है तो वहाँ **शृंगार रस** होता है। यह दो प्रकार का होता है-

1. **संयोग शृंगार** 2. **वियोग शृंगार**

1.संयोग शृंगार--जब नायक नायिका के मिलने और प्रेम क्रियायों का वर्णन होता है तो संयोग

शृंगार होता है।

उदाहरण---

मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरो न कोई
जाके तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।

2. वियोग शृंगार---जब नायक नायिका के बिछुड़ने का वर्णन होता है तो वियोग **शृंगार** होता है।

उदाहरण---

हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी।
तुम देखि सीता मृग नैनी।

2. हास्य रस--

जब किसी काव्य आदि को पढ़कर हँसी आए तो समझ लीजिए वहाँ हास्य रस है।

उदाहरण--

चींटी चढ़ी पहाड़ पे मरने के वास्ते
नीचे खड़े कपिल देव कैच लेने के वास्ते।

3. करुण रस -- जब भी किसी साहित्यिक काव्य, पद्य आदि को पढ़ने के बाद मन में करुणा, दया का भाव उत्पन्न हो तो करुण रस होता है।

उदाहरण---

दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नही कही।

4. रौद्र रस--

जब किसी काव्य में किसी व्यक्ति के क्रोध का वर्णन होता है तो वहाँ रौद्र रस होता है।

उदाहरण---

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा,
यह मत लछिमन के मन भावा।
संधानेहु प्रभु बिसिख कराला,
उठि ऊदथी उर अंतर ज्वाला।

5. वीर रस--

जब किसी काव्य में किसी की वीरता का वर्णन होता है तो वहाँ वीर रस होता है।

उदाहरण--

चमक उठी सन सत्तावन में वो तलवार पुरानी थी,
बुंदेलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

6. भयानक रस--

जब भी किसी काव्य को पढ़कर मन में भय उत्पन्न हो या काव्य में किसी के कार्य से किसी के भयभीत होने का वर्णन हो तो वहाँ भयानक रस होता है।

उदाहरण--- लंका की सेना कपि के गर्जन रव से काँप गई,
हनुमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भाँप गई।

7. वीभत्स रस--

वीभत्स यानि घृणा। जब भी किसी काव्य को पढ़कर मन में घृणा आये तो वीभत्स रस होता है। ये रस मुख्यतः युद्धों के वर्णन में पाया जाता है जिनमें युद्ध के **पश्चात** लाशों, चील कौओं का बड़ा ही घृणास्पद वर्णन होता है।

उदाहरण---- कोउ अंतडिनी की पहिरि माल इतरात दिखावट।
कोउ चर्वी लै चोप सहित निज अंगनि लावत।

8. अद्भुत रस--

जब किसी पद्य कृति या काव्य में किसी ऐसी बात का वर्णन हो जिसे पढ़कर या सुनकर **आश्चर्य** हो तो **अद्भुत** रस होता है।

उदाहरण--- कनक भूधराकार सरीरा।
समर भयंकर अतिबल बीरा।

9. शांत रस--

जब कभी ऐसे काव्यों को पढ़कर मन में असीम शान्ति का एवं दुनिया से मोह खत्म होने का भाव उत्पन्न हो तो शांत रस होता है।

उदाहरण--- मेरो मन अनत सुख पावे
जैसे उड़ी जहाज को पंछी फिर जहाज पे आवै।

10. वात्सल्य रस---

जब काव्य में किसी की बाल लीलाओं या किसी के बचपन का वर्णन होता है तो वात्सल्य रस होता है। सूरदास ने जिन पदों में श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है उनमें वात्सल्य रस है।

उदाहरण--- मैया मोरी दाऊ ने बहुत खिजायो।
मोसों कहत मोल की लीन्हो तू जसुमति कब जायो।

11. भक्ति रस-- जहाँ ईश्वर के प्रति श्रद्धा और प्रेम का भाव हो, वहाँ भक्ति रस होता है।
अनुभाव - ध्यान लगाना, माला जपना, आँखें मूँदना, कीर्तन करना, रोना, सिर झुकाना आदि।

उदाहरण--- मेरो मन अनंत कहां सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आवै
कमलनैन कौ छांड़ि महातम और देव को ध्यावै।
परमगंग कों छांड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावै॥

रस
काव्य की आत्मा इसमें आनन्द की प्राप्ति होती है।
भक्ति रस
ईश्वर के प्रति (श्रद्धा/प्रेमभाव)
वात्सल्य रस
(वात्सल–स्थाई भाव)
काव्य में बाल क्रीड़ाओं/ लीलाओं का वर्णन
शृंगार रस
(रति–स्थाई भाव)
संयोग–मिलना
वियोग–बिछुड़ना
हास्य रस
(हास्य–स्थाई भाव)
काव्य को पढ़कर हँसी आना
शांत रस
(निर्वेद–स्थाई भाव)
मन में असीम शान्ति मिलती है
करूण रस
(शोक–स्थाई भाव)
काव्य को पढ़ने पर करुना व दया भाव आना
अद्भुत रस
(आश्चर्य/विस्मय–स्थाई भाव)
काव्य को पढ़ने से आश्चर्य उत्पन्न होता है
रौद्र रस
क्रोध–स्थाई भाव
काव्य को पढ़ने से क्रोध उत्पन्न होना
वीर रस
(उत्साह–स्थाई भाव)
वीरता का भाव उत्पन्न हो
भयानक रस
(भय–स्थाई भाव)
भय उत्पन्न होना
वीभत्स रस
(घृणा/गुस्सा–स्थाई भाव)
घृणा उत्पन्न हो
युद्ध के पश्चात का दृश्य

अलंकार

24

शाब्दिक अर्थ : गहना अथवा आभूषण ।

काव्यगत अर्थ : शब्दों और अर्थों के चमत्कारपूर्ण प्रयोग को अलंकार कहते हैं।

या

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

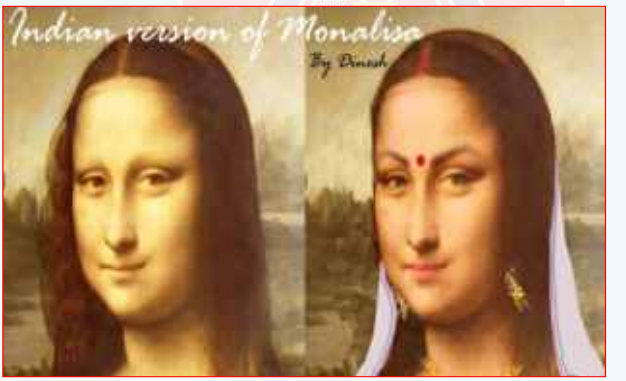

अलंकार के प्रकार:–

अनुप्रास	उपमा
यमक	रूपक
श्लेष	उत्प्रेक्षा
अतिशयोक्ति	मानवीकरण

अनुप्रास अलंकार

परिभाषा : वर्णों की आवृत्ति के कारण जहाँ चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार पाया जाता है।

उदाहरण : चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में।

यमक अलंकार

परिभाषा : जहाँ एक या एक से अधिक शब्द , एक से अधिक वार प्रयुक्त हों और उनके अर्थ अलग - अलग निकलें , वहाँ यमक अलंकार पाया जाता है।

उदाहरण : " काली घटा का घमंड घटा। "

घटा - काले बादल

घटा - कम होना

श्लेष अलंकार

परिभाषा : जहाँ एक शब्द का एक ही बार प्रयोग हो परंतु उसके विभिन्न अर्थ निकलें , वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण : को घटि ये वृषभानुजा ,वे हलधर के वीर।

वृषभानु + जा = राधा

वृषभ + अनुजा = बैल की बहन

हलधर = हल को धारण करनेवाला।

= बलराम।

उपमा अलंकार

परिभाषा : जब दो वस्तुओं को किसी समानता के कारण एक समझा जाता है तो ,वहाँ उपमा अलंकार पाया जाता है।

उदाहरण : सीता का मुख चन्द्र - सा सुन्दर है।

उपमेय : सीता का मुख

उपमान : चन्द्र

साधारण धर्म : सुन्दर

वाचक शब्द : सा

जिन पंक्तियों में सा , सी , सम , सरिस , से , जैसा , ज्यों ,तुल्य आदि में से कोई एक आ जाए , वहाँ उपमा अलंकार पाया जाता है ।

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

रूपक अलंकार

परिभाषा : जहाँ उपमेय को ही उपमान कहा जाता है , वहाँ रूपक अलंकार होता है। या जहाँ उपमेय ओर उपमान में अत्यन्त समानता के कारण दोनों में अभेद स्थापित हो, वहाँ रूपक अलंकार पाया जाता है।

उदाहरण :

" चरण - कमल वंदौ हरिराई। "

यहाँ चरण को ही कमल कहा गया है ।

उत्प्रेक्षा अलंकार

परिभाषा : जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें मनो मानो, मनु मनहु, जानो, जनु जनहु आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरण : "कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो, हो गए पंकज नए।।"

अतिशयोक्ति अलंकार

परिभाषा : जहाँ किसी बात को बढ़ा चढ़ाकर कहा जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :

" आगे नदिया पड़ी अपार , घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।"

मानवीकरण अलंकार

परिभाषा : जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोप हो, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है ।

उदाहरण :

" मेघ आए बड़े बन - ठन के संवर के ।"

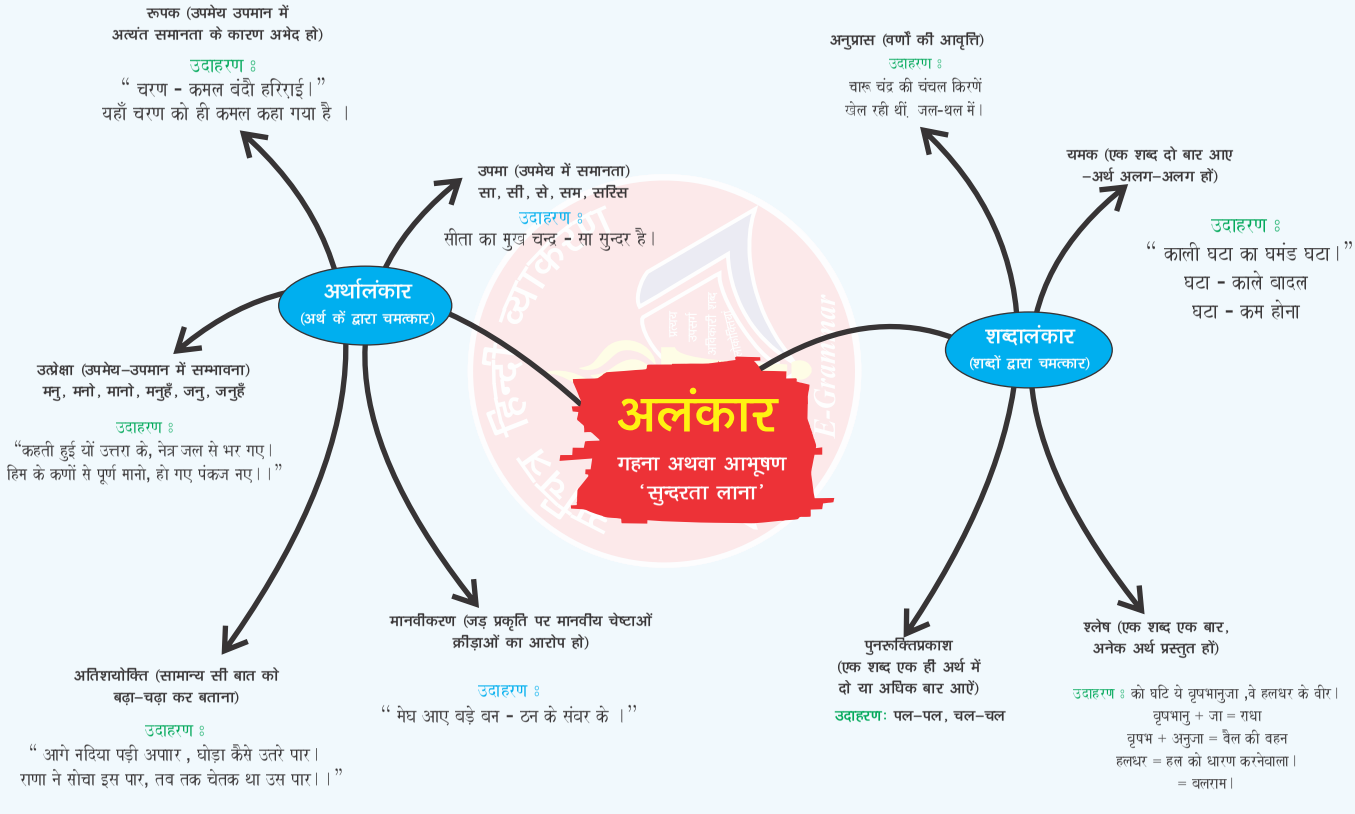
अलंकार
गहना अथवा आभूषण
'सुन्दरता लाना'
अर्थालंकार
(अर्थ के द्वारा चमत्कार)
रूपक (उपमेय उपमान में
अत्यंत समानता के कारण अभेद हो)
उदाहरण ः
" चरण - कमल बंदौ हरिराई। "
यहाँ चरण को ही कमल कहा गया है ।
उपमा (उपमेय में समानता)
सा, सी, से, सम, सरिस
उदाहरण ः
सीता का मुख चन्द्र - सा सुन्दर है।
उत्प्रेक्षा (उपमेय-उपमान में सम्भावना)
मनु, मनो, मानो, मनुहँ, जनु, जनुहँ
उदाहरण ः
"कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो, हो गए पंकज नए।।"
अतिशयोक्ति (सामान्य सी बात को
बढ़ा-चढ़ा कर बताना)
उदाहरण ः
" आगे नदिया पड़ी अपार , घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।। "
मानवीकरण (जड़ प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं
क्रीड़ाओं का आरोप हो)
उदाहरण ः
" मेघ आए बड़े बन - ठन के संवर के ।"
शब्दालंकार
(शब्दों द्वारा चमत्कार)
अनुप्रास (वर्णों की आवृत्ति)
उदाहरण ः
चारू चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही थीं, जल-थल में।
यमक (एक शब्द दो बार आए
-अर्थ अलग-अलग हों)
उदाहरण ः
" काली घटा का घमंड घटा। "
घटा - काले बादल
घटा - कम होना
पुनरूक्तिप्रकाश
(एक शब्द एक ही अर्थ में
दो या अधिक बार आएँ)
उदाहरण: पल-पल, चल-चल
श्लेष (एक शब्द एक बार,
अनेक अर्थ प्रस्तुत हों)
उदाहरण ः को घटि ये वृषभानुजा ,वे हलधर के वीर।
वृषभानु + जा = गधा
वृषभ + अनुजा = बैल की बहन
हलधर = हल को धारण करनेवाला।
= बलराम।

वाक्यांश के लिए एक शब्द

25

जो कहा न जा सके— अकथनीय
जिसे क्षमा न किया जा सके— अक्षम्य
जिस स्थान पर कोई न जा सके— अगम्य
जो कभी बूढ़ा न हो— अजर
जिसका कोई शत्रु न हो— अजातशत्रु
जो जीता न जा सके— अजेय
जो दिखाई न पड़े— अदृश्य
जिसके समान कोई न हो— अद्वितीय
हृदय की बातें ने वाला— अन्तर्यामी
पृथ्वी, ग्रहों और तारों का स्थान— अन्तरिक्ष
जो सामान्य नियम के विरुद्ध हो— अपवाद
जिस पर मुकदमा चल रहा हो — अभियुक्त
जो पहले कभी नहीं हुआ— अभूतपूर्व
फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार— अस्त्र
जिसकी गिनती न हो सके— अगणित/अगणनीय
जो पहले पढ़ा हुआ न हो— अपठित
जिसके आने की तिथि निश्चित न हो— अतिथि
अत्यधिक बढ़ा–चढ़ा कर कही गई बात— अतिशयोक्ति
सबसे आगे रहने वाला— अग्रणी
जो पहले जन्मा हो— अग्रज
जो बाद में जन्मा हो— अनुज
जिसका पता न हो— अज्ञात
आगे आने वाला— आगामी
जो छूने योग्य न हो— अछूत
जो छुआ न गया हो— अछूता
जो अपनी बात से टले नहीं — अटल
जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों — अष्टाध्यायी
आवश्यकता से अधिक बरसात— अतिवृष्टि
बरसात बिल्कुल न होना— अनावृष्टि
हुत कम बरसात होना— अल्पवृष्टि

कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए जिस एक शब्द का प्रयोग किया जाता है , उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहा जाता है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य–रचना में संक्षिप्तता तथा सुन्दरता आ जाती है।

सीमा का अनुचित उल्लंघन— अतिक्रमण
जो बीत गया हो— अतीत
वह सूचना जो सरकार की ओर से जारी हो— अधिसूचना
विधायिका द्वारा स्वीकृत नियम— अधिनियम
एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना— अनुवाद
किसी सम्प्रदाय का समर्थन करने वाला— अनुयायी
जिसके माता–पिता न हों — अनाथ
पहले लिखे गए पत्र का स्मरण— अनुस्मारक
पीछे–पीछे चलने वाला/अनुसरण करने वाला— अनुगामी
जो कम बोलता हो— अल्पभाषी/मितभाषी
आदेश की अवहेलना— अवज्ञा
जो बिना वेतन के कार्य करता हो— अवैतनिक
जो सहनशील न हो— असहिष्णु
जिसका कभी अन्त न हो— अनन्त
जो कभी मरता न हो— अमर
जिसकी तुलना न हो सके— अतुलनीय
जिसके आदि (प्रारम्भ) का पता न हो— अनादि
सभी जातियों से सम्बन्ध रखने वाला— अन्तर्जातीय
जिसकी कोई उपमा न हो— अनुपम
जिसका वर्णन न हो सके— अवर्णनीय
जिसका खंडन न किया जा सके— अखंडनीय
जिसे करना आवश्यक हो— अनिवार्य
अनुकरण करने योग्य— अनुकरणीय
जिसकी अपेक्षा हो— अपेक्षित
जो कम जानता हो— अल्पज्ञ
जो विधि या कानून के विरुद्ध हो— अवैध
जो कार्य अवश्य होने वाला हो— अवश्यंभावी
जिस रोग का इलाज न किया जा सके— असाध्य रोग/लाइलाज
जिससे पार न पाई जा सके— अपार
बूढ़ा–सा दिखने वाला व्यक्ति— अधेड़
जिसका कोई मूल्य न हो— अमूल्य
जो मृत्यु के समीप हो— आसन्नमृत्यु
मृत्युपर्यन्त— आमरण
जो अपने ऊपर निर्भर हो— आत्मनिर्भर/स्वावलंबी

पूरे जीवन तक— आजीवन
अपनी हत्या स्वयं करना— आत्महत्या
ईश्वर में विश्वास रखने वाला— आस्तिक
विदेश से देश में माल मंगाना — आयात
जिसकी कोई आशा न की गई हो— आशातीत
जो कभी निराश होना न जाने— आशावादी
किसी नई चीज की खोज करने वाला— आविष्कारक
जो गुण–दोष का विवेचन करता हो— आलोचक
जो इन्द्र पर विजय प्राप्त कर चुका हो— इंद्रजीत
माँ–बाप का अकेला लड़का— इकलौता
दूसरे की उन्नति से जलना— ईर्ष्या
जिसने अपना ऋण पूरा चुका दिया हो— उऋण
सूर्योदय की लालिमा— उषा
जिसका ऊपर कथन किया गया हो— उपर्युक्त
जिस भूमि में कुछ भी पैदा न होता हो— ऊसर
सूर्यास्त के समय दिखने वाली लालिमा— ऊषा
हड्डियों का ढाँचा— कंकाल
जिसकी कल्पना न की जा सके— कल्पनातीत
एक के बाद एक— क्रम
कान में कही जाने वाली बात— कानाबाती/कानाफूसी
सरकार का वह अंग जो कानून का पालन करता है— कार्यपालिका
दूसरे की हत्या करने वाला— कातिल
बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच की अवस्था— किशोरावस्था
जिस लड़के का विवाह न हुआ हो— कुमार
ऐसी लड़की जिसका विवाह न हुआ हो— कुमारी
बुरे कार्य करने वाला— कुकर्मी
बुरे मार्ग पर चलने वाला— कुमार्गी
जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो— कुशाग्रबुद्धि
जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो— कुलीन
किए गए उपकार को मानने वाला— कृतज्ञ
किए गए उपकार को न मानने वाला— कृतघ्न
जो क्षमा किया जा सके— क्षम्य
जिसका कुछ ही समय में नाश हो जाए— क्षणभंगुर

जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं — क्षितिज
ग्रहण करने योग्य— ग्राह्य
गीत गाने वाला/वाली— गायक/गायिका
गीत रचने वाला— गीतकार
हर पदार्थ को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली शक्ति— गुरुत्वाकर्षण
गायों के रहने का स्थान— गौशाला
जिसके हाथ में चक्र हो— चक्रपाणि
चार भुजाओं वाला— चतुर्भुज
लंबे समय तक जीने वाला— चिरंजीवी
जो चिरकाल से चला आया है— चिरंतन
जो बहुत समय तक ठहर सके— चिरस्थायी
चार पैरों वाला— चौपाया/चतुष्पद
एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला— जंगम
पेट की अग्नि— जठराग्नि
बारात ठहरने का स्थान— जनवासा
जो जल बरसाता हो— जलद
जो जल से उत्पन्न हो— जलज
वह पहाड़ जिसके मुख से आग निकले— ज्वालामुखी
जल में रहने वाला जीव— जलचर
जनता द्वारा चलाया जाने वाला तंत्र— जनतंत्र
उम्र में बड़ा— ज्येष्ठ
जो चमत्कारी क्रियाओं का प्रदर्शन करता हो— जादूगर
जिसने आत्मा को जीत लिया हो— जितात्मा
जानने की इच्छा रखने वाला— जिज्ञासु
इन्द्रियों को वश में करने वाला— जितेन्द्रिय
भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने/देखने वाला— त्रिकालज्ञ/त्रिकालदर्शी
गंगा, जमुना और सरस्वती नदी का संगम— त्रिवेणी
जिसके तीन आँखे हैं — त्रिनेत्र
वह स्थान जो दोनों भृकुटियों के बीच होता है— त्रिकुटी
तीन महीने में एक बार— त्रैमासिक
जो धरती पर निवास करता हो— थलचर
पति और पत्नी का जोड़ा— दंपती
दस वर्षों की समयावधि— दशक

गोद लिया हुआ पुत्र— दत्तक
धन जो विवाह के समय पुत्री के पिता से प्राप्त हो— दहेज
वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करता है— दुर्गम
जिसको जीतना बहुत कठिन हो— दुर्जेय
वह बच्चा जो अभी माँ के दूध पर निर्भर है— दुधमुँहा
बुरे भाग्य वाला— दुर्भाग्यशाली
जिसमें दया भावना हो— दयालु
जिसका आचरण बुरा हो— दुराचारी
दूध पर आधारित रहने वाला— दुग्धाहारी
जिसकी प्राप्ति कठिन हो— दुर्लभ
आगे की बात सोचने वाला व्यक्ति— दूरदर्शी
देश से द्रोह करने वाला— देशद्रोही
प्रतिदिन होने वाला— दैनिक
धन से सम्पन्न— धनी
जो धनुष को धारण करता हो— धनुर्धर
धन की इच्छा रखने वाला— धनेच्छु
जिसका जन्म अभी–अभी हुआ हो— नवजात
जो आकाश में विचरण करता है— नभचर
ईश्वर में विश्वास न रखने वाला— नास्तिक
किसी से भी न डरने वाला— निडर/निर्भीक
जो कपट से रहित है— निष्कपट
जो पढ़ना–लिखना न जानता हो— निरक्षर
जिसका कोई अर्थ न हो— निरर्थक
रात में विचरण करने वाला— निशाचर
जिसका आकार न हो— निराकार
बिना भोजन (आहार) के— निराहार
जिसके संतान न हो— निःसंतान
जिसका अपना कोई स्वार्थ न हो— निस्स्वार्थ
व्यापारिक वस्तुओं को किसी दूसरे देश में भेजने का कार्य— निर्यात
जिसको देश से निकाल दिया गया हो— निर्वासित
जो निन्दा करने योग्य हो— निन्दनीय
जिसको भय न हो— निर्भय
जो नीति जानता हो— नीतिज्ञ

जो नीति के अनुकूल हो— नैतिक
जो न्यायशास्त्र की बात जानता हो— नैयायिक
पदार्थ का सबसे छोटा कण— परमाणु
जितने की आवश्यकता हो उतना— पर्याप्त
महीने के दो पक्षों में से एक— पखवाड़ा
केवल अपने पति में अनुराग रखने वाली स्त्री— पतिव्रता
अपने मार्ग से च्युत/भटका हुआ— पथभ्रष्ट
अपने पद से हटाया हुआ— पदच्युत
घूमने–फिरने/देश–देशान्तर भ्रमण करने वाला यात्री— पर्यटक
जो सदा बदलता रहे— परिवर्तनशील
जो आँखों के सामने न हो— परोक्ष/अप्रत्यक्ष
दूसरे पर उपकार करने वाला— परोपकारी/परमार्थी
प्रशंसा करने योग्य— प्रशंसनीय
वह आकृति जो किसी शीशे, जल आदि में दिखाई दे— प्रतिबिम्ब
किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता— पारंगत
जिसमें से आर–पार देखा जा सकता हो— पारदर्शी
जिसका संबंध पृथ्वी से हो— पार्थिव
ज्ञात इतिहास के पूर्व समय का— प्रागैतिहासिक
पीने की इच्छा रखने वाला— पिपासु
बार–बार कही गई बात— पुनरुक्ति
जिसका पुनः जन्म हुआ हो— पुनर्जन्म
पहले किया गया कथन— पूर्वोक्त
दोपहर से पहले का समय— पूर्वाह्न
केवल फलों पर निर्वाह करने वाला— फलाहारी
जो पहले था या हुआ— भूतपूर्व
दोपहर का समय— मध्याह्न
जिसकी आत्मा महान हो— महात्मा
मध्यरात्रि का समय— मध्यरात्र
जहाँ केवल रेत ही रेत हो— मरुस्थल
माँस आदि खाने वाला— माँसाहारी
माह में होने वाला— मासिक
कम खाने वाला— मिताहारी
कम खर्च करने वाला— मितव्ययी
शुभ कार्य हेतु निकाला गया समय— मुहूर्त

E-Grammar

जो मीठी वाणी बोलता हो— मृदुभाषी
घूम–घूमकर जीवन बिताने वाला— यायावर
प्रसन्नता से जिसके रोंगटे खड़े हो गए हों — रोमांचित
जो लकड़ी काटकर जीवन बिताता हो— लकड़हारा
जिसके हाथ में वज्र हो— वज्रपाणि
अधिक बोलने वाला— वाचाल
सन्तान के प्रति प्रेम— वात्सल्य
जिसकी पत्नी मर चुकी हो— विधुर
स्त्री जिसका पति मर गया हो— विधवा
वह स्त्री जो पढ़ी–लिखी व ज्ञानी हो— विदुषी
किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला— विशेषज्ञ
जिसे व्याकरण का पूरा ज्ञान हो— वैयाकरण
सौ वर्षों का समूह— शताब्दी
जो शरण में आ गया हो— शरणागत
शरण की इच्छा रखने वाला— शरणार्थी
सौ वस्तुओं का संग्रह— शतक
शाक, फल और फूल खाने वाला— शाकाहारी/निरामिष
जिसमें श्रद्धा भावना हो— श्रद्धालु
दो नदियों के मिलने का स्थान— संगम
जो समाचार भेजता है— संवाददाता
सात सौ दोहों का समूह— सतसई
सब कुछ जानने वाला— सर्वज्ञ
जो समान आयु का हो— समवयस्क
जो सभी को समान दृष्टि से देखता हो— समदर्शी
साहित्यिक गुण–दोषों की विवेचना करने वाला— समीक्षक
वह स्त्री जिसका पति जीवित हो— सधवा
जो सदा से चला आ रहा हो— सनातन
उसी समय में होने वाला/रहने वाला— समकालीन
साथ पढ़ने वाला— सहपाठी
जो दूसरों की बात सहन कर सकता हो— सहिष्णु
रस पूर्ण— सरस
सबको प्रिय लगने वाला— सर्वप्रिय
सद् आचरण रखने वाला— सदाचारी
जिसका चरित्र अच्छा हो— सच्चरित्र

सचित्र हिन्दी व्याकरण E-Grammar

जो पढ़ना–लिखना जानता है— साक्षर
सप्ताह में एक बार होने वाला— साप्ताहिक
सभी लोगों के लिए— सार्वजनिक
आकार से युक्त (मूर्तिमान)— साकार
जो सब जगह विद्यमान हो— सर्वव्यापी
जिसकी ग्रीवा सुंदर हो— सुग्रीव
जो सोया हुआ हो— सुषुप्त
सधवा रहने की दशा या अवस्था— सुहाग
जो अपने ही अधीन हो— स्वाधीन
जो अपना ही हित सोचता हो— स्वार्थी
सौ वस्तुओं का संग्रह— सैंकड़ा / शतक
हमला करने वाला— हमलावर
सेना का वह भाग जो सबसे आगे हो— हरावल
हवन से संबंधित सामग्री— हवि
दूसरों का हित चाहने वाला— हितैषी
न टलने वाली घटना/अवश्यंभावी घटना/भाग्याधीन— होनहार
जानने की इच्छा— जिज्ञासा
जिंदा रहने की इच्छा— जिजीविषा
ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा— ज्ञानपिपासा
हित चाहने वाला— हितैषी

सचित्र हिन्दी व्याकरण
E-Grammar

अनेकार्थी शब्द

26

अतिथि- मेहमान, साधु, यात्री, अपरिचित व्यक्ति, राम का पोता कुश का बेटा।
अरुण- लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी, इत्यादि।
आपत्ति- विपत्ति,एतराज।
अपेक्षा- इच्छा, आवश्यकता, आशा, इत्यादि।
आराम- बाग, विश्राम, रोग का दूर होना।
अंक- भाग्य, गिनती के अंक, नाटक के अंक, चिह्, संख्या, गोद।
अंबर- आकाश,अमृत, वस्त्र।
अनंत- आकाश, ईश्वर, विष्णु, अंतहीन, शेष नाग।
अर्थ- मतलब, कारण, लिए, भाव, अभिप्राय, धन, आशय, प्रयोजन।
अवकाश- छुटटी, अवसर, अंतराल।
आम- आम का फल, सर्वसाधारण, मामूली, सामान्य।
अन्तर- शेष, दूरी, हृदय, भेद।
अधर- धरती (आकाश के बीच का स्थान), पाताल, नीचा, होंठ।
आराम- विश्राम, निरोग होना।
उत्तर- उत्तर दिशा, जवाब, हल, अतीत, पिछला।
खग- पक्षी, तारा, गन्धर्व, बाण।
खर- दुष्ट, गधा, तिनका, एक राक्षस।
खल- दुष्ट, धतूरा, दवा कूटने का खरल।
गण- समूह, मनुष्य, भूतप्रेतादि, शिव के गण, पिंगल के गण।
गुरु- शिक्षक, ग्रहविशेष, श्रेष्ठ, बृहस्पति, भारी, बड़ा, भार।
गो- बाण, आँख, वज्र, गाय, स्वर्ग, पृथ्वी, सरस्वती, सूर्य, बैल, इत्यादि।
गुण- कौशल, शील, रस्सी, स्वभाव, धनुष की डोरी।
गति- चाल, दशा, मोक्ष, हालत।
धन- सम्पति, योग।
धर्म- प्रकृति, स्वभाव, कर्तव्य, सम्प्रदाय।
नाग- हाथी, साँप।
नग- पर्वत, वृक्ष, नगीना।

ऐसे शब्द, जिनके अनेक अर्थ होते है, अनेकार्थी शब्द कहलाते है। दूसरे शब्दों में- जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते हैं। अनेकार्थी का अर्थ है – एक से अधिक अर्थ देने वाला।

शब्द शक्ति

27

शब्द का अर्थ बोध करानेवाली शक्ति 'शब्द शक्ति' कहलाती है। शब्द-शक्ति को संक्षेप में 'शक्ति' कहते हैं। इसे 'वृत्ति' या 'व्यापार' भी कहा जाता है। हिन्दी के रीतिकालीन आचार्य चिन्तामणि ने लिखा है कि "जो सुन पड़े सो शब्द है, समुझि परै सो अर्थ" अर्थात जो सुनाई पड़े वह शब्द है तथा उसे सुनकर जो समझ में आवे वह उसका अर्थ है। स्पष्ट है कि जो ध्वनि हमें सुनाई पड़ती है वह 'शब्द' है, और उस ध्वनि से हम जो संकेत या मतलब ग्रहण करते है वह उसका 'अर्थ' है।

शब्द से अर्थ का बोध होता है। अतः शब्द हुआ 'बोधक' (बोध करानेवाला) और अर्थ हुआ 'बोध्य' (जिसका बोध कराया जाये)। जितने प्रकार के शब्द होंगे उतने ही प्रकार की शक्तियाँ होंगी। शब्द तीन प्रकार के- वाचक, लक्षक एवं व्यंजक होते हैं तथा इन्हीं के अनुरूप तीन प्रकार के अर्थ- वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ होते हैं। शब्द और अर्थ के अनुरूप ही शब्द की तीन शक्तियाँ- अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना होती हैं।

वाच्यार्थ कथित होता है, लक्ष्यार्थ लक्षित होता है और व्यंग्यार्थ व्यंजित, ध्वनित, सूचित या प्रतीत होता है। शब्द में अर्थ तीन प्रकार से आता है। अर्थ के जो तीन स्त्रोत हैं उन्हीं के आधार पर शब्द की शक्तियों का नामकरण किया जाता है।

शब्द शक्ति के प्रकार

प्रक्रिया या पद्धति के आधार पर शब्द-शक्ति तीन प्रकार के होते हैं-

(1) अभिधा शब्द-शक्ति

(2) लक्षणा शब्द-शक्ति

(3) व्यंजना शब्द-शक्ति

अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है, लक्षणा से मुख्यार्थ से संबद्ध लक्ष्यार्थ का, लेकिन व्यंजना से न मुख्यार्थ का बोध होता है न लक्ष्यार्थ का, बल्कि इन दोनों से भित्र अर्थ व्यंग्यार्थ का बोध होता है।

(1) अभिधा शब्द-शक्ति

जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का साक्षात् संकेतित (पहला/मुख्य/प्रसिद्ध/प्रचलित/पूर्वविदित) अर्थ बोध हो, उसे 'अभिधा' कहते हैं।

जैसे- 'बैल खड़ा है।'- इस वाक्य को सुनते ही बैल नामक एक विशेष प्रकार के जीव को हम समझ लेते हैं, उसे आदमी या किताब नहीं समझते।

यहाँ 'बैल' वाचक शब्द है जिसका मुख्यार्थ विशेष जीव है। (अभिधा का अर्थ है 'नाम'।)

दूसरे शब्दों में नामवाची अर्थ को बतलानेवाला शक्ति को अभिधा कहते हैं। नाम जाति,

गुण, द्रव्य या क्रिया का होता है और ये सभी साक्षात् संकेतित होते हैं। अभिधा को 'शब्द की प्रथमा शक्ति' भी कहा जाता है।)

उदाहरण- निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आरंभ की ये पंक्तियाँ अभिधा के प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं-

"वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।"

इन पंक्तियों में कवि, शब्दों से सीधे-सीधे जो अर्थ प्रकट करता है, वही अर्थ कविता का है- कवि ने पत्थर तोड़ती हुई स्त्री को इलाहाबाद के पथ पर देखा। इस शब्द-शक्ति के द्वारा तीन प्रकार के शब्दों का बोध होता है-

(1) रूढ़ शब्द (जैसे-कृष्ण), यौगिक शब्द
(जैसे- पाठशाला) एवं योगरूढ़ शब्द (जैसे- जलज)।

(2) लक्षणा शब्द-शक्ति

अभिधा के असमर्थ हो जाने पर जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ बोध हो, उसे 'लक्षणा' कहते हैं।

लक्षणा की शर्तें : लक्षणा के लिए तीन शर्तें है-

(i) मुख्यार्थ में बाधा- इसमें मुख्य अर्थ या अभिधेय अर्थ लागू नहीं होता है, वह बाधित (असंगत) हो जाता है।

(ii) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध- जब मुख्य अर्थ बाधित हो जाता है, पर यह दूसरा अर्थ अनिवार्य रूप से मुख्य अर्थ से संबंधित होता है।

(iii) रूढ़ि या प्रयोजन- मुख्य अर्थ को छोड़कर उसके दूसरे अर्थ को अपनाने के पीछे या तो कोई रूढ़ि होती है या कोई प्रयोजन।

लक्षणा की शास्त्रीय परिभाषा : मुख्यार्थ के बाधित होने पर जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ रूढ़ि या प्रयोजन के कारण लिया जाए, वह 'लक्षणा' है।

उदाहरण-

(i) सभी मुहावरे व लोकोक्तियाँ- सभी मुहावरों एवं लोकोक्तियों में लक्षणा शब्द-शक्ति के सहारे अर्थ ग्रहण किया जाता है। जैसे- "उसके लिए चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है।"-

(ii) एक पद्यबद्ध उदाहरण- निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की अंतिम पंक्ति-

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं।

दृष्टि मार नहीं खाती, प्राणी मार खाता है, दृष्टि नहीं रोती प्राणी रोता है। इसलिए दृष्टि 'जो मार खा रोई नहीं'- इस कथन में अभिधेय अर्थ या मुख्य अर्थ लागू नहीं होता, बाधित हो जाता है। तब हम उससे संबंधित अन्य अर्थ दूसरा अर्थ लेते हैं- कवि उस स्त्री की बात कह रहा है जो जीवन संघर्ष में बार-बार मार खाकर या आघात झेलकर रोई नहीं।

(3) व्यंजना शब्द-शक्ति

अभिधा व लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ बोध हो, उसे 'व्यंजना' कहते हैं। 'व्यंजना' (वि + अंजना) शब्द का अर्थ है- 'विशेष प्रकार का अंजन'। अंजन लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ती है, पर विशेष प्रकार के अंजन लगाने से परोक्ष वस्तु भी दिखने लगती है। इसी प्रकार व्यंजना शब्द-शक्ति से अकथित अर्थ स्पष्ट होते हैं। जब अभिधा एवं लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है तब व्यंजना शक्ति काव्य के छिपे हुए व्यंग्यार्थ का बोध कराती है। व्यंग्यार्थ को 'ध्वन्यार्थ', 'सूच्यार्थ', 'आक्षेपार्थ', 'प्रतीयमानार्थ' आदि भी कहा जाता है।

उदाहरण :

(i) प्रसिद्ध उदाहरण: 'सूर्य अस्त हो गया।' इस वाक्य के सुनने के उपरांत प्रत्येक व्यक्ति इससे भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण करता है। प्रसंग विशेष के अनुसार इस वाक्य के अनंत व्यंजनार्थ हो सकते हैं।

एक वाक्य से वक्ता-श्रोता के अनुसार न जाने कितने अर्थ निकल सकते हैं। यहाँ जिसने भी अर्थ दिये गये है वे साक्षात् संकेतित नहीं है, इसलिए इनमें अभिधा शक्ति नहीं है। इनमें लक्षणा शक्ति भी नहीं है, कारण है कि उक्त वाक्य लक्षणा की शर्त मुख्यार्थ में बाधा को पूरा नहीं करता क्योंकि यहाँ सूर्य का जो मुख्यार्थ है वह मौजूद है। साफ है कि इनमें पायी जानेवाली शब्द-शक्ति व्यंजना है।

(ii) एक और पद्यबद्ध उदाहरण :

चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय।

दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय ।। -कबीर

यहाँ चलती चक्की को देखकर कबीरदास के दुःखी होने की बात कही गई है। उसके द्वारा यह अर्थ व्यंजित होता है कि संसार चक्की के समान है जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच आदमी पिसता रहता है।

व्यंजना के भेद

व्यंजना के दो भेद है-

(1) शाब्दी व्यंजना

(2) आर्थी व्यंजना

(1) शाब्दी व्यंजना- शब्द पर आधारित व्यंजना को 'शाब्दी व्यंजना' कहते है।

(2)आर्थी व्यंजना- अर्थ पर आधारित व्यंजना को 'आर्थी व्यंजना' कहते हैं।

शब्द दो प्रकार के होते है- एकार्थक एवं अनेकार्थक। जिन शब्दों का केवल एक ही अर्थ होता है, उन्हें 'एकार्थक शब्द' कहते हैं। जैसे- पुस्तक, दवा इत्यादि।

जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थक शब्द' कहते है।

जैसे- कलम [अर्थ- (1) लेखनी (2) पेड़-पौधे की टहनी (3) कलमकार की कूची (4) चित्र-शैली (जैसे- पटना कलम) आदि], पानी (अर्थ- (1) जल (2) चमक (3) प्रतिष्ठा आदि) इत्यादि।

अनेकार्थक शब्दों पर टिकी व्यंजना को 'शाब्दी व्यंजना' तथा एकार्थक शब्दों पर टिकी व्यंजना को 'आर्थी व्यंजना' कहते हैं।

E-Grammar

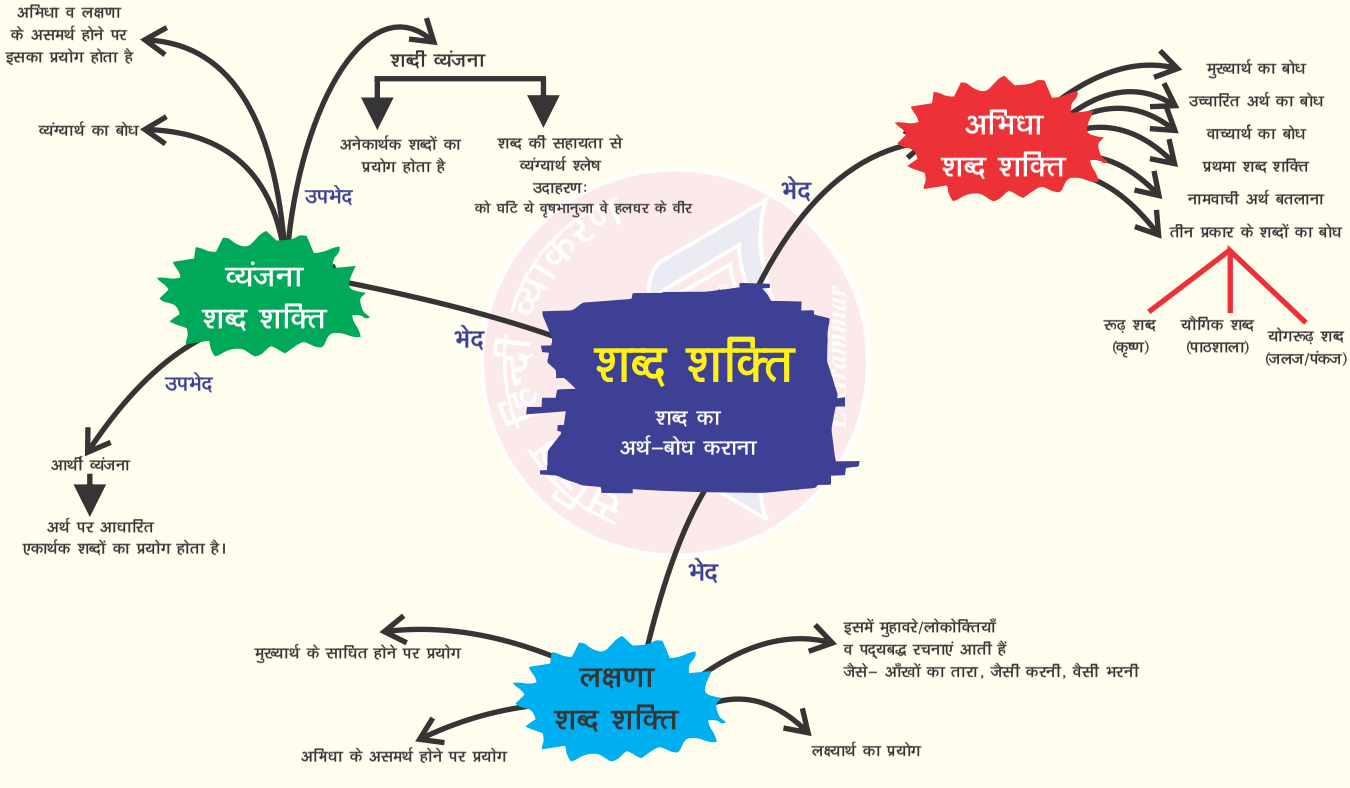
शब्द शक्ति
शब्द का
अर्थ–बोध कराना
भेद
अभिधा
शब्द शक्ति
मुख्यार्थ का बोध
उच्चारित अर्थ का बोध
वाच्यार्थ का बोध
प्रथमा शब्द शक्ति
नामवाची अर्थ बतलाना
तीन प्रकार के शब्दों का बोध
रूढ़ शब्द
(कृष्ण)
यौगिक शब्द
(पाठशाला)
योगरूढ़ शब्द
(जलज/पंकज)
भेद
व्यंजना
शब्द शक्ति
उपभेद
शब्दी व्यंजना
अनेकार्थक शब्दों का
प्रयोग होता है
शब्द की सहायता से
व्यंग्यार्थ श्लेष
उदाहरण:
को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के वीर
अभिधा व लक्षणा
के असमर्थ होने पर
इसका प्रयोग होता है
व्यंग्यार्थ का बोध
उपभेद
आर्थी व्यंजना
अर्थ पर आधारित
एकार्थक शब्दों का प्रयोग होता है।
भेद
लक्षणा
शब्द शक्ति
मुख्यार्थ के साधित होने पर प्रयोग
अभिधा के असमर्थ होने पर प्रयोग
इसमें मुहावरे/लोकोक्तियाँ
व पद्यबद्ध रचनाएं आती हैं
जैसे– आँखों का तारा, जैसी करनी, वैसी भरनी
लक्ष्यार्थ का प्रयोग

काव्य–गुण

28

प्रश्न :- काव्य - गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर:- काव्य में आंतरिक सौन्दर्य तथा रस के प्रभाव एवं उत्कर्ष के लिए स्थायी रूप से विद्यमान मानवोचित भाव और धर्म या तत्व को काव्य गुण (शब्द गुण) कहते हैं। यह काव्य में उसी प्रकार विद्यमान होता है , जैसे फूल में सुगन्धि।

प्रश्न :- काव्य - गुण कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर :- काव्य गुण मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं -

1. माधुर्य 2. ओज 3. प्रसाद

1. माधुर्य गुण - किसी काव्य को पढने या सुनने से हृदय में मधुरता का संचार होता है , वहाँ माधुर्य गुण होता है। यह गुण विशेष रूप से शांत, एवं करुण रस में पाया जाता है। माधुर्य गुण युक्त काव्य में कानों को प्रिय लगने वाले मृदु वर्णों का प्रयोग होता है। जैसे - क, ख, ग, च, छ, ज, झ, त, द, न, ... आदि।

इसमें कठोर एवं संयुक्ताक्षर वाले वर्णों का प्रयोग नहीं किया जाता।

E-Grammar

उदाहरण 1.

बसों मोरे नैनन में नंदलाल
मोहनी मूरत सांवरी सूरत नैना बने बिसाल।

उदाहरण 2.

पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जाएगा ज्यों तारा परभात।।

2. ओज गुण - जिस काव्य को पढने या सुनने से हृदय में ओज, उमंग और उत्साह का संचार होता है, उसे ओज गुण प्रधान काव्य कहा जाता है। इस प्रकार के काव्य में कठोर संयुक्ताक्षर वाले वर्णों का प्रयोग होता है। जैसे - ट, ठ, ड, ढ,ण एवं र के संयोग से बने

शब्द , सामासिक शब्द आदि। यह गुण मुख्य रूप से वीर, वीभत्स और भयानक रस में पाया जाता है।

उदाहरण 1.

बुंदेले हर बोलों के मुख से हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

3. प्रसाद गुण :- प्रसाद का अर्थ है - निर्मलता, प्रसन्नता। जिस काव्य को पढ़ने या सुनने से हृदय या मन खिल जाए , हृदयगत शांति का बोध हो, उसे प्रसाद गुण कहते हैं। इस गुण से युक्त काव्य सरल, सुबोध एवं सुग्राह्य होता है। यह सभी रसों में पाया जा सकता है।

उदाहरण 1.

उठो लाल ! अब आँखें खोलो।
पानी लाई , मुँह धोलो।
बीती रात कमल दल फूले
उनके ऊपर भौंरे झूले।

उदाहरण 2.

हे प्रभो ज्ञान दाता ! ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

काव्य गुण

काव्य में आंतरिक सौन्दर्य तथा रस को प्रकाशित करने वाला तत्व

भेद

माधुर्य गुण

- हृदय में मधुरता का संचार
- कर्णप्रिय व मधुर वर्णों का प्रयोग
- शांत, करुण रस

उदाहरण

बसों मोरे नैनन में नंदलाल
मोहनी मूरत सांवरी सूरत नैना बने बिसाल।

भेद

ओज गुण

- हृदय में ओज, उमंग, उत्साह का संचार
- कठोर संयुक्ताक्षर वर्णों का प्रयोग
- वीर रस, वीभत्स तथा भयानक रस

उदाहरण

बुंदेले हर बोलों के मुख से हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

भेद

प्रसाद गुण

- निर्मलता/प्रसन्नता
- मन खिल जाए, प्रसन्न हो
- सभी रसों में पाया जाता है
- सरल, सुबोध काव्य

उदाहरण

हे प्रभो ज्ञान दाता ! ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

विराम-चिह्न

29

भिन्न-भिन्न प्रकार के भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच या अंत में किया जाता है, उन्हें 'विराम चिह्न' कहते है।

दूसरे शब्दों में- विराम का अर्थ है - 'रुकना' या 'ठहरना'। वाक्य को लिखते अथवा बोलते समय बीच में कहीं थोड़ा-बहुत रुकना पड़ता है जिससे भाषा स्पष्ट, अर्थवान एवं भावपूर्ण हो जाती है। लिखित भाषा में इस ठहराव को दिखाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्हें ही विराम-चिह्न कहा जाता है।

यदि विराम-चिह्न का प्रयोग न किया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

जैसे- (1) रोको मत जाने दो।

(2) रोको, मत जाने दो।

(3) रोको मत, जाने दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले वाक्य में अर्थ स्पष्ट नहीं होता, जबकि दूसरे और तीसरे वाक्य में अर्थ तो स्पष्ट हो जाता है लेकिन एक-दूसरे का उल्टा अर्थ मिलता है, जबकि तीनो वाक्यों में वही शब्द है। दूसरे वाक्य में 'रोको' के बाद अल्पविराम लगाने से रोकने के लिए कहा गया है, जबकि तीसरे वाक्य में 'रोको मत' के बाद अल्पविराम लगाने से किसी को न रोक कर जाने के लिए कहा गया है। इस प्रकार विराम-चिह्न लगाने से दूसरे और तीसरे वाक्य को पढ़ने में तथा अर्थ स्पष्ट करने में जितनी सुविधा होती है, उतनी पहले वाक्य में नहीं होती। अतएव विराम-चिह्नों के विषय में पूरा ज्ञान होना आवश्यक है।

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित है-

(1) अल्प विराम (,)
(2) अर्द्ध विराम (;)
(3) पूर्ण विराम (।)
(4) उप विराम [:]
(5) विस्मयादिबोधक चिह्न (!)
(6) प्रश्नवाचक चिह्न (?)
(7) कोष्ठक (())
(8) योजक चिह्न (-)
(9) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न ("...")
(10) लाघव चिह्न (o)
(11) आदेश चिह्न (:-)
(12) रेखांकन चिह्न (_)
(13) लोप चिह्न (...)

(1)अल्प विराम (Comma)(,) - वाक्य में जहाँ थोड़ा रुकना हो या अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों आदि को अलग करना हो वहाँ अल्प विराम (,) चिह्न का प्रयोग किया जाता है। अल्प का अर्थ होता है- थोड़ा। अल्पविराम का अर्थ हुआ- थोड़ा विश्राम अथवा थोड़ा रुकना। बातचीत करते समय अथवा लिखते समय जब हम बहुत-सी वस्तुओं का वर्णन एक साथ करते हैं, तो उनके बीच-बीच में अल्पविराम का प्रयोग करते है; जैसे-

जैसे- नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न राजमहल में पधारे।
सुनो, सुनो, वह क्या कह रही है।
नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।

(2)अर्द्ध विराम (;) - जहाँ अल्प विराम से कुछ अधिक ठहरते है तथा पूर्ण विराम से कम ठहरते है, वहाँ अर्द्ध विराम का चिह्न (;) लगाया जाता है। आम तौर पर अर्द्धविराम दो उपवाक्यों को जोड़ता है जो थोड़े से असंबद्ध होते है एवं जिन्हें 'और' से नहीं जोड़ा जा सकता है। जैसे-

फलों में आम को सर्वश्रेष्ठ फल माना गया है; किन्तु श्रीनगर में और ही किस्म के फल विशेष रूप से पैदा होते है।

दो या दो से अधिक उपाधियों के बीच अर्द्धविराम का प्रयोग होता है; जैसे- एम. ए.; बी, एड.। एम. ए.; पी. एच. डी.। एम. एस-सी.; डी. एस-सी.।

(3) पूर्ण विराम (।) - जहाँ एक बात पूरी हो जाये या वाक्य समाप्त हो जाये वहाँ पूर्ण विराम (।) चिह्न लगाया जाता है। पूर्णविराम का अर्थ है, पूरी तरह रुकना या ठहरना। सामान्यतः जहाँ वाक्य की गति अन्तिम रूप ले ले, विचार के तार एकदम टूट जायें, वहाँ पूर्णविराम का प्रयोग होता है।

यह हाथी है। वह लड़का है। मैं आदमी हूँ। तुम जा रहे हो।
रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती, मानुस, चून॥

(4) उप विराम (:)- जहाँ वाक्य पूरा नहीं होता, बल्कि किसी वस्तु अथवा विषय के बारे में बताया जाता है, वहाँ अपूर्णविराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

कृष्ण के अनेक नाम है : मोहन, गोपाल, गिरिधर आदि।

(5) विस्मयादिबोधक चिह्न (!)- इसका प्रयोग हर्ष, विवाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि का बोध कराने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

वाह ! आप यहाँ कैसे पधारे ?
हाय ! बेचारा व्यर्थ में मारा गया।
हे ईश्वर ! सबका कल्याण हो।

(6) प्रश्नवाचक चिह्न (?) - बातचीत के दौरान जब किसी से कोई बात पूछी जाती है अथवा कोई प्रश्न पूछा जाता है, तब वाक्य के अंत में प्रश्नसूचक-चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- **तुम कहाँ जा रहे हो ?**

वहाँ क्या रखा है ?

(7) कोष्ठक(()) - वाक्य के बीच में आए शब्दों अथवा पदों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- **लता मंगेशकर भारत की कोकिला (मीठा गाने वाली) हैं।**

(8) योजक चिह्न (-) - हिंदी में अल्पविराम के बाद योजक चिह्न का प्रयोग अधिक होता है। दो शब्दों में परस्पर संबंध स्पष्ट करने के लिए तथा उन्हें जोड़कर लिखने के लिए योजक-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसे 'विभाजक-चिह्न' भी कहते है।

जैसे- जीवन में सुख-दुःख तो चलता ही रहता है।

रात-दिन परिश्रम करने पर ही सफलता मिलती है।

दाल-रोटी, दही-बड़ा, सीता-राम, फल-फूल।

(9) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न (Inverted Comma)("... ") - किसी की कही हुई बात को उसी तरह प्रकट करने के लिए अवतरण चिह्न ("... ") का प्रयोग होता है।

जैसे- राम ने कहा, "सत्य बोलना सबसे बड़ा धर्म है।"

"जीवन विश्व की सम्पत्ति है। "- जयशंकर प्रसाद

(10) लाघव चिह्न (o) - किसी बड़े तथा प्रसिद्ध शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर उसके आगे शून्य (०) लगा देते हैं। यह शून्य ही लाघव-चिह्न कहलाता है।

जैसे- पंडित का लाघव-चिह्न पं०,

डॉक्टर का लाघव-चिह्न डॉ०

प्रोफेसर का लाघव-चिह्न प्रो०

(11) आदेश चिह्न (:-) - किसी विषय को क्रम से लिखना हो तो विषय-क्रम व्यक्त करने से पूर्व आदेश चिह्न (:-) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- वचन के दो भेद है :- 1. एकवचन, 2. बहुवचन।

(12) रेखांकन चिह्न (Underline) (_) - वाक्य में महत्त्वपूर्ण शब्द, पद, वाक्य रेखांकित कर दिया जाता है।

जैसे- <u>गोदान उपन्यास</u>, प्रेमचंद द्वारा लिखित सर्वश्रेष्ठ कृति है।

(13) लोप चिह्न (Mark of Omission)(...) - जब वाक्य या अनुच्छेद में कुछ अंश छोड़ कर लिखना हो तो लोप चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- गाँधीजी ने कहा, "परीक्षा की घड़ी आ गई है .... हम करेंगे या मरेंगे"।

छंद

30

छंद किसे कहते हैं ?

हिंदी साहित्य के अनुसार अक्षर , अक्षरों की संख्या , मात्रा , गणना , यति , गति से संबंधित किसी विषय पर रचना को छंद कहा जाता है। अर्थात निश्चित चरण , लय , गति , वर्ण , मात्रा , यति , तुक , गण से नियोजित पद्य रचना को छंद कहते हैं।

छंद के अंग :-

1. चरण और पाद
2. वर्ण और मात्रा

1. चरण या पाद:- एक छंद में चार चरण होते हैं। चरण छंद का चौथा हिस्सा होता है। चरण को पाद भी कहा जाता है। हर पाद में वर्णों या मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

चरण के प्रकार :-

1. समचरण
2. विषमचरण

1. समचरण :- दूसरे और चौथे चरण को समचरण कहते हैं।
2. विषमचरण :- पहले और तीसरे चरण को विषमचरण कहा जाता है।

2. वर्ण और मात्रा :- छंद के चरणों को वर्णों की गणना के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है। छंद में जो अक्षर प्रयोग होते हैं उन्हें वर्ण कहते हैं।

मात्रा की दृष्टि से वर्ण के प्रकार :-

1. लघु या ह्रस्व
2. गुरु या दीर्घ

1. लघु या ह्रस्व :- जिन्हें बोलने में कम समय लगता है उसे लघु या ह्रस्व वर्ण कहते हैं। इसका चिन्ह (|) होता है।
2. गुरु या दीर्घ :- जिन्हें बोलने में लघु वर्ण से ज्यादा समय लगता है उन्हें गुरु या दीर्घ वर्ण कहते हैं। इसका चिन्ह (S) होता है।

छंद के अंग :-

1. मात्रा
2. यति
3. गति
4. तुक
5. गण

1. छंद में मात्रा का अर्थ :- वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे ही मात्रा कहा जाता है। अर्थात वर्ण को बोलने में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।

2. यति:- पद्य का पाठ करते समय गति को तोड़कर जो विश्राम दिया जाता है उसे यति कहते हैं। सरल शब्दों में छंद का पाठ करते समय जहाँ पर कुछ देर के लिए रुकना पड़ता है उसे यति कहते हैं। इसे विराम और विश्राम भी कहा जाता है।

3. गति :- पद्य के पथ में जो बहाव होता है उसे गति कहते हैं। अर्थात किसी छंद को पढ़ते समय जब एक प्रवाह का अनुभव होता है उसे गति या लय कहा जाता है। हर छंद में विशेष प्रकार की संगीतात्मक लय होती है, जिसे गति कहते हैं।

4. तुक:- समान उच्चारण वाले शब्दों के प्रयोग को ही तुक कहा जाता है। छंद में पदांत के अक्षरों की समानता तुक कहलाती है।

तुक के भेद :-

1. तुकांत कविता
2. अतुकांत कविता

1. तुकांत कविता:- जब चरण के अंत में वर्णों की आवृति होती है, उसे तुकांत कविता कहते हैं।

2. अतुकांत कविता:- जब चरण के अंत में वर्णों की आवृति नहीं होती, उसे अतुकांत कविता कहते हैं। नई कविता अतुकांत होती है।

5. गण: - मात्राओं और वर्णों की संख्या और क्रम की सुविधा के लिए तीन वर्णों के समूह को गण मान लिया जाता है। वर्णिक छंदों की गणना गण के क्रमानुसार की जाती है। तीन वर्णों का एक गण होता है। गणों की संख्या आठ होती है।

गणों की संख्या 8 है –

यगण (।ऽऽ), मगण (ऽऽऽ), तगण (ऽऽ।), रगण (ऽ।ऽ),
जगण (।ऽ।), भगणh (ऽ।।), नगण (।।।)और सगण (।।ऽ)।

छंद के प्रकार :-

1. मात्रिक छंद
2. वर्णिक छंद
3. वर्णिक वृत छंद
4. मुक्त छंद

1. मात्रिक छंद :- मात्रा की गणना के आधार पर की गयी पद की रचना को मात्रिक छंद कहते हैं। अर्थात जिन छंदों की रचना मात्राओं की गणना के आधार पर की जाती है उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं। जिनमें मात्राओं की संख्या , लघु -गुरु , यति -गति के आधार पर पद रचना की जाती है उसे मात्रिक छंद कहते हैं।

मात्रिक छंद के भेद :-

1. सममात्रिक छंद
2. अर्धमात्रिक छंद
3. विषममात्रिक छंद

1. सममात्रिक छंद :- जहाँ पर छंद में सभी चरण समान होते हैं उसे सममात्रिक छंद कहते हैं।

जैसे :- "मुझे नहीं ज्ञात कि मैं कहाँ हूँ
प्रभो! यहाँ हूँ अथवा वहाँ हूँ।"

2. अर्धमात्रिक छंद :- जिसमें पहला और तीसरा चरण एक समान होता है तथा दूसरा और चौथा चरण उनसे अलग होते हैं लेकिन आपस में एक जैसे होते हैं उसे अर्धमात्रिक छंद कहते हैं।

3. विषय मात्रिक छंद :- जहाँ चरणों में दो चरण अधिक समान न हों उसे विषम मात्रिक छंद कहते हैं। ऐसे छंद प्रचलन में कम होते हैं।

2. वर्णिक छंद :- जिन छंदों की रचना को वर्णों की गणना और क्रम के आधार पर किया जाता है उन्हें वर्णिक छंद कहते हैं।

वृतों की तरह इनमे गुरु और लघु का कर्म निश्चित नहीं होता है बस वर्ण संख्या निश्चित होती है। ये वर्णों की गणना पर आधारित होते हैं।जिनमे वर्णों की संख्या , क्रम , गणविधान , लघु-गुरु के आधार पर रचना होती है।

4. मुक्त छंद :- मुक्त छंद को आधुनिक युग की देन माना जाता है। जिन छंदों में वर्णों और मात्राओं का बंधन नहीं होता उन्हें मुक्तक छंद कहते हैं अथार्त हिंदी में स्वतंत्र रूप से आजकल लिखे जाने वाले छंद मुक्त छंद होते हैं। चरणों की अनियमित , असमान , स्वछन्द गति और भाव के अनुकूल यति विधान ही मुक्त छंद की विशेषता है। इसे रबर या केंचुआ छंद भी कहते हैं। इनमे न वर्णों की और न ही मात्राओं की गिनती होती है।

जैसे :- " वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक ,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलता
दो टूक कलेजे के कर्ता पछताता पथ पर आता। "

प्रमुख मात्रिक छंद :-

1. दोहा छंद
2. सोरठा छंद
3. रोला छंद
4. गीतिका छंद
5. हरिगीतिका छंद
6. चौपाई छंद
7. कुंडलियाँ छंद

1. दोहा छंद:- यह अर्धसममात्रिक छंद होता है। ये सोरठा छंद के विपरीत होता है। इसमें पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। इसमें चरण के अंत में लघु (।) होना जरूरी होता है।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागैं अति दूर ॥

2. सोरठा छंद:- यह अर्धसममात्रिक छंद होता है। ये दोहा छंद के विपरीत होता है। इसमें पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। यह दोहा का उल्टा होता है। विषम चरणों के अंत में एक गुरु और एक लघु मात्रा का होना जरूरी होता है। तुक प्रथम और तृतीय चरणों में होता है।

तुलसी-सूर-विहारि-कृष्णभट्ट-भारवि-मुखाः।
भाषाकविताकारि-कवयः कस्य न सम्भताः ॥

3. रोला छंद :- यह एक मात्रिक छंद होता है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 और 13 के क्रम से 24 मात्राएँ होती हैं। इसे अंत में दो गुरु और दो लघु वर्ण होते हैं।

सूर्य-चन्द्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकर है।

4. गीतिका छंद:- यह मात्रिक छंद होता है। इसके चार चरण होते हैं। हर चरण में 14 और 12 के क्रम से 26 मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु और गुरु होता है।

हे प्रभो आनंददाता ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों से दूर हमको कीजिये।
लीजिये हमको चरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें...

5. हरिगीतिका छंद :- यह मात्रिक छंद होता है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके हर चरण में 16 और 12 के क्रम से 28 मात्राएँ होती हैं। इसके अंत में लघु गुरु का प्रयोग अधिक प्रसिद्ध है।

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन, हरण भव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज मुख कर, कंज पद कन्जारुणम ॥
कंदर्प अगणित अमित छवि नव, नील नीरज सुन्दरम।
पट्पीत मानहु तडित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम ॥

6. चौपाई छंद :- यह एक मात्रिक छंद होता है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके हर चरण में 16 मात्राएँ

होती हैं। चरण के अंत में गुरु या लघु नहीं होता है लेकिन दो गुरु और दो लघु हो सकते हैं। अंत में गुरु वर्ण होने से छंद में रोचकता आती है

सूरज फिर से है मुस्काया।
कोयलिया ने गान सुनाया ॥
आम, नीम, जामुन बौराए।
भँवरे रस पीने को आए ॥
भुवन भास्कर बहुत दुलारा।
मुख मंडल है प्यारा-प्यारा ॥

7. कुंडलियाँ छंद :- कुंडलियाँ विषम मात्रिक छंद होता है। इसमें 6 चरण होते हैं। शुरू के 2 चरण दोहा और बाद के 4 चरण उल्लाला छंद के होते हैं। इस तरह हर चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।

बोता खुद ही आदमी, सुख या दुख के बीज।
मान और अपमान का, लटकाता ताबीज ॥

प्रमुख वर्णिक छंद :-

1. सवैया छंद
2. कवित्त छंद

1. सवैया छंद :- इसके हर चरण में 22 से 26 वर्ण होते हैं। इसमें एक से अधिक छंद होते हैं। ये अनेक प्रकार के होते हैं और इनके नाम भी अलग -अलग प्रकार के होते हैं। सवैया में एक ही वर्णिक गण को बार-बार आना चाहिए। इनका निर्वाह नहीं होता है।

मानुस हौं तो वही रसखान, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदीकूल कदम्ब की डारन ॥

2. कवित्त छंद :- यह वर्णिक सम छंद होता है। इसके हर चरण में 31से 33 वर्ण होते हैं और अंत में तीन लघु होते हैं। 16, 17 वें वर्ण पर विराम होता है।

बार बार द्वार पै
निगाह जाय अकुलाय
देहरी पै आज वोई
पापी पांय धरिहै।

पदबंध

31

पदबंध किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

पदबंध- जब एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं, तब उस बंधी हुई इकाई को पदबंध कहते हैं।

जैसे- **सबसे तेज दौड़ने वाला घोड़ा** **जीत गया**

पदबंध के पाँच भेद हैं :-

(1) संज्ञा-पदबंध:- जब एक से अधिक पद मिलकर संज्ञा का काम करते हैं, तो उस पदबंध को संज्ञा पदबंध कहते हैं।

जैसे-

(a) **बराबर के कमरे में रहने वाला आदमी** छत से गिर पड़ा।

(b) **राम ने लंका के राजा रावण** को मार गिराया।

उपर्युक्त वाक्यों में लाल छपे शब्द 'संज्ञा पदबंध' हैं।

(2) सर्वनाम पदबंध:- जब एक से अधिक पद मिलकर सर्वनाम का काम करते हैं, तो उस पदबंध को सर्वनाम पदबंध कहते हैं।

जैसे-

(a) **गुलाब की तरह मुस्कुराने वाले तुम** आज रो क्यों रहे हो ?

(b) **शेर की तरह दहाड़ने वाले आप** आज चुप क्यों हो ?

उपर्युक्त वाक्यों में लाल छपे शब्द 'सर्वनाम पदबंध' हैं।

(3) विशेषण-पदबंध:- जब एक से अधिक पद मिलकर किसी संज्ञा की विशेषता प्रकट करें, तो उस पदबंध को विशेषण पदबंध कहते हैं|

जैसे:-

(a) **तेज चलने वाली** गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

(b) **उस घर के कोने में बैठा हुआ** वह जासूस है।

उपर्युक्त वाक्यों में लाल छपे शब्द 'विशेषण पदबंध' है।

(4) क्रिया पदबंध- जब एक से अधिक पद मिलकर एक इकाई के रूप में क्रिया का कार्य संपन्न करते हैं, तो उस पदबंध को क्रिया पदबंध कहते हैं।

जैसे-

(a) वह बाजार की ओर **आया होगा।**

(b) मुझे मोहन छत से **दिखाई दे रहा है।**

(c) नाव नदी में **डूबती चली गई।**

(d) अब दरवाजा **खोला जा सकता है।**

उपर्युक्त वाक्यों में लाल छपे शब्द 'क्रिया पदबंध' हैं।

(5) क्रिया विशेषण पदबंध- जो पदबंध क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण पदबंध कहते हैं।

जैसे-

(a) मैंने रमा की **आधी रात तक** प्रतीक्षा की।

(b) उसने साँप को **पीट-पीटकर** मारा।

(c) वह **गेंद की तरह लुढ़ककर** छत से गिर पड़ा।

(d) कुछ लोग **सोते-सोते** चलते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में लाल छपे शब्द 'क्रिया विशेषण पदबंध' हैं।

फ़ीडबैक

डॉ0 विजय कुमार चावला, हिंदी प्राध्यापक द्वारा तैयार किया गया सचित्र हिंदी व्याकरण का द्वितीय संस्करण (माइंड मैपिंग के साथ) मैंने पढ़ा। पढ़ कर मुझे अत्यधिक हर्ष का अनुभव हुआ। डॉ0 चावला ने ई-कंटेंट के माध्यम से हिंदी व्याकरण के प्रत्येक पहलू को उदाहरणों के माध्यम से और भी आसान कर दिया है। पुराने समय में अध्यापक परंपरागत तरीकों का प्रयोग करके बच्चों को हिंदी की व्याकरण सिखाते थे। जैसे - ब्लैक बोर्ड और चॉक का प्रयोग कर फिर गृह कार्य, अभ्यास द्वारा तथा मौखिक संप्रेषण द्वारा। लेकिन आज के संदर्भ में ई-व्याकरण के माध्यम से व्याकरणिक विषयों के उदाहरणों को प्रोजेक्टर पर बच्चों को आसानी से दिखाया जा सकता है।

डॉ0 विजय कुमार चावला द्वारा ई-व्याकरण तैयार करना अपने आप में एक अनूठा कार्य है। जिससे बहुत सारे शिक्षक और बच्चे लाभान्वित होंगे।

डॉक्टर विजय चावला ने निःसंदेह कड़ी मेहनत करके ई-व्याकरण का जो यह संस्करण हम पाठकों के समक्ष रखा है, वह एक सराहनीय प्रयास है।

शुभकामनाओं सहित,

Surender Kumar

सुरेन्द्र कुमार
प्रधानाचार्य
रा. मा.सं.व.मा.वि., क्योड़क

फ़ीडबैक

बहुत ही हर्ष का विषय है कि डॉ० विजय कुमार चावला (प्रवक्ता हिंदी, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क, जिला कैथल (हरियाणा) द्वारा "ई - व्याकरण" का द्वितीय संस्करण (माइंड मैपिंग के साथ) शिक्षा जगत को समर्पित किया गया है। यह पुस्तक बेहद सरल भाषा में व सुंदर व सामयिक चित्रों द्वारा व्याकरण के जटिल उपविषयों को अपने अंदर संजोए हुए है।

"सचित्र हिन्दी ई व्याकरण", द्वितीय संस्करण (माइंड मैपिंग के साथ) हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम साबित होगा। आज डिजिटल युग के साथ आगे बढ़ते हुए हमारे बच्चों को ई - व्याकरण में चित्रों के माध्यम से बेहद सरल व्याख्या के साथ जब व्याकरण के विभिन्न विषय स्पष्ट होंगे तो डॉ० विजय कुमार चावला जी के दूरगामी सोच वाले इस महत्वपूर्ण कार्य के परिणाम मिलने शुरू होंगे।

डॉ० चावला जी की उपलब्धि के अवसर पर यह जिक्र करना आवश्यक हो जाता है कि डॉ० चावला "नवोदय क्रांति परिवार" के नेशनल मोटिवेटर हैं और हिन्दी विभाग के राष्ट्रीय मार्गदर्शक व सहायक हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन का लाभ देश के लगभग 15 राज्यों के बेहतरीन सरकारी शिक्षक ले रहे हैं। आपकी बेहतरीन शिक्षण शैली व उत्तम कौशल का आभास इस बात से हो जाता है कि आप प्रवक्ता होते हुए भी प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को हिंदी की बारीकियाँ सिखाते हुए नज़र आते हैं और बच्चों की आपके साथ सीखने में रुचि भी होती है। आपकी इस बहुमूल्य पुस्तक का लाभ देश के सभी शिक्षकों को मिलेगा और निश्चित रूप से हिंदी भाषा शिक्षण अधिगम में यह एक मील का पत्थर साबित होगी। यह पुस्तक आधुनिक सोच से जोड़कर हिंदी विषय की सही समझ बच्चों व अध्यापकों में विकसित करेगी। डॉ० विजय चावला जी को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

S Dillon

गुरुजी सन्दीप ढिल्लों
संस्थापक नवोदय क्रांति परिवार

E-Learning Series

Mind Mapping d lkFk

मेरे द्वारा हिन्दी की यह ई–व्याकरण नवाचार तकनीक का प्रयोग करते हुए तैयार की गई है। इस व्याकरण को सचित्र तैयार करने का प्रयास किया गया है। यह व्याकरण ई–कंटेट का कार्य करेगी। इस व्याकरण को बनाते समय हिंदी पाठ्यक्रम का विशेष ध्यान रखा गया है।

आपके अमूल्य सुझाव व टिप्पणी सादर आमंत्रित हैं।
कृपया अपने सुझाव व टिप्पणी मेरे

व्हाट्सएप नंबर **94161-89435**

तथा

Mail-ID- vijaychawla95@gmail.com पर भेजें।

E-Grammar

सचित्र

द्वितीय संस्करण

fgUnh 0;kdj.k

डॉ. विजय कुमार चावला
हिन्दी प्राध्यापक